मासिक

शिविरा पत्रिका

वर्ष : 57 अंक : 8 फरवरी, 2017 पृष्ठ : 52 मूल्य : ₹15

www.rajteachers.com

परीक्षा परिणाम उन्नयन विशेषांक

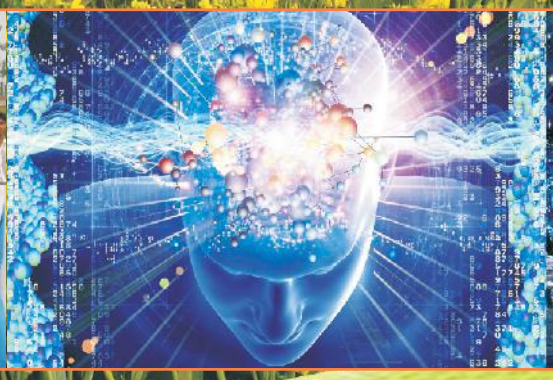

सत्यमेव जयते

प्रो. वासुदेव देवनानी
राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
प्राथमिक, माध्यमिक शिक्षा
एवं भाषा विभाग
राजस्थान सरकार, जयपुर

एकात्म मानव दर्शन के प्रणेता
पं. दीनदयाल उपाध्याय

यह वर्ष पं. दीनदयाल उपाध्यायका जन्मशताब्दीवर्ष है और देश भर में उनके व्यक्तित्व एवं योगदान पर भिन्न-भिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।एकात्म मानव दर्शन के प्रणेता पं. दीनदयाल उपाध्यायका नाम राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीयक्षितिज पर बहु श्रद्धा एवं सम्मान के साथ लिया जाता है।एक सामान्यपरिवार में जन्मलेकर बचपन से ही मुसीबतों के थपे ड़ेसहन करते-करते श्री उपाध्यायसमाज सेवा और राजनीति के शिखर तक पहु ँचेऐसे बहु विरल उदाहरण दृष्टि में आते हैं।उनके जीवन को देखकर कविवर रामधारी सिंह दिनकर की ये पंक्तियाँ बरबस ही मानस पटल पर उभर आती है -

जो लाक्षागृह में जलते हैं, वे ही सूरमा निकलते हैं
वर्षों तक वन में घूम-घूम, बाधा विघ्नों को चूम-चूम
सह धूप-घाम पानी पत्थर, पाण्डव आए कुछ और निखर।

पं. दीनदयाल उपाध्यायका जन्म 25 सितंबर 1916 को हु आ था। अपने अध्ययनकाल में एक मेधावी छात्र रहे पं. उपाध्यायप्रखर वक्ता, मूर्धन्यसाहित्यकार, कुशल पत्रकार, लेखक, समीक्षक एवं राजनीतिज्ञ के रूप में ख्याति प्राप्त है।राजनीति में वे शुचिता के पर्याय थे। वे अजातशत्रु थे। उनके कोई शत्रु नहीं था। वे सबके मित्र और सब उनके मित्र थे। वे आदर्शों एवं सिद्धांतों के प्रबल पक्षधर थे और लाख मुसीबतों के बावजूद कभी उनके साथ उन्होंनेसमझौ ता नहीं किया। वे जीवनपर्यन्तराष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए कृत संकल्पित रहे। वे राष्ट्र के लिए जन्मे थे और ताजिन्दगीराष्ट्र चिन्तनएवं राष्ट्र सेवा करते रहे।

'शिक्षा' को लेकर उनके विचार बहु स्पष्ट थे। वे शिक्षा को सामाजिक सरोकारों में सर्वोपरि मानते थे। वे व्यक्ति के द्वारा शिक्षण यज्ञ में आहु तिदेना सामाजिक ऋण की भरपाई मानते थे। उन्होंनेकहा था, ''शिक्षा का संबंध जितना व्यक्ति से है, उससे अधिक समाज से है।हम ऐसे मानव की कल्पना कर सकते हैं, जिसे किसी भी प्रकार की शिक्षा न मिली हो और जो अपनी सहज प्रवृत्तियोंके सहारे ही जीवनयापन करता हो, किन्तु बिना शिक्षा के समाज सम्भव नहीं। यदि 'शिक्षा' न हो तो 'समाज' का जन्म ही न हो। अतः शिक्षा के प्रश्न को मूलतः सामाजिक दृष्टिकोण से ही देखना होगा। शास्त्रों के अनुसार यह ऋषि-ऋण है, जिसे चुकाना प्रत्येकव्यक्ति का कर्त्तव्यहै।''

शिक्षा का कार्य समाज में समता, सरसता, माधुर्य, प्रेम, भाईचारे, सहयोग और समन्वय का वातावरण बनाना है।यदि शिक्षा यह काम करने में सफल नहीं रही तो उक्त समाज की कल्पना करना बेमानी होगा। हमें राष्ट्र को सर्वोपरि समझकर राष्ट्र का ही हित साधने के लिए कार्य करना चाहिए। राष्ट्र की अखंडता एवं हित में राष्ट्रवासियों का हित निहित है।इस माह 11 फरवरी 2017 के दिन पं. दीनदयाल उपाध्यायकी पुण्यतिथि है।आज ही के दिन (11 फरवरी 1968) उन्होंनेइस ईह लोक का त्याग किया था। भले ही पंडित जी शरीर रूप में आज हमारे मध्यनहीं है, लेकिन अपने विचार और लेखनी से रचित विपुल साहित्य के रूप में सदैव हमारे बीच मौ जूद रहेंगे। मैं उन पुण्य-दिव्यात्मा-महात्मा को नमन करते हु ए परमात्मा से प्रार्थना करता हू ँकि हमें उनके द्वारा बताए कर्त्तव्यपथ पर निरन्तर आगे ब ढ़ने का सामर्थ्य प्रदान करें।

एक फरवरी 2017 को वसन्तपञ्चमी का पर्व हमने मनाया। विद्या की देवी माँ सरस्वती का जन्मदिन है वसन्त पञ्चमी! माँ सरस्वती हमारे प्रान्तकी शिक्षा पर अपनी कृपा दृष्टि डालें ताकि एक शिक्षित एवं समृद्ध राज्य का हमारी माननीया मुख्यमंत्री वसुन्धराराजे का स्वप्न पूरा हो सके। हमें इस क्षेत्र में अपने सम्पूर्ण योग यताएवं क्षमता के साथ कार्य करना चाहिए।

बोर्ड परीक्षाएँ 02 मार्च 2017 से प्रारम्भ हो रही है।विद्यालयों में इन दिनों परीक्षा परिणाम में संख्यात्मक एवं गुणात्मकसुधार के लिए अभियान स्तर पर काम हो रहा है।इन हेंजानकर मुझे बहु प्रसन्नता होती है।मुझे पूर्ण विश्वास है कि आगामी बोर्ड परीक्षा 2017 में राजकीय विद्यालयों में परीक्षा परिणाम उत्तम रहेंगे तथा हमारे विद्यार्थी राज्यस्तरीय वरीयता सूचियों में स्थान प्राप्त कर अपनी श्रेष्ठता को प्रमाणित करेंगे। मैं इस वर्ष परीक्षा में सम्मिलित होने वाले सभी विद्यार्थियों के उत्तमपरीक्षा परिणाम के लिए अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हू ँ।

(प्रो. वासुदेव देवनानी)

> "शिक्षा का कार्य समाज में समता, सरसता, माधुर्य, प्रेम, भाईचारे, सहयोग और समन्वय का वातावरण बनाना है। यदि शिक्षा यह काम करने में सफल नहीं रही तो उक्त समाज की कल्पना करना बेमानी होगा। हमें राष्ट्र को सर्वोपरि समझकर राष्ट्र का ही हित साधने के लिए कार्य करना चाहिए। राष्ट्र की अखंडता एवं हित में राष्ट्रवासियों का हित निहित है।"

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते -श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।

In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 57 | अंक : 8 | माघ-फाल्गुन २०७३ | फरवरी, 2017

प्रधान सम्पादक
बी.एल. स्वर्णकार

वरिष्ठ सम्पादक
प्रकाश चन्द्र जाटोलिया

सम्पादक
गोमाराम जीनगर

सह सम्पादक
मुकेश व्यास

प्रकाशन सहायक
नारायणदास जीनगर
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 15

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 75
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 150
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 200
- मनीऑर्डर/बैंक ड्राफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएं।

पत्र व्यवहार हेतु पता

वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528875
फैक्स : 0151-2201861
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **-वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

- प्रयास : परिश्रम : सफलता 5

आलेख

- मन की बात 6
  माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
- ...ताकि हमारी चेतना में परमानंद रूपी वसन्त उतर सके 11
  डॉ. रेणुका व्यास
- एक अभिनव पहल प्रयास 2017 13
  सुभाष माचरा
- अपठित गद्यांश (Unseen Passage) 15
  डॉ. रोहताश पचार
- Parts of Speech 16
  Dr. Ram Gopal Sharma
- Tricks for Poems and Road Safety 21
  Poonam Gidwani
- श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' 22
  विजय शंकर आचार्य
- भौतिक विज्ञान को कैसे सरल बनाएँ 23
  राकेश कुमार शर्मा
- सरल रसायन 24
  सुरेश कुमार
- हृदय व न्यूरॉन का चित्र बनाने की सरल विधि 25
  उर्मिला चौधरी
- प्रायिकता (Probability) 26
  विजय कुमार शर्मा
- सांख्यिकी 29
  मनोज कुमार जाँगिड़
- राजस्थान गौरव इंस्पायर अवार्ड-2016 30
- न डरें, न रखें तनाव 43
  डॉ. राधाकिशन सोनी
- **जाली प्रस्तावों एवं धोखाधड़ी से बचें** 45
- मिशन मेरिट 46
  चन्द्रशेखर हर्ष
- स्वामी दयानन्द एवं उनका शैक्षिक दर्शन 47
  डॉ. शिवराज भारतीय
- पं. दीनदयाल उपाध्याय का शैक्षिक चिन्तन 49
  गोमाराम जीनगर

मासिक गीत

- वर दे, वीणा वादिनि वर दे 12
  सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

स्तम्भ

- पाठकों की बात 4
- आदेश-परिपत्र 31-41
- विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम 42
- शिविरा पञ्चाङ्ग (फर. 17-मार्च 17) 42
- व्यंग्य चित्र : रामबाबू माथुर 45

मुख्य आवरण :
नारायणदास जीनगर, बीकानेर

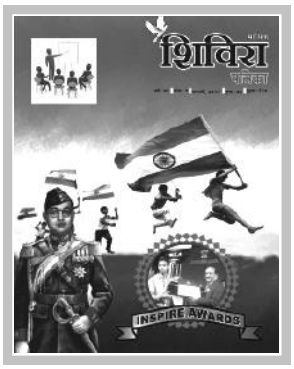

▼ *चिन्तन*

तस्मादसक्तः सततं
कार्यं कर्म समाचर।
असक्तो ह्याचरन्कर्म
परमाप्नोति पूरुषः।।

(गीता 3-19)

अनासक्त होकर सदा करणीय कर्त्तव्य-कर्म सुचारू रूप से करता रह क्योंकि अनासक्त होकर कर्म करने वाला मनुष्य परम पद को पा लेता है।

पाठकों की बात

- 'शिविरा' जनवरी 2017 का आद्यन्त रसास्वादन एवं अनुशीलन किया। 'अपनों से अपनी बात' में देवी कुण्ड सागर, बीकानेर के माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षक श्री जैसाराम के विद्यालय एवं शिक्षा के प्रति समर्पण की माननीय शिक्षा मंत्री जी द्वारा की गई प्रशंसा पढ़कर मन भाव-विभोर हो गया। भारतीय इतिहास के अग्रणी सेनानियों गुरु गोविन्द सिंह, स्वामी विवेकानन्द, गाँधीजी, सुभाषचन्द्र बोस पर प्रेरणादायी आलेख पढ़कर इन विभूतियों के प्रति नतमस्तक हूँ। सभी शैक्षिक आलेख सुधि पाठकों एवं शिक्षकों के लिए उपयोगी हैं। 'पुस्तक समीक्षाएँ' प्रस्तुत पुस्तकों को समग्र रूप से पढ़ने हेतु आमंत्रित कर रही हैं। रामबाबू माथुर के व्यंग्य चित्र सरस एवं सार्थक हैं। आवरण पृष्ठ बहुत शानदार एवं राष्ट्रीयता की भावना से ओत प्रोत है।

शिवकुमार मुलू, बीकानेर

- माह जनवरी 2017 का आवरण पृष्ठ देशभक्ति की भावना जगाने वाला है। 'स्वामी विवेकानन्द का राष्ट्रप्रेम' लेख बहुत ही प्रेरक लगा। 'अपनों से अपनी बात' में 'दिव्यांग शिक्षक की दिव्यता को नमन!' पढ़कर मन गद्‌गद् हो गया। दिव्यांग शिक्षक श्री जैसाराम से सभी शिक्षकों को प्रेरणा लेकर संख्यात्मक एवं गुणात्मक दोनों दृष्टिकोण से शानदार परीक्षा परिणाम देना चाहिए। विजयसिंह माली का 'नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के शिक्षा विषयक विचार' लेख भी बहुत अच्छा लगा। शिविरा पत्रिका का प्रत्येक अंक 'गागर में सागर' जैसा रहता है। इसके प्रत्येक अंक का बड़ी ही बेसब्री से इंतजार रहता है। शिविरा में जो लेख पढ़ने को मिल रहे हैं, इसके लिए वरिष्ठ संपादक महोदय व उनकी टीम बधाई की पात्र है।

देवकीनन्दन शर्मा, भगेगा

- जनवरी 17 के दूसरे पृष्ठ पर दिव्यांग दिव्य शिक्षक श्री जैसाराम की अनुकरणीय आदर्श कर्तव्यनिष्ठा शिक्षकों को निश्चय ही प्रेरणा देगी। राष्ट्रगीत एवं राष्ट्रगान के सूक्ष्म अन्तर को सुस्पष्ट कर इनकी महत्ता सुन्दर शैली में प्रतिपादित है। स्वामी विवेकानन्द एवं गुरु गोविन्द सिंह की अपूर्व निडरता, वीरता व धर्म देशहित बलिदान की कहानी पढ़ने को मिली। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के शैक्षिक विचारों की अच्छी जानकारी दी गई है। 'जीवन संध्या उत्सव कैसे बने' चिन्तन सुनहरी संध्या पर पहुँचे आदरणीय व्यक्तियों के लिए महत् उपादेय है, नई पीढ़ी के लिए संकेत है। 'अरुण यह मधुमय देश हमारा', नववर्ष नव संकल्प स्तम्भ में सारस्वत जी का आलेख एक भव्य पठनीय रम्य रचना है। इस आलेख के साथ जयशंकर प्रसाद जी की कविता पूर्णतः सामंजस्य रखती है। संपूर्ण अंक संयोजन निःसन्देह प्रशंसनीय है। एतदर्थ हार्दिक साधुवाद।

टेकचन्द्र शर्मा, झुंझुनूं

- शिविरा माह जनवरी 17 का अंक मिला। पढ़कर अपार प्रसन्नता हुई। इस अंक में निदेशक महोदय का 'राष्ट्रप्रथम' व मंत्री महोदय का 'अपनों से अपनी बात' शिक्षकों को प्रेरणा प्रदान करने के साथ ही उत्साहवर्द्धन करता है। पत्रिका कवर पेज दिनों दिन निखरता जा रहा है। इसके साथ ही सुभाष सोनगरा का लेख 'बदलती जीवन शैली व हमारा स्वास्थ्य', डॉ. गिरीशदत्त शर्मा का 'वेदों में पर्यावरणीय चेतना' तथा रमेशकुमार शर्मा का 'विवेकानन्द शोध और शिक्षा दर्शन' बहुत ही सारगर्भित लगे। स्थाई स्तंभ शाला प्रांगण में विद्यालय की गतिविधियों को चित्र सहित प्रकाशित किया जाए तो और अच्छा रहेगा एवं प्राथमिक शिक्षा के बालकों को ध्यान में रखकर भी कुछ पाठ्यसामग्री दी जाए तो प्राथमिक कक्षा के बालक व शिक्षक भी इसका और अधिक उपयोग कर सकेंगे।

अशोक जीनगर, भीनमाल

- पत्रिका के कवर पर सुभाष बाबू का बड़ा चित्र व आन्तरिक आलेख देकर सच्ची श्रद्धांजलि दी है। साथ ही 'दिशाकल्प' व 'अपनों से अपनी बात' के माध्यम से निदेशक व शिक्षामंत्री महोदय ने 'दिव्यांग की दिव्यता' प्रकट कर शिक्षकों द्वारा किये जा रहे सकारात्मक प्रयासों को तवज्जो देकर मान बढ़ाया है। दीपक जोशी का 'स्मार्ट प्रोजेक्टर', 'राष्ट्रगीत वन्देमातरम् और मूल कर्त्तव्य', 'इतिहास की बात 'सत्रह' के साथ' अधिक ज्ञनवर्द्धक रहे। मासिक गीत 'आ गया संक्रान्ति का सन्देश पावन' प्रासंगिक लगा।

राजेन्द्र गहलोत, सूरतगढ़

सत्यमेव जयते

बी.एल. स्वर्णकार
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

प्रयास : परिश्रम : सफलता

राज्य स्तर पर पढ़ाई के परिष्कार की प्रवृत्ति का पथ ढूँढ़ने का प्रथम प्रयास है - 'प्रयास-2017'। प्रयास-2017 का लक्ष्य है, कक्षा 10 के अपेक्षाकृत कठिन माने जाने वाले विषयों गणित, विज्ञान एवं अंग्रेजी को सरल तरीके से विद्यार्थियों तक पहुँचाना, जिससे रटने की प्रवृत्ति से मुक्त होकर विद्यार्थी जटिल लगने वाली विषयवस्तु को आसानी से समझ ले और यह ज्ञान स्थाई हो सके। इसके लिये गत परीक्षाओं में गुणात्मक रूप से उत्कृष्ट परिणाम देने वाले शिक्षकों को यह गुरुत्तर दायित्व प्रदान किया गया। उत्प्रेरण हेतु कार्यशालाएँ आयोजित कर विचारोत्तेजक सत्र 'ब्रेन स्टोर्मिंग सेशन' चलाए गए। उनके द्वारा इन विषयों की परम्परागत शिक्षण विधि को त्याग कर नवीन विधियों का सहारा लिया गया, जो न केवल आंचलिकता का पुट लिये हुए थीं, वरन् आनन्ददायी भी थीं, इसलिये आसानी से मस्तिष्क के पटल पर स्थाई होने का सामर्थ्य भी रख सकी। इन विषयों के पाठ्यक्रम को प्रकरण वार बाँटा जाकर इन विशेषज्ञों के प्रकरणवार समूह बनाए गए और हर प्रकरण पर किए जाने वाले नवाचारों को संग्रहीत किया गया, जिन्हें राज्य स्तर तक सभी विद्यालयों में बाँटा जा रहा है। गत वर्ष इन विषयों में न्यून परिणाम देने वाले विद्यालयों पर क्रियान्वयन का प्रबोधन भी किया जाएगा। इस प्रकार निश्चय ही परिणाम का परिष्कार कर सकेगा-'प्रयास 2017'।

हमारी आराध्या 'वीणा-पुस्तक-धारिणी' माँ शारदे की जयन्ती वसन्त पञ्चमी व महाशिवरात्रि आदि पर्व हमारे जीवन को आलोकित करे तथा सत्यान्वेषी महर्षि दयानन्द सरस्वती, संत रविदास व रामकृष्ण परमहंस के जीवन से प्रेरणा लेकर संस्कारमय आदर्शों पर चलने का सामर्थ्य देवे।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ....

(बी.एल. स्वर्णकार)

"प्रयास-2017 का लक्ष्य है, कक्षा 10 के अपेक्षाकृत कठिन माने जाने वाले विषयों गणित, विज्ञान एवं अंग्रेजी को सरल तरीके से विद्यार्थियों तक पहुँचाना, जिससे रटने की प्रवृत्ति से मुक्त होकर विद्यार्थी जटिल लगने वाली विषयवस्तु को आसानी से समझ ले और यह ज्ञान स्थाई हो सके।"

विशेष...

माननीय प्रधानमंत्री
श्री नरेन्द्र मोदी
के विशेष प्रसारण का
अविकल रूप

मन की बात

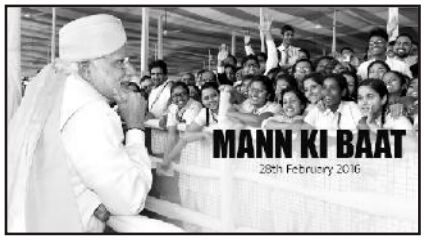

विद्यार्थी सकारात्मक चिन्तन के साथ अपनी श्रेष्ठतम उपलब्धि हासिल करें यह भाव प्रत्येक माता-पिता, अभिभावक और सच्चे शिक्षक का रहता है। आगे बढ़ने के लिए विद्यार्थी सत्रपर्यंत अध्ययन करते हुए परीक्षा जैसे महत्त्वपूर्ण पड़ाव को पार कर निरन्तर प्रयासरत रहते हैं। इन्हीं प्रयासों को तब पंख लग जाते हैं जब कोई आत्मीय आगे आकर अपना वरद हस्त उन पर रखता है।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 29 जनवरी, 2017 को सुबह 11 बजे आकाशवाणी और दूरदर्शन से प्रसारित 'मन की बात' प्रसारण में विद्यार्थियों को परीक्षा तैयारी के साथ-साथ जीवन की तैयारी व आगे बढ़ने का बहुत ही आत्मीय, प्रेरक और मार्गदर्शक उद्बोधन देकर परीक्षा के डर से मुक्त कर अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए सरल, छोटे परन्तु अचूक सूत्र दिए हैं जो कि गुरुमंत्र की तरह हैं।

शिविरा को अपने पाठकों-शिक्षकों, अभिभावकों और विद्यार्थियों के लिए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के प्रसारण का अविकल रूप प्रकाशित करने में अतीव प्रसन्नता हो रही है। -व.सं.

मेरे प्यारे देशवासियो, आप सबको नमस्कार। 26 जनवरी, हमारा 'गणतंत्र दिवस' देश के कोने-कोने में उमंग और उत्साह के साथ हम सबने मनाया। भारत का संविधान, नागरिकों के कर्त्तव्य, नागरिकों के अधिकार, लोकतंत्र के प्रति हमारी प्रतिबद्धता, एक प्रकार से ये संस्कार उत्सव भी है, जो आने वाली पीढ़ियों को लोकतंत्र के प्रति, लोकतान्त्रिक जिम्मेवारियों के प्रति, जागरूक भी करता है, संस्कारित भी करता है। लेकिन अभी भी हमारे देश में, नागरिकों के कर्तव्य और नागरिकों के अधिकार-उस पर जितनी बहस होनी चाहिए, जितनी गहराई से बहस होनी चाहिए, जितनी व्यापक रूप में चर्चा होनी चाहिए, वो अभी नहीं हो रही है। मैं आशा करता हूँ कि हर स्तर पर, हर वक़्त, जितना बल अधिकारों पर दिया जाता है, उतना ही बल कर्त्तव्यों पर भी दिया जाए। अधिकार और कर्त्तव्य की दो पटरी पर ही, भारत के लोकतंत्र की गाड़ी तेज़ गति से आगे बढ़ सकती है।

कल 30 जनवरी है, हमारे पूज्य बापू की पुण्य तिथि है। 30 जनवरी को हम सब सुबह 11 बजे, 2 मिनट मौन रख करके, देश के लिए प्राण न्योछावर करने वाले शहीदों को श्रद्धांजलि देते हैं। एक समाज के रूप में, एक देश के रूप में, 30 जनवरी, 11 बजे 2 मिनट श्रद्धांजलि, यह सहज स्वभाव बनना चाहिए। 2 मिनट क्यों न हो, लेकिन उसमें सामूहिकता भी, संकल्प भी और शहीदों के प्रति श्रद्धा भी अभिव्यक्त होती है।

हमारे देश में सेना के प्रति, सुरक्षा बलों के प्रति, एक सहज आदर भाव प्रकट होता रहता है। इस गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर, विभिन्न वीरता पुरस्कारों से, जो वीर-जवान सम्मानित हुए, उनको, उनके परिवारजनों को, मैं बधाई देता हूँ। इन पुरस्कारों में, 'कीर्ति चक्र', 'शौर्य चक्र', 'परम विशिष्ट सेवा मेडल', 'विशिष्ट सेवा मेडल' - अनेक श्रेणियाँ हैं। मैं ख़ास करके नौजवानों से आग्रह करना चाहता हूँ। आप social media में बहुत active हैं। आप एक काम कर सकते हैं? इस बार, जिन-जिन वीरों को ये सम्मान मिला है-आप Net पर खोजिए, उनके संबंध में दो अच्छे शब्द लिखिए और अपने साथियों में उसको पहुँचाइए। जब उनके साहस की, वीरता की, पराक्रम की बात को गहराई से जानते हैं, तो हमें आश्चर्य भी होता है, गर्व भी होता है, प्रेरणा भी मिलती है।

एक तरफ़ हम सब 26 जनवरी की उमंग और उत्साह की ख़बरों से आनंदित थे, तो उसी समय कश्मीर में हमारे जो सेना के जवान देश की रक्षा में डटे हुए हैं, वे हिमस्खलन के कारण वीर-गति को प्राप्त हुए। मैं इन सभी वीर जवानों को आदरपूर्वक श्रद्धांजलि देता हूँ, नमन करता हूँ।

मेरे युवा साथियो, आप तो भली-भाँति जानते हैं कि मैं 'मन की बात' लगातार करता रहता हूँ। जनवरी, फ़रवरी, मार्च, अप्रैल-ये सारे महीने हर परिवार में, कसौटी के महीने होते हैं। घर में एक-आध, दो बच्चों की Exam होती हैं, लेकिन पूरा परिवार Exam के बोझ में दबा हुआ होता है। तो मेरा मन कर गया कि ये सही समय है कि मैं विद्यार्थी दोस्तों से बातें करूँ, उनके अभिवावकों से बातें करूँ, उनके शिक्षकों से बातें करूँ। क्योंकि कई वर्षों से, मैं जहाँ गया, जिसे मिला, परीक्षा एक बहुत बड़ा परेशानी का कारण नज़र आया। परिवार परेशान, विद्यार्थी परेशान, शिक्षक परेशान, एक बड़ा विचित्र सा मनोवैज्ञानिक वातावरण हर घर में नज़र आता है। और मुझे हमेशा ये लगा है कि इसमें से बाहर आना चाहिए और इसलिए मैं आज युवा साथियों के साथ कुछ विस्तार से बातें करना चाहता

हूँ। जब ये विषय मैंने घोषित किया, तो अनेक शिक्षकों ने, अभिभावकों ने, विद्यार्थियों ने मुझे message भेजे, सवाल भेजे, सुझाव भेजे, पीड़ा भी व्यक्त की, परेशानियों का भी ज़िक्र किया और उसको देखने के बाद जो मेरे मन में विचार आए, वो मैं आज आपके साथ साझा करना चाहता हूँ। मुझे एक टेलीफोन सन्देश मिला सृष्टि का। आप भी सुनिए, सृष्टि क्या कह रही है: –

सर, मैं आपसे इतना कहना चाहती हूँ कि exams के time पे अक्सर ऐसा होता है कि हमारे घर में, आस–पड़ोस में, हमारी society में बहुत ही ख़ौफ़नाक और डरावना माहौल बन जाता है। इस वजह से student Inspiration तो कम, लेकिन down बहुत हो जाते है। तो मैं आपसे इतना पूछना चाहती हूँ कि क्या ये माहौल ख़ुशनुमा नहीं हो सकता?

खैर, सवाल तो सृष्टि ने पूछा है, लेकिन ये सवाल आप सबके मन में होगा। परीक्षा अपने–आप में एक ख़ुशी का अवसर होना चाहिए। साल भर मेहनत की है, अब बताने का अवसर आया है, ऐसा उमंग–उत्साह का ये पर्व होना चाहिए। बहुत कम लोग हैं, जिनके लिए exam में pleasure होती है, ज़्यादातर लोगों के लिए exam एक pressure होती है। निर्णय आपको करना है कि इसे आप pleasure मानेंगे कि pressure मानेंगे। जो pleasure मानेगा, वो पाएगा; जो pressure मानेगा, वो पछताएगा और इसलिए मेरा मत है कि परीक्षा एक उत्सव है, परीक्षा को ऐसे लीजिए, जैसे मानो त्योहार है। और जब त्योहार होता है, जब उत्सव होता है, तो हमारे भीतर जो सबसे best होता है, वही बाहर निकल कर के आता है।

समाज की भी ताक़त की अनुभूति उत्सव के समय होती है। जो उत्तम से उत्तम है, वो प्रकट होता है। सामान्य रूप से हमको लगता है कि हम लोग कितने Indisciplined हैं, लेकिन जब 40–45 दिन चलने वाले कुम्भ के मेलों की व्यवस्था देखें, तो पता चलता है कि ये make-shift arrangement और क्या discipline है लोगों में। ये उत्सव की ताक़त है। exam में भी पूरे परिवार में, मित्रों के बीच, आस–पड़ोस के बीच एक उत्सव का माहौल बनना चाहिए। आप देखिए, ये pressure, pleasure में convert हो जाएगा। उत्सवपूर्ण वातावरण बोझमुक्त बना देगा। और मैं इसमें माता–पिता को ज़्यादा आग्रह से कहता हूँ कि आप इन तीन–चार महीने एक उत्सव का वातावरण बनाइए। पूरा परिवार एक टीम के रूप में इस उत्सव को सफल करने के लिए अपनी–अपनी भूमिका उत्साह से निभाए। देखिए, देखते ही देखते बदलाव आ जाएगा। हक़ीक़त तो ये है कि कन्याकुमारी से कश्मीर तक और कच्छ से ले करके कामरूप तक, अमरेली से ले करके अरुणाचल प्रदेश तक, ये तीन–चार महीने परीक्षा ही परीक्षाएँ होती हैं।

ये हम सब का दायित्व है कि हम हर वर्ष इन तीन–चार महीनों को अपने–अपने तरीक़े से, अपनी–अपनी परंपरा को लेते हुए, अपने–अपने परिवार के वातावरण को लेते हुए, उत्सव में परिवर्तित करें। और इसलिए मैं तो आपसे कहूँगा "smile more score more'. जितनी ज़्यादा ख़ुशी से इस समय को बिताओगे, उतने ही ज़्यादा नंबर पाओगे, करके देखिए। और आपने देखा होगा कि जब आप खुश होते हैं, मुस्कुराते हैं, तो आप relax अपने–आप को पाते हैं। आप सहज रूप से relax हो जाते हैं और जब आप relax होते हैं, तो आपकी वर्षों पुरानी बातें भी सहज रूप से आपको याद आ जाती हैं। एक साल पहले classroom में teacher ने क्या कहा, पूरा दृश्य याद आ जाता है। और आपको ये पता होना चाहिए, memory को recall करने का जो power है, वो relaxation में सबसे ज़्यादा होता है। अगर आप तनाव में है, तो सारे दरवाज़े बंद हो जाते हैं, बाहर का अंदर नहीं जाता, अंदर का बाहर नहीं आता है। विचार प्रक्रिया में ठहराव आ जाता है, वो अपने–आप में एक बोझ बन जाता है। Exam में भी आपने देखा होगा, आपको सब याद आता है।

किताब याद आती है, chapter याद आता है, page number याद आता है, page में ऊपर की तरफ़ लिखा है कि नीचे की तरफ़, वो भी याद आता है, लेकिन वो particular शब्द याद नहीं आता है। लेकिन जैसे ही exam दे करके बाहर निकलते हो और थोड़ा सा कमरे के बाहर आए, अचानक आपको याद आ जाता है–हाँ यार, यही शब्द था। अंदर क्यों याद नहीं आया, pressure था। बाहर कैसे याद आया? आप ही तो थे, किसी ने बताया तो नहीं था। लेकिन जो अंदर था, तुरंत बाहर आ गया और बाहर इसलिए आया, क्योंकि आप relax हो गए। और इसलिए memory recall करने की सबसे बड़ी अगर कोई औषधि है, तो वो relaxation है। और ये मैं अपने स्वानुभव से कहता हूँ कि अगर pressure है, तो अपनी चीज़ें हम भूल जाते हैं और relax हैं, तो कभी हम कल्पना नहीं कर सकते, अचानक ऐसी–ऐसी चीज़ें याद आ जाती हैं, वो बहुत काम आ जाती हैं और ऐसा नहीं है कि आप के पास knowledge नहीं है, ऐसा नहीं है कि आप के पास Information नहीं है, ऐसा नहीं है कि आपने मेहनत नहीं की है। लेकिन जब tension होता है, तब आपका knowledge, आपका ज्ञान, आपकी जानकारी नीचे दब जाती हैं और आपका tension उस पर सवार हो जाता है। और इसलिए आवश्यक है, 'A happy mind is the secret for a good mark-sheet'. कभी–कभी ये भी लगता है कि हम proper perspective में परीक्षा को देख नहीं पाते हैं। ऐसा लगता है कि वो जीवन–मरण का जैसे सवाल है।

आप जो exam देने जा रहे हैं, वो साल भर में आपने जो पढ़ाई की है, उसकी exam है। ये आपके जीवन की कसौटी नहीं है। आपने कैसा जीवन जिया, कैसा जीवन जी रहे हो, कैसा जीवन जीना चाहते हो, उसकी exam नहीं है। आपके जीवन में, classroom में, notebook ले करके दी गई परीक्षा के सिवाय भी कई कसौटियों से गुज़रने के अवसर आए होंगे और इसलिए परीक्षा को जीवन की सफलता–विफलता से कोई लेना–देना है, ऐसे बोझ से मुक्त हो जाइए। हमारे सबके सामने, हमारे पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी का बड़ा प्रेरक उदाहरण है। वे वायुसेना में भर्ती होने गए, fail हो गए। मान लीजिए, उस विफलता के कारण अगर वो मायूस हो जाते, ज़िंदगी से हार जाते, तो क्या भारत को इतना बड़ा वैज्ञानिक मिलता, इतने बड़े राष्ट्रपति मिलते! नहीं मिलते। कोई ऋचा आनंद जी ने मुझे एक सवाल भेजा है: –

आज के इस दौर में शिक्षा के सामने जो सबसे बड़ी चुनौती देख पाती हूँ, वो यह कि शिक्षा परीक्षा केन्द्रित हो कर रह गयी है। अंक सबसे ज़्यादा महत्त्वपूर्ण हो गए हैं। इसकी वजह से प्रतिस्पर्द्धा तो बहुत बढ़ी ही है, साथ में विद्यार्थियों में तनाव भी बहुत बढ़ गया है। तो शिक्षा की इस वर्तमान दिशा और इसके भविष्य को ले करके आपके विचारों से अवगत होना चाहूँगी।

वैसे उन्होंने ख़ुद ने ही जवाब दे ही दिया है, लेकिन ऋचा जी चाहती हैं कि मैं भी इसमें कुछ अपनी बात रखूँ। marks और marks-sheet इसका एक सीमित उपयोग है। ज़िंदगी में वही सब कुछ नहीं होता है। ज़िंदगी तो चलती है कि आपने कितना ज्ञान अर्जित किया है। ज़िंदगी तो

चलती है कि आपने जो जाना है, उसको जीने का प्रयास किया है क्या? ज़िंदगी तो चलती है कि आपको जो एक sense of mission मिला है और जो आपका sense of ambition है, ये आपके mission और ambition के बीच में कोई तालमेल हो रहा है क्या? अगर आप इन चीज़ों में भरोसा करोगे, तो marks पूँछ दबाते हुए आपके पीछे आ जाएँगे; आपको marks के पीछे भागने की कभी ज़रुरत नहीं पड़ेगी। जीवन में आपको knowledge काम आने वाला है, skill काम आने वाली है, आत्मविश्वास काम आने वाला है, संकल्पशक्ति काम आने वाली है। आप ही मुझे बताइए, आपके परिवार के कोई डॉक्टर होंगे और परिवार के सब लोग उन्हीं के पास जाते होंगे, family doctor होते हैं।

आप में से कोई ऐसा नहीं होगा, जिसने अपने family doctor को कभी, वो कितने नंबर से पास हुआ था, पूछा होगा। किसी ने नहीं पूछा होगा। बस, आपको लगा कि भाई, एक डॉक्टर के नाते अच्छे हैं, आप लोगो को लाभ हो रहा है, आप उसकी सेवाएँ लेना शुरू किए। आप कोई बड़ा से बड़ा case लड़ने के लिए किसी वकील के पास जाते हैं, तो क्या उस वकील की marks-sheet देखते हैं क्या? आप उसके अनुभव को, उसके ज्ञान को, उसकी सफलता की यात्रा को देखते हैं। और इसलिए ये जो अंक का बोझ है, वो भी कभी-कभी हमें सही दिशा में जाने से रोक देता है। लेकिन इसका मतलब ये नहीं कि मैं ये कहूँ कि बस, पढ़ना ही नहीं है। अपनी कसौटी के लिए उसका उपयोग ज़रुर है।

मैं कल था, आज कहाँ हूँ, वो जानने के लिए ज़रुरी है। कभी-कभार ये भी होता है और अगर बारीक़ी से आप अपने स्वयं के जीवन को देखोगे, तो ध्यान में आएगा कि अगर अंक के पीछे पड़ गए, तो आप shortest रास्ते खोजोगे, selected चीजों को ही पकड़ोगे और उसी पर focus करोगे। लेकिन आपने जिन चीज़ों पर हाथ लगाया था, उसके बाहर की कोई चीज़ आ गई, आपने जो सवाल तैयार किए थे, उससे बाहर का सवाल आ गया, तो आप एकदम से नीचे आ जाएँगे। अगर आप ज्ञान को केंद्र में रखते हैं, तो बहुत चीज़ों को अपने में समेटने का प्रयास करते हो। लेकिन अंक पर focus करते हो, marks पर focus करते हो, तो आप धीरे-धीरे अपने-आप को सिकुड़ते जाते हो और एक निश्चित area तक अपने आपको सीमित करके सिर्फ marks पाने के लिए। तो हो सकता है कि exam में होनहार बनने के बावजूद भी जीवन में कभी-कभी विफल हो जाते हैं।

ऋचा जी, ने एक बात ये भी कही है 'प्रतिस्पर्द्धा'। ये एक बहुत बड़ी मनोवैज्ञानिक लड़ाई है। सचमुच में, जीवन को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिस्पर्द्धा काम नहीं आती है। जीवन को आगे बढ़ाने के लिए अनुस्पर्द्धा काम आती है और जब हम अनुस्पर्द्धा मैं कहता हूँ, तो उसका मतलब है, स्वयं से स्पर्द्धा करना। बीते हुए कल से आने वाला कल बेहतर कैसे हो? बीते हुए परिणाम से आने वाला अवसर अधिक बेहतर कैसे हो? अक्सर आपने खेल जगत में देखा होगा। क्योंकि उसमें तुरंत समझ आता है, इसलिए मैं खेल जगत का उदहारण देता हूँ। ज़्यादातर सफल खिलाड़ियों के जीवन की एक विशेषता है कि वो अनुस्पर्द्धा करते हैं। अगर हम श्रीमान सचिन तेंदुलकर जी का ही उदहारण ले लें। बीस साल लगातार अपने ही record तोड़ते जाना, खुद को ही हर बार पराजित करना और आगे बढ़ना। बड़ी अदभुत जीवन यात्रा है उनकी, क्योंकि उन्होंने प्रतिस्पर्द्धा से ज्यादा अनुस्पर्द्धा का रास्ता अपनाया।

जीवन के हर क्षेत्र में दोस्तो और जब आप exam देने जा रहे हैं तब, पहले अगर दो घंटे पढ़ पाते थे शान्ति से, वो तीन घंटे कर पाते हो क्या? पहले जितने बजे सुबह उठना तय करते थे, देर हो जाती थी, क्या अब समय पर उठ पाते हो क्या? पहले परीक्षा की tension में नींद नहीं आती थी, अब नींद आती है क्या? ख़ुद को ही आप कसौटी पर कस लीजिए और आपको ध्यान में आएगा-प्रतिस्पर्द्धा, पराजय, हताशा, निराशा और ईर्ष्या को जन्म देती है, लेकिन अनुस्पर्द्धा आत्मंथन, आत्मचिंतन का कारण बनती है, संकल्प शक्ति को दृढ़ बनाती है और जब ख़ुद को पराजित करते हैं, तो और अधिक आगे बढ़ने का उत्साह अपने-आप पैदा होता है, बाहर से कोई extra energy की ज़रूरत नहीं पड़ती है। भीतर से ही वो ऊर्जा अपने-आप पैदा होती है। अगर सरल भाषा में मुझे कहना है, तो मैं कहूँगा-जब आप किसी से प्रतिस्पर्द्धा करते हैं, तो तीन संभावनाएँ मोटी-मोटी नज़र आती हैं। एक, आप उससे बहुत बेहतर हैं। दूसरा, आप उससे बहुत ख़राब हैं या आप उसके बराबर के हैं। अगर आप बेहतर हैं तो बेपरवाह हो जाएँगे, अति विश्वास से भर जाएँगे। अगर आप उसके मुक़ाबले ख़राब करते हैं, तब दुखी और निराश हो जाएँगे, ईर्ष्या से भर जाएँगे, जो ईर्ष्या आपको, अपने-आप को, खाती जाएगी और अगर बराबरी के हैं, तो सुधार की आवश्यकता आप कभी महसूस ही नहीं करोगे। जैसी गाड़ी चलती है, चलते रहोगे। तो मेरा आपसे आग्रह है-अनुस्पर्द्धा का, ख़ुद से स्पर्द्धा करने का। पहले क्या किया था, उससे आगे कैसे करूँगा, अच्छा कैसे करूँगा। बस, इसी पर ध्यान केंद्रित कीजिए। आप देखिए, आपको बहुत परिवर्तन महसूस होगा।

श्रीमान एस. सुन्दर जी ने अभिभावकों की भूमिका के संबंध में अपनी भावना व्यक्त की है। उनका कहना है कि परीक्षा में अभिभावकों की भूमिका बहुत ही महत्त्वपूर्ण होती है। उन्होंने आगे लिखा है-''मेरी माँ पढ़ी-लिखी नहीं थी, फिर भी वह मेरे पास बैठा करती थी और मुझसे गणित के सवाल हल करने के लिए कहती थी। वह उत्तर मिलाती और इस तरह से वो मेरी मदद करती थी। ग़लतियाँ ठीक करती थी। मेरी माँ ने दसवीं की परीक्षा pass नहीं की, लेकिन बिना उनके सहयोग के मेरे लिए C.B.S.E. के exam pass करना नामुमकिन था।''

सुन्दर जी, आपकी बात सही है और आज भी देखा होगा आपने, मुझे सवाल पूछने वाले, सुझाव देने वालों में महिलाओं की संख्या ज़्यादा है, क्योंकि घर में बालकों के भविष्य के संबंध में माताएँ जो सजग होती हैं, सक्रिय होती हैं, वे बहुत चीज़ें सरल कर देती हैं। मैं अभिभावकों से इतना ही कहना चाहूँगा-तीन बातों पर हम बल दें। स्वीकारना, सिखाना, समय देना। जो है, उसे accept कीजिए। आपके पास जितनी क्षमता है, आप mentor कीजिए, आप कितने ही व्यस्त क्यों न हों, समय निकालिए, time दीजिए। एक बार आप accept करना सीख लेंगे, अधिकतम समस्या तो वहीं समाप्त हो जाएगी। हर अभिभावक इस बात को अनुभव करता होगा, अभिभावकों का, टीचरों का expectation समस्या की जड़ में होता है। acceptance समस्याओं के समाधान का रास्ता खोलता है। अपेक्षाएँ राह कठिन कर देती हैं। अवस्था को स्वीकार करना, नए रास्ते खोलने का अवसर देती है और इसलिए जो है, उसे accept कीजिए। आप भी बोझमुक्त हो जाएँगे। हम लोग, छोटे बच्चों के school bag के वज़न की चर्चा करते रहते हैं, लेकिन कभी-कभी तो मुझे लगता है कि अभिभावकों की जो अपेक्षाएँ होती हैं, उम्मीदें होती हैं, वो बच्चे के school bag से भी ज़रा ज़्यादा भारी हो जाती हैं।

बहुत साल पहले की बात है। हमारे एक परिचित व्यक्ति heart

attack के कारण अस्पताल में थे, तो हमारे भारत के लोक सभा के पहले Speaker गणेश दादा मावलंकर, उनके पुत्र पुरुषोत्तम मावलंकर, वो कभी M.P. भी रहे थे, वो उनकी तबीयत देखने आए। मैं उस समय मौजूद था और मैंने देखा कि उन्होंने आ करके उनकी तबीयत के संबंध में एक भी सवाल नहीं पूछा। बैठे और आते ही उन्होंने वहाँ क्या स्थिति है, बीमारी कैसी है, कोई बातें नहीं, चुटकुले सुनाना शुरू कर दिया और पहले दो-चार मिनट में ही ऐसा माहौल उन्होंने हल्का-फुल्का कर दिया। एक प्रकार से बीमार व्यक्ति को जाकर के जैसे हम बीमारी से डरा देते हैं। अभिभावकों से मैं कहना चाहूँगा, कभी-कभी हम भी बच्चों के साथ ऐसा ही करते हैं। क्या आपको कभी लगा कि exam के दिनों में बच्चों को हँसी-ख़ुशी का भी कोई माहौल दें। आप करके देखिए, वातावरण बदल जाएगा।

एक बड़ा कमाल का मुझे Phone Call आया है। वे सज्जन अपना नाम बताना नहीं चाहते हैं। Phone सुन कर के आपको पता चलेगा कि वो अपना नाम क्यों नहीं बताना चाहते हैं?

नमस्कार, प्रधानमंत्री जी, मैं अपना नाम तो नहीं बता सकता, क्योंकि मैंने काम ही कुछ ऐसा किया था अपने बचपन में। मैंने बचपन में एक बार नक़ल करने की कोशिश की थी, उसके लिए मैंने बहुत तैयारी करना शुरू किया कि मैं कैसे नक़ल कर सकता हूँ, उसके तरीक़ों को ढूँढ़ने की कोशिश की, जिसकी वजह से मेरा बहुत सारा time बर्बाद हो गया। उस time में मैं पढ़ करके भी उतने ही नंबर ला सकता था, जितना मैंने नक़ल करने के लिए दिमाग लगाने में ख़र्च किया और जब मैंने नक़ल करके पास होने की कोशिश की, तो मैं उसमें पकड़ा भी गया और मेरी वजह से मेरे आस-पास के कई दोस्तों को काफ़ी परेशानी हुई।

आपकी बात सही है। ये जो Short Cut वाले रास्ते होते हैं, वो नक़ल करने के लिए कारण बन जाते हैं। कभी-कभार ख़ुद पर विश्वास नहीं होने के कारण मन करता है कि बगल वाले से ज़रा देख लूँ, Confirm कर लूँ, मैंने जो लिखा है, सही है कि नहीं है और कभी-कभी तो हमने सही लिखा होता है, लेकिन बगल वाले ने झूठा लिखा होता है, तो उसी झूठ को हम कभी स्वीकार कर लेते हैं और हम भी मर जाते हैं। तो नक़ल कभी फ़ायदा नहीं करती है। 'To cheat is to be cheap, So please do not Cheat'। नक़ल आपको बुरा बनाती है, इसलिए नक़ल न करें। आपने कई बार और बार-बार ये सुना होगा कि नक़ल मत करना, नक़ल मत करना।

मैं भी आपको वही बात दोबारा कह रहा हूँ। नक़ल को आप हर रूप में देख लीजिए, वो जीवन को विफल बनाने के रास्ते की ओर आपको घसीट के ले जा रही है और Exam में ही अगर निरीक्षक ने पकड़ लिया, तो आपका तो सब-कुछ बर्बाद हो जाएगा और मान लीजिए, किसी ने नहीं पकड़ा, तो जीवन भर आपके मन पर एक बोझ तो रहेगा कि आपने ऐसा किया था और जब कभी आपको अपने बच्चों को समझाना होगा, तो आप आँख में आँख मिला करके नहीं समझा पाओगे। और एक बार नक़ल की आदत लग गई, तो जीवन में कभी कुछ सीखने की इच्छा ही नहीं रहेगी। फिर तो आप कहाँ पहुँच पाओगे?

मान लीजिए, आप भी अपने रास्तों को गड्ढे में परिवर्तित कर रहे हो और मैंने तो देखा है, कुछ लोग ऐसे होते हैं कि नक़ल के तौर-तरीक़े ढूँढ़ने में इतनी talent का उपयोग कर देते हैं, इतना Investment कर देते हैं; अपनी पूरी creativity जो है, वो नक़ल करने के तौर-तरीक़ों में खपा देते हैं। अगर वही creativity, यही time आप अपने exam के मुद्दों पर देते, तो शायद नक़ल की ही ज़रुरत नहीं पड़ती। अपनी ख़ुद की मेहनत से जो परिणाम प्राप्त होगा, उससे जो आत्मविश्वास बढ़ेगा, वो अद्भुत होगा।

एक phone call आया है: –

नमस्कार, प्रधानमंत्री जी। My name is Monica and since I am a class 12th student, I wanted to ask you a couple of questions regarding the Board Exams. My first question is, what can we do to reduce the stress that builds up during our exams and my second question is, why exams all about work and no play are. Thank you.

अगर परीक्षा के दिनों में, मैं आपको खेल-कूद की बात करूँगा, तो आपके teacher, आपके parents ये मुझ पर गुस्सा करेंगे, वो नाराज़ हो जाएँगे कि ये कैसा प्रधानमंत्री है, बच्चों को exam के समय में कह रहा है, खेलो। क्योंकि आम तौर पर धारणा ऐसी है कि अगर विद्यार्थी खेल-कूद में ध्यान देते हैं, तो शिक्षा से बेध्यान हो जाते हैं। ये मूलभूत धारणा ही ग़लत है, समस्या की जड़ वो ही है। सर्वांगीण विकास करना है, तो किताबों के बाहर भी एक ज़िन्दगी होती है और वो बहुत बड़ी विशाल होती है। उसको भी जीने का सीखने का यही समय होता है। कोई ये कहे कि मैं पहले सारी परीक्षाएँ पूर्ण कर लूँ, बाद में खेलूँगा, बाद में ये करूँगा, तो असंभव है। जीवन का यही तो moulding का time होता है। इसी को तो परवरिश कहते हैं।

दरअसल परीक्षा में मेरी दृष्टि से तीन बातें बहुत ज़रुरी हैं-proper rest आराम, दूसरा जितनी आवश्यक है शरीर के लिए, उतनी नींद और तीसरा दिमागी activity के सिवाय भी शरीर एक बहुत बड़ा हिस्सा है। तो शरीर के बाकी हिस्सों को भी physical activity मिलनी चाहिए। क्या कभी सोचा है कि जब इतना सारा सामने हो, तो दो पल बाहर निकल कर ज़रा आसमान में देखें, ज़रा पेड़-पौधों की तरफ देखें, थोड़ा-सा मन को हल्का करें, आप देखिए, एक ताज़गी के साथ फिर से आप अपने कमरे में, अपनी किताबों के बीच आएँगे। आप जो भी कर रहे हों, थोड़ा break लीजिए, उठ करके बाहर जाइए, kitchen में जाइए, अपनी पसंद की कोई चीज़ है, ज़रा खोजिए, अपनी पसंद का biscuit मिल जाए, तो खाइए, थोड़ी हँसी-मज़ाक कर लीजिए।

भले पाँच मिनट क्यों न हो, लेकिन आप break दीजिए। आपको महसूस होगा कि आपका काम सरल होता जा रहा है। सबको ये पसंद है कि नहीं, मुझे मालूम नहीं, लेकिन मेरा तो अनुभव है। ऐसे समय deep breathing करते हैं, तो बहुत फ़ायदा होता है। गहरी साँस, आप देखिए बहुत relax हो जाता है। गहरी साँस भी लेने के लिए कोई कमरे में fit रहने की ज़रुरत नहीं है। ज़रा खुले आसमान के नीचे आएँ, छत पर चले जाएँ, पाँच मिनट गहरी साँस ले करके फिर अपने पढ़ने के लिए बैठ जाएँ, आप देखिए, शरीर एक दम से relax हो जाएगा और शरीर का जो relaxation आप अनुभव करते हैं न, वो दिमागी अंगों का भी उतना ही relaxation कर देता है।

कुछ लोगों को लगता है, रात को देर-देर जागेंगे, ज़्यादा-ज़्यादा पढ़ेंगे-जी नहीं, शरीर को जितनी नींद की आवश्यकता है, वो अवश्य लीजिए, उससे आपका पढ़ने का समय बर्बाद नहीं होगा, वो पढ़ने की ताक़त में इज़ाफ़ा करेगा। आपका concentration बढ़ेगा, आपकी ताज़गी आएगी, freshness होगा। आपकी efficiency में overall बहुत बड़ी बढ़ोतरी होगी। मैं जब चुनाव में सभाएँ करता हूँ, तो कभी-कभी मेरी आवाज़ बैठ जाती है। तो मुझे एक लोक गायक मिलने आए। उन्होंने मुझे आकर के पूछा-आप कितने घंटे सोते हैं। मैंने कहा- क्यों भाई, आप

डॉक्टर हैं क्या? नहीं-नहीं, बोले-ये आपका आवाज़ जो चुनाव के समय भाषण करते-करते ख़राब हो जाता है, उसका इसके साथ संबंध है। आप पूरी नींद लेंगे, तभी आपके vocal cord को पूरा rest मिलेगा। अब मैंने नींद को और मेरे भाषण को और मेरी आवाज़ को कभी सोचा ही नहीं था, उन्होंने मुझे एक जड़ी-बूटी दे दी। तो सचमुच में हम इन चीज़ों का महत्त्व समझें, आप देखिए, आपको फ़ायदा होगा।

लेकिन इसका मतलब ये नहीं कि बस सोते ही रहें, लेकिन कुछ कहेंगे कि प्रधानमंत्री जी ने कह दिया है, अब बस जागने की ज़रुरत नहीं है, सोते रहना है। तो ऐसा मत करना, वरना आपके परिवार के लोग मेरे से नाराज़ हो जाएँगे और आपकी अगर marks-sheet जिस दिन आएगी, तो उनको आप नहीं दिखाई दोगे, मैं ही दिखाई दूँगा तो ऐसा मत करना और इसलिए मैं तो कहूँगा 'P for prepared and P for play', जो खेले वो खिले, 'the person who plays, shines'. मन, बुद्धि, शरीर उसको सचेत रखने के लिए ये एक बहुत बड़ी औषधि है।

ख़ैर, युवा दोस्तो, आप परीक्षा की तैयारी में हैं और मैं आपको मन की बातों में जकड़ कर बैठा हूँ। हो सकता है, ये आज की मेरी बातें भी तो आपके लिये relaxation का तो काम करेंगी ही करेंगी। लेकिन मैं साथ-साथ ये भी कहूँगा, मैंने जो बातें बताई हैं, उसको भी बोझ मत बनने दीजिए। हो सकता है तो करिए, नहीं हो सकता तो मत कीजिए, वरना ये भी एक बोझ बन जाएगा। तो जैसे मैं आपके परिवार के माता-पिता को बोझ न बनने देने की सलाह देता हूँ, वो मुझ पर भी लागू होती हैं। अपने संकल्प को याद करते हुए, अपने पर विश्वास रखते हुए, परीक्षा के लिए जाइए, मेरी बहुत शुभकामनाएँ हैं। हर कसौटी से पार उतरने के लिए कसौटी को उत्सव बना दीजिए। फिर कभी कसौटी, कसौटी ही नहीं रहेगी। इस मंत्र को ले करके आगे बढ़ें।

प्यारे देशवासियो, 1 फरवरी 2017 Indian Coast Guard के 40 वर्ष पूरे हो रहे हैं। इस अवसर पर मैं Coast Guard के सभी अधिकारियों एवं जवानों को राष्ट्र के प्रति उनकी सेवा के लिए धन्यवाद देता हूँ। ये गर्व की बात है कि Coast Guard देश में निर्मित अपने सभी 126 ships और 62 aircrafts के साथ विश्व के 4 सबसे बड़े Coast Guard के बीच अपना स्थान बनाए हुए है। Coast Guard का मंत्र है 'वयम् रक्षामः'। अपने इस आदर्श वाक्य को चरितार्थ करते हुए, देश की समुद्री सीमाओं और समुद्री परिवेश को सुरक्षित करने के लिए Coast Guard के जवान प्रतिकूल परिस्थितियों में भी दिन-रात तत्पर रहते हैं। पिछले वर्ष Coast Guard के लोगों ने अपनी जिम्मेवारियों के साथ-साथ हमारे देश के समुद्र तट को स्वच्छ बनाने का बड़ा अभियान उठाया था और हज़ारों लोग इसमें शरीक़ हुए थे।

Coastal Security के साथ-साथ Coastal Cleanness इसकी भी चिंता की उन्होंने, ये सचमुच में बधाई के पात्र हैं और बहुत कम लोगों को मालूम होगा कि हमारे देश में Coast Guard में सिर्फ़ पुरुष नहीं हैं, महिलाएँ भी कन्धे से कन्धा मिला कर समान रूप से अपनी जिम्मेवारियाँ निभा रहीं हैं और सफलतापूर्वक निभा रहीं हैं। Coast Guard की हमारी महिला अफ़सर Pilot हों, Observers के रूप में काम हों, इतना ही नहीं, Hovercraft की कमान भी संभालती हैं। भारत के तटीय सुरक्षा में लगे हुए और सामुद्रिक सुरक्षा एक महत्त्वपूर्ण विषय आज विश्व का बना हुआ है, तब मैं Indian Coast Guard के 40वीं वर्षगांठ पर उनको बहुत-बहुत बधाई देता हूँ।

1 फरवरी को वसन्त पञ्चमी का त्यौहार है, वसन्त-ये सर्वश्रेष्ठ ऋतु के रूप में, उसको स्वीकृति मिली हुई है। वसन्त-ये ऋतुओं का राजा है। हमारे देश में वसन्त पंचमी सरस्वती पूजा का एक बहुत बड़ा त्योहार होता है। विद्या की आराधना का अवसर माना जाता है। इतना ही नहीं, वीरों के लिए प्रेरणा का भी पर्व होता है। 'मेरा रंग दे बसंती चोला'-ये वही तो प्रेरणा है। इस वसन्त पञ्चमी के पावन त्योहार पर मेरी देशवासियों को बहुत-बहुत शुभकामनाएँ हैं।

मेरे प्यारे देशवासियो, 'मन की बात' में आकाशवाणी भी अपनी कल्पकता के साथ हमेशा नये रंग-रूप भरता रहता है। पिछले महीने से उन्होंने मेरी 'मन की बात' पूर्ण होने के तुरंत बाद प्रादेशिक भाषाओं में 'मन की बात' सुनाना शुरू किया है। इसको व्यापक स्वीकृति मिली है। दूर-दूर से लोग चिट्ठियाँ लिख रहे हैं। मैं आकाशवाणी को उनके इस स्वयं प्रेरणा से किए गए काम के लिये बहुत-बहुत अभिनन्दन करता हूँ। देशवासियो, मैं आपका भी बहुत अभिनन्दन करता हूँ। 'मन की बात' मुझे आपसे जुड़ने का एक बहुत बड़ा अवसर देती है। बहुत-बहुत शुभकामनाएँ। धन्यवाद।

यही तो धर्म है

किसी संत के पास एक युवक आया। उसने उनसे धर्म-ज्ञान देने की प्रार्थना की। संत ने कहा कि वह उनके साथ कुछ दिन रहे, फिर वे उसे धर्म का सार बताएँगे। युवक उनके आश्रम में रहने लगा। वह संत की हर बात मानता और उनकी सेवा करता। इस तरह कई दिन बीत गए। उसे समझ नहीं आ रहा था कि संत उसे धर्म के बारे में कब बताएँगे। युवक का धैर्य जवाब दे रहा था।

एक दिन उसने पूछ ही लिया, ''मुझे आये इतने दिन हो गये पर अब तक आपने मुझे धर्म का सार नहीं बताया। आखिर मैं कब तक प्रतीक्षा करूँ?'' संत ने हँसकर कहा, ''कैसी बात कर रहे हो। तुम जिस दिन से मेरे साथ रह रहे हो, उस दिन से मैं तुम्हें धर्म का सार बता रहा हूँ। पर तुम ध्यान नहीं दे रहे हो।''

युवक ने चौंक कर कहा, ''वो कैसे?'' संत बोले, ''जब तुम मेरे लिए पानी लाते हो तो मैं सदैव प्रेमपूर्वक उसे स्वीकार करता हूँ। तुम्हारे प्रति आभार भी प्रकट करता हूँ। जब-जब तुमने आदरपूर्वक प्रणाम किया, मैंने तुम्हारे साथ नम्रता का व्यवहार किया। यही तो धर्म है। जो हमारी दिनचर्या में झलकता है। धर्म कोई पुस्तकीय ज्ञान मात्र नहीं है। तुम मेरे और कार्यों पर गौर करो। मैं लोगों से किस प्रकार मिलता हूँ और किस तरह से उनकी सहायता करता हूँ।'' युवक संत का आशय समझ गया।

(साभार-राज.पत्रिका)

वसन्त पञ्चमी विशेष

...ताकि हमारी चेतना में परमानंद रूपी वसन्त उतर सके

❒ डॉ. रेणुका व्यास

आज प्रातःकाल अपनी गृह-बगिया में एक नव विकसित पुष्प को देखकर मेरा सौन्दर्यपूर्ण व अभिभूत मन अकस्मात ही गा उठा ''सखि बसन्त आया मन भाया।'' हाँ, मन को भाने वाले, जीवन में समरसता लाने वाले, प्रकृति नायिका को श्रृंगारित करने वाले, जीवन के उल्लास उत्सव को प्रकट करने वाले, सृजन के माध्यम से जीवन के गहन रहस्यों को प्रकट करने वाले ऋतुराज वसन्त का आगमन हो गया है।

प्रकृति में वसन्त- दरअसल भारत की जलवायु के अनुसार तथा भारत की मौसम सम्बन्धी मान्यताओं के आधार पर वर्ष की छह ऋतुओं में से वसन्त ऋतु को प्रथम एवं प्रधान माना गया है। 'हिन्दी शब्द सागर' (नागरी प्रचारिणी सभा, काशी) के अनुसार 'वसन्त के अन्तर्गत चैत्र तथा वैशाख के महीने माने गए है।'' वैसे हम वसन्त-पंचमी माघ मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को मनाते हैं, उसी के आस-पास से वसन्त की शुरुआत मानी जाती है। अगर हम अपने अनुभव से देखें तो हम पाते हैं कि पौष तथा माघ के दो महीने, सम्पूर्ण उत्तर भारत में तीखी ठंड से युक्त होते है। माघ मास के बीतने के साथ ही मौसम में कुछ बदलाव की आहट सुनाई देने लगती है। सूर्य-देवता की प्रतिदिन ऊष्मापूर्ण होती जाती रश्मियों से ऊष्मित हो प्रकृति नायिका अब अपने तन से झटककर कोहरे का दुशाला उठा फेंकती है। प्रकृति नायिका का यह साहस देख और सूर्य देवता की गरम होती जाती किरणों का आश्वासन पा, नदियों, पहाड़ों, मैदानों तथा वृक्षों पर जमी बर्फ पिघलने लगती है। शीत से काँपते-ठिठुरते वृक्ष, पौधे और घास बर्फ के पिघलने से मुस्कुरा उठते है। विविधवर्णी पुष्पों-पत्तों से भरे वृक्ष-पौधे अपनी गन्ध से वातावरण को सुगंधित तथा मदमस्त बनाने लगते हैं।

शीतल-मंद-सुगंधित वसन्ती बयार अपने मदमस्त करने वाले स्पर्श से सारी प्रकृति को अपने साथ उत्सव मनाने को तैयार कर लेती है। पक्षियों के कलरव से सारा परिवेश गुंजायमान हो उठता है। नीला आसमान, जिसमें सफेद बादलों के टुकड़े सफेद रुई के फोहों की तरह यत्र-तत्र फैले हों, नदियों तथा तालाबों के स्वच्छ शांत जल में कुछ ऐसे प्रतिबिम्बित होता है कि मन को छू लेता है। दूसरे शब्दों में कहें तो वसन्त प्रकृति में सृजनात्मक परिवर्तन का वह समय होता है जब शीत के कारण कांपती, ठिठुरती प्रकृति, सूर्य की ऊष्मा पाकर अपनी सारी जड़ता को दूर कर, अपने समस्त ऐश्वर्य तथा सारे सौन्दर्य के साथ प्रकट होती है। सच कहें तो वसंत प्रकृति का महोत्सव है। अगर हम गौर करें तो पाएँगे कि प्रकृति में वसन्त के प्राकट्य में तीन बातें मुख्य रूप से अन्तर्निहित हैं- 1. अन्तर्निहित संभावनाओं का विकास 2. सृजन 3. उत्सव

1. अन्तर्निहित संभावनाओं का विकास- शीत ऋतु के जाते ही वृक्ष-पौधे, मस्ती से झूमने लगते हैं, सुगन्ध फैलाने लगते हैं। पक्षी कलरव करने लगते हैं। नदियाँ बहने लगती है, आसमान अपनी पूरी असीमता के साथ प्रकट हो जाता है। अर्थात् शीत के कारण प्रकृति में जो कुछ भी सोया हुआ, दबा हुआ, ठहरा हुआ या ढका हुआ था, अब वसन्तु ऋतु के आगमन के साथ वह सब प्रकट हो जाता है, क्रियाशील हो जाता है, जाग्रत हो जाता है, खुल जाता है। सारी दबी, रुकी, ठहरी, ढकी संभावनाएँ प्रकट हो जाती हैं।

2. सृजन- पूर्ण विकास के साथ जो भी स्वाभाविक रूप से पैदा होता है वही सृजन है। ऐसा ही सृजन प्रेरणादायी तथा स्थाई होता है क्योंकि यह सृजन आपके स्वाभाविक विकास का परिणाम है। आपके अन्तस् का प्रस्फुटन है। इसमें कोई प्रयास नहीं, कोई दिखावा नहीं, कोई संयोजना नहीं, कोई प्रयोजन नहीं। वसन्त में पक्षियों का कलरव,वासन्ती हवा का मृदुल स्पर्श, पुष्पों की गन्ध, नदियों की कल-कल मन को छूते है, प्रेरणादायी बनते हैं; क्योंकि वे स्वाभाविक विकास का परिणाम हैं। आन्तरिक आनन्द की गूँज हैं।

3. उत्सव- अपने प्रति पूर्ण स्वीकार भाव, अपने होने के प्रति आनन्द भाव ही अन्ततः उत्सव का रूप धारण करता हैं।

पर क्या वसन्त सिर्फ एक प्राकृतिक घटना है? क्या मानव जीवन में भी वसन्त घटित होता है? क्या मानव चेतना के विकास क्रम में भी किसी वसन्त का प्राकट्य होता है? ये सभी गहन विचारणीय प्रश्न हैं, जो इस बार वसन्त के समय मेरी चेतना के समक्ष खड़े हो रहे हैं। मुझे अहसास हो रहा है कि मुझे इनका उत्तर ढूंढ़ना ही होगा। क्योंकि इनका उत्तर प्राप्त किए बिना प्रकृति में घटित होने वाला वसन्त मेरे लिए महज एक प्राकृतिक घटना, एक बाहरी घटना बन कर रह जाएगा। फिर प्रश्न उठना तो मानव चेतना के विकास के लिए अत्यंत शुभ समय होता है क्योंकि प्रश्नों का ताप ही तो वह प्रसव पीड़ा है जो समाधान रूपी सृजन करती है और यह सारी प्रक्रिया चेतना के विकास का अत्यंत गहन हिस्सा है।

मानव जीवन में वसन्त : युवावस्था- सच पूछिए तो वसन्त महज एक प्राकृतिक घटना नहीं है। वसन्त प्रतीक है पूर्ण विकास का। प्रकृति में तथा मानव जीवन में युवावस्था के रूप में वसन्त का प्राकट्य हमें प्रेरित करता है कि हमारी आत्मा में भी परिपूर्णता के फूल खिलते हैं। अगर सम्पूर्ण मानव जीवन को बाल्यावस्था, युवावस्था, प्रौढ़ावस्था तथा वृद्धावस्था जैसे चार खण्डों में बाँटा जाए तो कहा जा सकता है कि युवावस्था मानव जीवन में वसन्त का समय है क्योंकि इस समय मानव अपनी समस्त शारीरिक क्षमताओं तथा बौद्धिक संभावनाओं के विकास के परवान पर होता है। भरपूर शारीरिक बल एवं सौन्दर्य, तीव्र बौद्धिक क्षमता, असीम आकाश को भी अपनी बाहों में समेट लेने का जोश, चाँद-तारों को छू लेने की तमन्ना, पहाड़ों से भी टकरा जाने का साहस और मेहनत के बल पर दुनिया बदल देने का ज़ज्बा आदि मिलकर युवावस्था में मानव को असीम सौन्दर्य प्रदान करते हैं। इन्हीं अद्भुत गुणों तथा आकांक्षाओं भरा युवक अक्सर बड़े-बुजुर्गों की सीखों तथा अनुभवों को दरकिनार कर सिर्फ अपने आत्मबल के सहारे अपने लक्ष्य को पाने अकेला ही निकल पड़ता है। सफल-असफल होता हुआ, गिरता-संभालता हुआ, अपने अनुभवों से सीखता हुआ वह अपनी मंजिल, अपना लक्ष्य पा भी लेता है। यहाँ उसकी आकांक्षाओं का लक्ष्य धन, पद, प्रतिष्ठा, यश या कोई भी अन्य भौतिक उपलब्धि

हो सकती है। ऐसी युवावस्था में मानव की गरिमा ही निराली होती है। इस समय उसे महसूस होता है कि सारी कायनात उसकी मुट्ठी में है तथा वह जगत के शीर्ष पर है।

चेतना का वसन्त : आत्म साक्षात्कार– अगर प्रश्न पूछा जाए कि क्या भौतिक उपलब्धियाँ ही मानव जीवन का प्राप्य हैं? तो उत्तर होगा नहीं। भारतीय धर्मशास्त्र, भारतीय संस्कृति मानव को एक जन्म तक ही सीमित नहीं मानती। उनके अनुसार मानव–जीवन चेतना की विकास यात्रा का एक अहम पड़ाव है। जीव चौरासी लाख योनियों के बाद दुर्लभ मानव जीवन प्राप्त करता है। जीव की जड़ से चेतन तक की इस यात्रा में वह पाषाण खण्ड से लेकर पशु–पक्षी होता हुआ मानव बनकर बुद्धत्व के अनुभव से परिपूर्णता अनुभव करने की यात्रा करता है। दरअसल यही है पिण्ड से ब्रह्माण्ड होने की यात्रा। कण से असीम होने की यात्रा। जिसे भारतीय आर्ष ग्रंथों में आत्म साक्षात्कार कहा है।

यह अच्छा है कि मानव मेहनत तथा साहस के बल पर धन, प्रतिष्ठा, पद, यश प्राप्त करने का प्रयास करे, जीवन की समस्त भौतिक उपलब्धियों का समग्रता से उपभोग करे पर ध्यान रखने योग्य बात यह है कि ये सभी भौतिक उपलब्धियाँ ही मानव जीवन का साध्य नहीं हैं। मानव जीवन का साध्य है ''चेतना के विकास के आत्यंतिक शिखर को छू लेना'' उस परम तृप्ति, उस परम आनन्द को पा लेना, उस परिपूर्णता को अनुभव कर लेना जो मानव को इस पिण्ड (शरीर) में ही ब्रह्माण्ड (परमात्मा) का अनुभव करवाती है। जिस अनुभव को पा लेने के बाद समस्त आकांक्षाएँ परितृप्त हो जाती हैं, मृत्यु का भय मिट जाता है। अगर ऐसा किसी मानव के जीवन में घटता है तो यह ब्रह्माण्ड की अतुलनीय घटना है। जो कभी कृष्ण, महावीर, बुद्ध, गोरख, शंकराचार्य, कबीर, नानक, दादू, मीरा और रामकृष्ण परमहंस जैसे अनेकानेक महापुरुषों के जीवन में घटी। आप चित्र में इन महापुरुषों का चेहरा देखिए, इनकी चाल–ढाल देखिए, इनकी भाव–भंगिमाएँ देखिए। आपको इनकी एक झलक मात्र देखने से अहसास होगा कि इनकी आँखें किसी दूसरे ही लोक के आलोक से प्रकाशित हैं। हजारों सैकड़ों वर्षों बाद भी उनके शब्दों, उनकी वाणी में आपको एक अलग ही जगत की सुगन्ध अनुभव होगी। यह सुगन्ध है उस वसन्त की जो इनकी चेतना ने अनुभव किया। इनके मुखमण्डल पर छाई असीम शांति तथा असीम करुणा का भाव द्योतक है कि इन्होंने इस जीवन में जो भी पाने योग्य है उसे पा लिया। इनके जीवन में परिपूर्णता के फूल खिल गए।

परमात्मा ने संभावनाओं के जो बीज प्राणी मात्र में रख छोड़े हैं। ज्ञान के सूर्य की ऊष्मा पाकर इनके अन्दर के बीज पल्लवित और पुष्पित हो उठे हैं। इनकी चेतना चेतन हुई और इन्होंने आत्म साक्षात्कार रूपी वसन्त का अनुभव अपने जीवन में कर लिया।

जहाँ तक वसन्त के दूसरे गुण सृजन की बात है तो कहा जा सकता है कि पूर्ण कृतार्थ मानवों के मुख से जो भी निकलता है वही वेद बन जाता है। वही उपनिषद का रूप धारण कर लेता है। इन्हीं की वाणी से गीता उपजती है, साखी, गुरुवाणी, सबद का सृजन होता है। इन महान् आत्माओं की भाव–भंगिमाओं से ही गीत–संगीत और नृत्य इत्यादि कलाओं का जन्म होता है। इन महापुरुषों का तो मौन भी सृजनात्मक होता है। यही कारण है कि इनकी वाणी तथा इनका मौन समय–काल–स्थान की सीमाओं को चीरता हुआ आज भी सहृदयों के हृदयों को स्पंदित कर देता है। भटके हुए मनुष्यों का मार्गदर्शन करता है। उन्हें प्रेरणा प्रदान करता है। इन वासंती चेतनाओं से जुड़ कर आज भी हम धन्यता का अनुभव करते हैं। हमारे जीवन में भी आनन्द तथा उत्सव घटित होता है। इन महापुरुषों का जीवन हमें भी प्रेरित करता है कि हम भी अपनी अन्तर्निहित संभावनाओं का विकास करें, अपने जीवन का वसन्त खोजें। परम तृप्ति, परम धन्यता के फूल हमारे भी जीवन में खिलें। परम मौन की गूँज हमारे भी भीतर पैदा हो। हमारी जीवन–वीणा से भी परमात्मा का गीत निसृत हो। अन्तर के उत्सव से भर कर हमारे पग भी मीरा की तरह नाच उठें। हम भी अपने अन्दर बैठे परमात्मा रूपी वसन्त को पुकार कर कह सकें:–

असतो मा सद्गमय।
तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्मा अमृतं गमय।

तो आइए हे, ऋतुराज वसन्त! अपने चामत्कारिक स्पर्श से प्रकृति को तथा हमारे जीवन की समस्त अन्तर्निहित संभावनाओं को जाग्रत कीजिए ताकि हमारी चेतना में परमानंद रूपी फूल खिल सके और हमारी चेतना में परमानन्द रूपी वसंत उतर सके।

व्याख्याता
रा.बा.उ.मा.वि. लक्ष्मीनाथ घाटी, बीकानेर
मो. 9414035688

इस माह का गीत

वर दे, वीणा वादिनि वर दे

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

–: रचित :–

वर दे, वीणा वादिनि वर दे!
प्रिय स्वतंत्र-रव अमृत-मंत्र नव
भारत में भर दे!

काट अंध-उर के बंधन-स्तर
बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर;
कलुष-भेद-तम हर प्रकाश भर
जगमग जग कर दे!

नव गति, नव लय, ताल-छंद नव
नवल कंठ, नव जलद-मन्द्ररव;
नव नभ के नव विहग-वृंद को
नव पर, नव स्वर दे!

वर दे, वीणा वादिनि वर दे।

प्रयास-2017

राजकीय विद्यालयों के बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु
एक अभिनव पहल

❐ सुभाष माचरा

राजकीय विद्यालयों के बोर्ड परीक्षा परिणाम में मात्रात्मक एवं गुणात्मक सुधार हेतु विभागीय संकल्प का परिचायक है : 'प्रयास-2017'। निदेशक, माध्यमिक शिक्षा श्री बी.एल. स्वर्णकार द्वारा गणतंत्र दिवस के अवसर पर प्रदेश के समस्त 13527 राजकीय माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक विद्यालयों के संस्था प्रधानों को सम्बोधित अर्द्धशासकीय पत्र में समस्त मण्डल उपनिदेशकों, जिला शिक्षा अधिकारियों तथा शिक्षकों से परीक्षा परिणाम उन्नयन के इस शैक्षिक यज्ञ में सामूहिक प्रयत्न रूपी पूर्णाहुति का पुरजोर आह्वान इसी संकल्प की भावाभिव्यक्ति है। कुछ इन्हीं भावों, विश्वास से प्रेरित होकर:-

वक्त बदला, तो हर लम्हे के अन्दाज बदले,
सुबह बेगाना हुई और रात के मंजर बदले ।
खुद को बदल लेना तो बड़ी बात नहीं है भाई,
बात तब है, गर तूं इस दौर के हालात बदले।।

विभाग द्वारा बोर्ड परीक्षा परिणामों के विशद् विश्लेषण एवं गहन समीक्षा उपरान्त यह तथ्य उभर कर सामने आया कि राजकीय विद्यालयों में कक्षा-10 के परीक्षा परिणाम के संख्यात्मक व गुणात्मक रूप से न्यून रहने के मूल में गणित, अंग्रेजी व विज्ञान विषयों में विद्यार्थियों का कमजोर प्रदर्शन है। उक्त कमजोर प्रदर्शन की जड़ों को तलाश करने के उपक्रम में दिनांक 10 जनवरी 2017 को राज्य के समस्त 9 मण्डल मुख्यालयों तथा बारां व झालावाड जिला मुख्यालयों पर स्थित D.L.S.R. में प्रदेश के समस्त मण्डल उपनिदेशकों तथा जिला शिक्षा अधिकारियों की बैठक वी.सी. के मार्फत निदेशक महोदय द्वारा आयोजित कर पारस्परिक संवाद का दौर चलाया गया। उक्त संवाद में इन तीनों विषयों (गणित, अंग्रेजी व विज्ञान) में उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम (जिनमें लक्षित विषयों में 75 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थियों द्वारा प्रथम श्रेणी अंक प्राप्त किए गए) प्रदर्शित करने वाले राजकीय विद्यालयों के विषयाध्यापकों के साथ-साथ न्यून परीक्षा परिणाम (25 प्रतिशत से भी कम) वाले विषयाध्यापकों को शामिल करते हुए स्वयं निदेशक महोदय द्वारा इन विषयों में उत्कृष्ट परिणाम देने वाले शिक्षकों की शिक्षण विधा की खूबियों तथा कमजोर परीक्षा परिणाम वाले शिक्षकों द्वारा अनुभव की गई व्यावहारिक कठिनाइयों की पहचान हेतु पारस्परिक वार्ताओं के दौर द्वारा गम्भीर प्रयास किया गया। उक्त बैठक में पारस्परिक विमर्श पश्चात् लिए गए निर्णय के तहत जिला मुख्यालयों पर तीनों लक्षित विषयों के उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम प्रदर्शित करने वाले चिह्नित किए गए शिक्षकों, जिन्हें विभाग द्वारा MENTOR (मार्गदर्शक) शिक्षक के रूप में नामांकित किया गया, की विषयवार कार्यशालाओं का आयोजन कर परीक्षोपयोगी विशिष्ट शैक्षिक/अध्ययन सामग्री का निर्माण करवाया गया। तत्पश्चात् इस शैक्षिक सामग्री का जीवंत प्रस्तुतीकरण सम्बन्धित शिक्षकों द्वारा विषयवार आयोजित राज्य स्तरीय कार्यशालाओं में किया गया। राज्य स्तरीय कार्यशालाओं में उपस्थित विषय विशेषज्ञों द्वारा गहन विश्लेषणोपरान्त परीक्षोपयोगी अध्ययन सामग्री को अंतिम रूप दिया गया, जो विषय विशेष के गत वर्षों के बोर्ड प्रश्न पत्रों तथा बोर्ड पैटर्न के आधार पर तैयार की जाने के कारण प्रत्येक स्तर के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है। इन कार्यशालाओं में MENTOR शिक्षकों के उत्प्रेरण हेतु निदेशक महोदय की उपस्थिति में विचारोत्तेजक (ब्रेन स्टोर्मिंग) सेशन चलाए गए, जिसमें कई अछूते नवाचार उभरकर सामने आए, जिन्हें संग्रहित कर निर्मित शैक्षिक सामग्री के साथ प्रत्येक विद्यालय तथा प्रत्येक विद्यार्थी तक पहुँचाए जाने का लक्ष्य 'प्रयास-2017' में अन्तर्निहित है। इस दौरान गणित तथा विज्ञान विषय के कई कठिन तथा याद रखने में मुश्किल माने जाने वाले सूत्रों तथा सम्प्रत्ययों को समझने तथा आसानी से स्मरण रखने हेतु नाना प्रकार की ट्रिक्स (तरकीबें) तथा तरीके MENTOR शिक्षकों द्वारा सुझाए गए, जिन्हें देख-सुन कर स्वर्गीय राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर की ये पंक्तियाँ बरबस स्मरण हो आई :-

है कौन विघ्न ऐसा जग में,
टिक सके आदमी के मग में।
खम ठोक ठेलता है जब नर,
पर्वत के जाते पाँव उखड़।।
मानव जब जोर लगाता है,
पत्थर पानी बन जाता है।
गुण बड़े एक से एक प्रखर,
हैं छिपे मानवों के भीतर।।
मेहन्दी में जैसे लाली हो,
वर्तिका बीच उजियाली हो।
बत्ती जो नहीं जलाता है,
रोशनी नहीं वो पाता है।।

कार्यशालाओं में संभागी शिक्षकों के समक्ष उद्देश्य रखा कि इन अपेक्षाकृत कठिन माने जाने वाले विषयों की विषयवस्तु से सम्बन्धित सरलतम तरीके को विद्यार्थियों तक पहुँचाये जाए और इस प्रकार अर्जित ज्ञान भी विद्यार्थी के मस्तिष्क में स्थाई रूप से अंकित हो जाएँ। अंग्रेजी विषय की मूलभूत कठिनाई दूर करने हेतु विद्यार्थियों को Tense (काल) के सम्बन्ध में उनके Concept Clear करने हेतु सरलतम विधि से समस्त Tenses को समझाने तथा इसी प्रकार प्रार्थना पत्र तथा पत्र लेखन इत्यादि प्रश्नों को हल करने हेतु एक सामान्यीकृत Format बनाकर समझाने का बखूबी प्रयास किया गया है। इन कार्यशालाओं में निर्मित अध्ययन सामग्री मूल रूप से 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1986' के अनुवर्तन में जारी 'राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005' के नीति निर्देशक सिद्धान्त 'बाल केन्द्रित शिक्षण विधा' तथा 'गतिविधि आधारित शिक्षण' को केन्द्र में रखकर बनी है, जिसमें परम्परागत शिक्षण विधियों के स्थान पर नवीन आनंददायी विधियों का सहारा लिया गया है, जो निश्चय ही आसानी से छात्र के मस्तिष्क पटल पर स्थाई होने का सामर्थ्य रखती है ।

उपर्युक्तानुसार निर्मित अध्ययन/शैक्षिक सामग्री विभाग की आधिकारिक वेब-साईट पर उपलब्ध करवाई गई है तथा शाला दर्पण के माध्यम से समस्त विद्यालयों तक इनकी सॉफ्ट

कॉपी भी पहुँचाई जा चुकी है। प्रत्येक विद्यार्थी तक इस सामग्री की पहुँच तथा लाभ सुनिश्चित किए जाने हेतु विभागीय स्तर पर समस्त जिला शिक्षा अधिकारियों तथा मण्डल उपनिदेशकों को पाबन्द किया गया है। जिला तथा मण्डल कार्यालयों के समस्त शिक्षाधिकारी बोर्ड परीक्षाओं के प्रारम्भ से पूर्व तक अनवरत परिवीक्षण द्वारा इस कार्यक्रम का पर्यवेक्षण तथा प्रबोधन करेंगे। हालांकि यह शैक्षिक सामग्री समस्त स्तर के विद्यार्थियों के लिए बहूपयोगी है, परन्तु न्यून परीक्षा परिणाम वाले विद्यालयों तथा कमजोर अधिगम स्तर वाले विद्यार्थियों के लिए 'रामबाण नुस्खा है।' इस कार्य योजना के तहत समस्त जिला शिक्षा अधिकारियों को उनके क्षेत्राधिकार में विगत वर्ष न्यून परीक्षा परिणाम वाले विद्यालयों की सूची भिजवाई गई है। जिला शिक्षा अधिकारियों को स्वयं के स्तर पर इस कार्य योजना का क्रियान्वयन इन विद्यालयों में किए जाने हेतु दायित्वबद्ध किया गया है, जिसके सकारात्मक परिणाम अपेक्षित है।

इस कार्य योजना को परिणामोन्मुखी बनाए जाने हेतु माह फरवरी के अन्त में समस्त विद्यालयों में कक्षा-10 के विद्यार्थियों हेतु बोर्ड-पैटर्न पर प्री-बोर्ड परीक्षा के आयोजन का प्रावधान रखा गया है। उक्त परीक्षा के परिणाम के सम्बन्ध में सम्बन्धित विषयाध्यापक द्वारा विद्यार्थियों से व्यक्तिश: बातचीत कर उसके Weak Points के आधार पर विद्यार्थियों को विद्यालय में बुलाया जाकर माह मार्च के प्रथम सप्ताह में 'सुपरवाइज्ड स्टडी' (संबंधित विषयाध्यापक द्वारा सम्मुख बैठाकर) करवाई जाएगी, जो विद्यार्थियों की विशिष्ट कठिनाइयों का निराकरण करने में अवश्य सफल सिद्ध होगी।

तो आओ! हम सब शिक्षक, संस्थाप्रधान तथा शिक्षाधिकारी गण, **प्रयास-2017** के रूप में विभाग की इस अनोखी और अछूती पहल को सफलता के सोपान तक पहुँचाने का संकल्प लें तथा सम्पूर्ण प्रदेश में ज्ञान तथा शिक्षा के आलोक को प्रकीर्णित करने में अपना यथायोग्य अवदान दें। इसी विश्वास के साथ...

हर दौर के मल्लाह याद करेंगे,
साहिल पे हम कुछ ऐसे निशां छोडेंगे।

शैक्षिक प्रकोष्ठ अधिकारी
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
मो. 9414000470

परिशिष्ट

प्रयास

प्रयास

प्रयास

प्रयास-2017 की पूर्ण सफलता हेतु संस्थाप्रधानों, शिक्षकों व शिक्षा अधिकारियों ने व्यवस्थित प्रकार से योजनाएँ बनाई ही हैं। इसी की निरंतरता में शिक्षण को बोधगम्य व प्रभावी बनाने हेतु विषय विशेषज्ञों द्वारा अपेक्षाकृत कठिन समझे जाने वाले विषयों यथा अंग्रेजी, विज्ञान (भौतिक, जीव, रसायन) एवं गणित विषय के विषयवस्तु/प्रकरणवार कतिपय सूत्र तैयार कर प्रस्तुत किये गये हैं। उक्त सूत्र कक्षा 10 के विद्यार्थियों के परीक्षा परिणाम उन्नयन एवं शिक्षकों हेतु बहूपयोगी व कारगर प्रतीत होने के कारण उनका संकलन कर यहाँ प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

योग्य शिक्षकवृन्द से अपेक्षा है कि उक्त सूत्रों का अभ्यास कराकर बोर्ड परीक्षा-2017 हेतु विद्यार्थियों का योग्य मार्गदर्शन कर उन्हें तैयार कर सकें ताकि बोर्ड परीक्षा-2017 का उत्कृष्ट परिणाम विद्यार्थी हासिल कर सकें।

संस्थाप्रधानों से अपेक्षा है कि प्रयास-2017 के जारी दिशा-निर्देशानुसार अपने-अपने विद्यालयों में प्री बोर्ड परीक्षा एवं उपचारात्मक शिक्षण/अभ्यास की कार्ययोजना बनाकर उसकी क्रियान्विती सुनिश्चित करें।

अन्य शिक्षाधिकारियों से अपने कार्य क्षेत्र के विद्यालयों के सघन पर्यवेक्षण एवं निरीक्षण के माध्यम से बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु सक्रिय भागीदारी निभाने का आग्रह है।

इसी विश्वास के साथ विषय विशेषज्ञों द्वारा तैयार पाठ सर्वोपयोगार्थ प्रस्तुत है।

-वरिष्ठ संपादक

प्रयास-2017

अपठित गद्यांश (Unseen Passage)

❒ डॉ. रोहताश पचार

माध्यमिक परीक्षा में अंग्रेजी विषय में अर्थग्रहण (Comprehension) क्षमता के मूल्यांकन के लिए दो अपठित गद्यांशों पर आधारित प्रश्न पूछे जाएँगे जो 14 अंक के होंगे। इनमें से चार अंक परीक्षार्थी का शब्द ज्ञान (Vocabulary) परखने के लिए निर्धारित हैं। एक गद्यांश तथ्यात्मक (Factual) तथा दूसरा साहित्यिक (Literary) होगा। प्रत्येक गद्यांश में से चार-पाँच प्रश्न पूछे जा सकते हैं। परीक्षा में अंक अर्जित करने की दृष्टि से यह एक महत्त्वपूर्ण भाग है, जिसमें विद्यार्थी अपनी अर्थग्रहण क्षमता और उत्तरलेखन में कुशलता के आधार पर बिना कुछ रटे अधिक अंक अर्जित कर सकता है। परीक्षार्थी यदि उत्तर देने के कौशल में पारंगत हो तो यह लेखन (Writing) और सड़क सुरक्षा (Road Safety) वाले भाग सहित सम्पूर्ण प्रश्न पत्र को हल करने में परीक्षार्थी के लिए उपयोगी होगा। बहुधा छात्र गद्यांश आधारित प्रश्नों का उत्तर देते वक़्त गद्यांश में प्रश्न से मिलती जुलती पंक्ति पहचानकर ज्यों का त्यों उत्तर के स्थान पर लिख देते हैं जो पर्याप्त नहीं है। प्रश्नों का उत्तर प्रत्यक्षतः वर्णनात्मक (Descriptive) होना आवश्यक नहीं है। प्रश्न दो प्रकार के हो सकते हैं-Descriptive और Inferential. वर्णनात्मक (Descriptive) प्रश्नों का उत्तर प्रश्न की भाषा में गद्यांश में आधारित जानकारी के आधार पर सीधे दिया जा सकता है; लेकिन अर्थग्रहण के साथ साथ निर्णय क्षमता की परख के लिए पूछे जाने वाले आनुमानिक (Inferential) प्रश्नों का उत्तर प्रत्यक्षतः गद्यांश में मौजूद नहीं होता है। ऐसे प्रश्नों का उत्तर देने के लिए विद्यार्थी को अपनी निर्णय/तर्क क्षमता का उपयोग करना होता है। उदाहरणतः गद्यांश में एक स्टेशन से क्रमशः 12:10 बजे, 12:30 बजे और 12:50 बजे गाड़ियों के रवानगी के समय का उल्लेख किया गया है और प्रश्न में यह पूछा जाए कि 12 बजे से 1 बजे के मध्य कुल कितनी गाड़ियाँ चलती हैं? अथवा यह पूछा जाए कि- इन गाड़ियों के रवानगी समय में परस्पर कितना अंतराल है? तो इन प्रश्नों का उत्तर गद्यांश में दिए गए शब्दों से नक़ल करके दिया जाना संभव नहीं है। यहाँ स्वयं परीक्षार्थी की भाषा में उसकी गणना, अनुमान, विवेक और निर्णय के आधार पर उत्तर अपेक्षित होता है।

पठित-अपठित गद्यांश आधारित प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित बातें ध्यातव्य हैं-

- दिए गए गद्यांश को सावधानीपूर्वक दो बार पढ़ें तथा उसके केन्द्रीय भाव और महत्त्वपूर्ण तथ्यों और विचारों की पहचान कर लें।
- जिन शब्दों/वाक्यों के अर्थ समझने में कठिनाई हो उनका अर्थ आसपास की पंक्तियों के सन्दर्भ (Context) से समझने का प्रयास करें।
- गद्यांश आधारित प्रश्नों का उत्तर देते वक़्त परीक्षार्थी अपने विचारों को प्रश्नों के उत्तर में ओवरलैप न करें।
- गद्यांश में दी गई जानकारी के आधार पर ही प्रश्नों का उत्तर दें।
- प्रश्न जिस Tense में है, उसी Tense में उत्तर दें। उत्तर देते वक़्त कर्त्ता (Subject) तथा कर्म (Object) के सर्वनामों (Pronouns), सहायक क्रियाओं (Helping verbs) तथा क्रियाविशेषण (Adverbs) में आवश्यक परिवर्तन करें।
- व्याकरण की दृष्टि से भी अंग्रेजी में प्रश्न दो तरह के होते हैं। प्रथमतः वे प्रश्न जो सहायक क्रिया (Helping Verbs) से शुरू होते हैं और जिनका उत्तर Yes अथवा No से शुरू किया जा सकता है तथा द्वितीयतः जो प्रश्न Wh-words से शुरू होते हैं। इस आधार पर इन प्रश्नों को Simple Interrogatives और Wh-Interrogatives में बाँटा जा सकता है।

Simple Interrogative Questions

इन प्रश्नों की शुरुआत सहायक क्रिया से होती है और उत्तर 'हाँ' या 'नहीं' में दिया जा सकता है। उदाहरण के लिए- प्रश्न- Are You playing there? उत्तर-Yes, I'm अथवा Yes, I am Playing here.

ऐसे प्रश्नों का उत्तर देते वक़्त कर्त्ता और क्रियाविशेषण में प्रश्नानुसार परिवर्तन करना आवश्यक होता है। उपर्युक्त उदाहरण में भी You के स्थान पर I और There के स्थान पर Here लिखकर परिवर्तन किया गया है।

Wh-Interrogative Questions

इन प्रश्नों की शुरुआत w या h से शुरू होने वाले प्रश्नसूचक शब्द से होती है। प्रत्येक Wh-word का अर्थ एवं अपेक्षित उत्तर की प्रकृति भिन्न-भिन्न होती है। परीक्षार्थी के लिए इसे समझना बहुत आवश्यक होता है। सार रूप में इसे निम्नवत समझा जा सकता है-

1. Who (कौन/किसने)- इसके उत्तर में कोई व्यक्ति (Person) होगा। यदि सर्वनाम का उपयोग किया जाता है तो यह कर्त्ता के रूप (Subjective form) में होगा।
2. Whom (किसे/किसको/किसका/किसकी)- इसके उत्तर में भी कोई व्यक्ति (Person) होगा। यदि सर्वनाम का उपयोग किया जाता है तो यह कर्म के रूप (Objective form) में होगा।
3. Whose (किसका/किसकी/किसके)- इसके उत्तर में किसी व्यक्ति का सम्बन्ध बताया जाएगा। संबंधसूचक सर्वनाम (Possessive form) का उपयोग किया जाएगा।
4. When (कब)- इसके उत्तर में समय (Time) बताया जाएगा।
5. Where (कहाँ)- इसके उत्तर में स्थान (Place) बताया जाएगा।
6. Which (कौनसा/कौनसी)- इसके उत्तर में व्यक्ति, वस्तु या जीव के उपलब्ध विकल्पों में से एक उत्तर दिया जाएगा।
7. Why (क्यों/किसलिए)- इस प्रश्न के उत्तर में कारण बताना होता है। उत्तर में because, since, so, so that, as, for

इत्यादि शब्दों का प्रयोग करना होता है।

8. What (क्या/कौनसी/कौनसा)- वस्तु या विचार के बारे में जानना अपेक्षित होता है। उत्तर में संज्ञा पद (Noun) का उपयोग Subjective या Objective form में कर सकते हैं।
9. What made/makes (क्यों के अर्थ में या कारण जानने के लिए)- 'क्यों (why)' की तरह ही उत्तर दिया जाता है।
10. How(कैसे)- इसमें तरीका (Manner/ method) या हालात जानना अपेक्षित होता है।
11. How many (कितने-संख्या/गिनती)- इसमें संख्या पूछी जाती है। उत्तर में Countable noun का प्रयोग करेंगे।
12. How much (कितना/कितनी-मात्रा)- इसमें मात्रा (Quantity) पूछी जाती है। इसका उत्तर सदैव Uncountable noun होता है।
13. How far (कितनी दूर)- दिए गए बिन्दुओं के मध्य दूरी बताता है।
14. How long(कब से-समयावधि)- इसका उत्तर समयावधि (Duration) होता है।
15. How often (कितनी बार-frequency)- इसके उत्तर में किसी कार्य (action) की आवृत्ति (frequency) बताई जाती है।

Wh-words के अर्थ का ज्ञान होने पर परीक्षार्थी इस तरह के प्रश्नों का सही उत्तर देकर परीक्षा में अधिकाधिक अंक अर्जित कर सकते हैं। शब्द-ज्ञान (vocabulary) से जुड़े प्रश्नों के लिए गद्यांश में दिए गए पर्याय/समानार्थी/ विपरीतार्थी शब्दों (Synonyms/antonyms) को लिखें। ऐसे प्रश्न अर्थग्रहण क्षमता और तर्क क्षमता के परीक्षण के लिए पूछे जाते हैं।

प्रश्न का उत्तर देने का सही कौशल परीक्षार्थियों को न केवल comprehension प्रश्नों को हल करने में बल्कि प्रश्न पत्र के अन्य भागों में भी उपयोगी और प्राप्तांकों में वृद्धि में सहायक है।

आवासीय गृहपति
सादुल स्पोर्ट्स स्कूल, बीकानेर
मो. 9414605309

Parts of Speech

❐ **Dr. Ram Gopal Sharma**

NOUN

A noun is a name word representing directly to the mind an object, substance, or idea.

Nouns are classified as follows:--

1. Proper- Neelam, Bikaner
2. Common- girl, city
3. Collective-group class, army, a bunch of flowers, a pair of shoes,
4. Material -gold, water,
5. Abstract -concept, honesty, love

A. Proper Noun
B. Countable-common/collective
C. Uncountable- material/abstract

A proper noun is a name applied to a particular object, whether person, place, or thing.

PRONOUN

Pronoun is used in place of Noun/Noun Phrase /Noun Clause

- There was **a king**. **He** was kind.
- **What you say** is correct. **It** indicates a truth.
- **Ramesh** is sincere. **He** works hard.

1. Personal-
- I/we- speaker (I person)
- You-listener (II person)
- He/she/it/they-others (III person)

2. Impersonal - It, they, them
3. Possessive- mine, ours, yours, his, hers, theirs, its

This book is mine/ours/yours/his/ hers/theirs (Pro)
This is **my** book. (adj)
He is a friend of **mine**.
Mine is a big house.

4. Reflexive/Emphatic

Myself, ourselves, yourself, himself, herself, themselves

- I do my work **myself**. (Ref)
- I **myself** do my work. (Emp)

5. Demonstrative- this, that, these, those
- **This** is a pen.(pro)
- **This** pen is mine.(adj/det)

6. Distributive- each, every, either, neither
- **Each** of them is wise. (pro)
- **Each** boy has a book. (adj/det)

7. Reciprocal Pronoun-each other(2), one another (2+)
- Rekha and Madhuri helped **each other**.
- Rakesh, Mahesh and Suresh helped **one another**.

8. Relative pronoun-(Noun) who, whom, whose, which, that, where...
- The teacher **who** teaches us is boring.
- The boy **whom** I helped is sincere.
- The boy **whose** book I borrowed is sincere.
- The house **where** I live is big.
- The school **which** he built is big.
- This is the house **that** Jake built.
- He asked me **who** taught you.
- The boy **whom** I helped is sincere.
- The boy **whose** car I took is my student.
- The city **where** I live is beautiful.
- The pen **which/that** I bought is costly.

9. Interrogative- what, who, whom..
- **What** is your name?
- **Who** is your teacher?

10. Indefinite
- **One** should do one's duty.
- **Some** are present.(pro)
- **All** is well.

11. Definite
- **One** is present.

ADJECTIVE

1. Adjective of Quality-good, bad, beautiful
- Attributive use-He is a **good** boy.
- Predicative Use- The boy is **good**.

2. Adjective of Quantity-(how much) much, some, little All the water...some water (before uncountable noun)
3. Adjective of Number- Definite (cardinal-1,2,3… ordinal…first, second…)
- **Two** boys are standing outside.
- I study in **twelfth** class.
- The **first two** books are interesting. (ord-card) Indefinite
- Some, many, few, all, several, various…(before countable)

4. Distributive-each, every, either, neither…
- **Each** boy has a book.

5. Possessive-my, our, your, his, her, their…
- **My** book is interesting.

6. Demonstrative---this, that, these, those…
- **This** boy is sincere.

7. Interrogative
- **Which** car is yours?

8. Emphasizing- same, very, own
- This is the **very** book I wanted.
- This is the **same** book.
- This is my **own** house.

9. Proper Adjective –
- **Indian** soldiers are brave.

10. Participle Adjective-(V3..V+ing)
- An **interesting** story
- The story is **interesting**.
- A **learned** person An **educated** man

(Attributive/ Predicative use)
- An **interesting** story was written by me. (A)
- The story is **interesting**. (P)
- A **good** boy is always sincere.

(G r a d a b l e / n o n - g r a d a b l e Adjective)

Gradable-degree (Wise, wiser, wisest)

Dead (Non-gradable)
- He is criminal.
- Unique, superior, extreme

ADVERB

(tells something about adj/verb/adv)
- He is **very** handsome.
- He runs **slowly**.

(qualifies a verb)
- He runs **very** fast. (qualifies an adverb)
- You are **very** intelligent. ('Very' qualifies the adjective - 'Very' is an adverb.

1. Adverb of time (when?)

Still, yet, before, after, late, soon, then, today, tomorrow, daily, just, now, often
- She will come **tomorrow.**
- I go for a walk **daily**.
- He came **before**. (adv)
- He came **before** me. (Prep)
- He had come before I reached. (Conj)
- 'Before' can be adjective, adverb or preposition. (Noun)

(Prep/adv ph/prep ph)
- He came before I reached.(Conj)
- **Before** is an adjective. (N)
- **I** is a pronoun. It is one of few words having one letter.

2. Adverb of place- (where?) here, there, up, down, in, out, everywhere
- He lives **here**.

3. Adverb of manner (how?) nicely, slowly, quickly, friendly, politely
- You speak **politely**.

4. Adverb of frequency- (How often?) twice, once, often, rarely, daily, never, ever, seldom I went there twice.
- He is **friendly**. (Adj.)
- He behaves **friendly**. (Adv.)

5. Adverb of Degree-(At what extent?) very, too, extremely, rather, fairly, almost, nearly, just, enough, hardly, It is **very** hot.
- It is **extremely** hot.
- It is **rather** hot.
- It is **fairly** hot.
- It is **too** hot.

6. Adverb of reason/cause-therefore, hence, so, because
- She invited me. I, therefore, went there.

7. Adv of Negation/ Affirmation-no, not, never, surely, certainly, definitely, yes
- **No,** I can't help you.(neg)
- **Yes,** you are right.(Aff)
- Surely, certainly

8. Interrogative Adv-when, why, how, where
- **When** will you come?

9. Sentence Adv-
- **Surely,** I will come.

VERB

Verb -shows action or state
- Finite Verb-agrees with its subject
- I **walk**.
- He **walks**.
- I **can** walk.

Non Finite is not affected by its subject.

1. Infinitive
- To Infinitive- I want to go.
- Bare Infinitive-I can walk.
- Perfect Infinitive-

I seem to have lost my book.

2. Participle
- Present Participle- I am going.
- Past Participle- I am tired.
- Prefect Participle

Having had my food, I went to bed.

3. Gerund- verbal noun
- Teaching is an art.
- I like teaching.
- He is fond of Teaching.

'To' Infinitive

1. To say is easy.
2. It is easy to say.
3. I want to play football.
4. I want him to play.
5. Mangoes are good to eat.
6. I have a book to read.
7. I am to help him.
8. I have to help him.
9. The train is about to come.
10. He did nothing but laugh.
11. He is too weak to pass.
12. He is intelligent enough to pass.
13. Tell me what to do.
14. I don't know what to do.
15. Do you know how to do it?
16. We seem to have lost it. (perfective)

Infinitive 'without to'
- Modals I can **solve** it easily.

(Ought to/used to)
- Do/does/did+v1
- I didn't **do** it.
- bid, let, make, see, hear….
- He bade me **leave** at once.
- I must **bid** you farewell.
- She made me **work** hard.
- Let me **go**.
- I saw him **go**.
- I heard him **sing**.
- Phrases like would rather, had better..
- She did nothing but **laugh**.

Perfect Infinitive

I seem to **have lost** my book.

= It seems that I have lost my book.

Participle (V1+ing)
- I saw him **crossing** the road.
- I saw him **cross** the road.
- I am **playing**.
- He is **playing**.
- They are **playing**.
- It **being** a hot day, we remained in our home.
- **Seeing** the policeman, the thief began to run.
- I saw the boys **playing**.

Past Participle (V3)
- I have **done** it.
- He has **done** it.
- They had **done** it.

- I am surprised/ **tired**.
- I saw a **fallen** tree. (I saw a falling tree.)

Perfect Participle (having+V3)

- **Having finished** my work, I went to bed.

Gerund (Verbal Noun) V1+ing

- **Teaching** is my hobby.
- I like **teaching**.
- My hobby is **teaching**.
- I like your **teaching**.
- I am fond of **dancing**.

He is teaching. (Participle)

- I love **teaching**.
- **Walking** is good for health.
- He stopped **smoking**.
- He stopped to **smoke**.
- I am fond of **swimming**.
- Our duty is teaching.
- No smoking.
- I am used to smoking.
- I used to smoke.

Marginal modal- need, dare, use

- I **need** your help. (MV)
- I don't **need** to go there. (MV)
- **Need** you go there? (modal)
- Anomalous Finite (24)

Primary Auxiliaries

- Be-is, am, are, was, were
- Have-has, have, had
- Do- do, does, did-11

Modal Auxiliaries

Can, could, will, would, shall, should, may, might, must, need, dare, ought to, used to.....13

•Auxiliary/ Lexical verb

- I **don**'t play. (Aux)
- I **do** it. (Lex)
- I **am** a teacher. (Lex)
- I **am** teaching. (Aux)
- I **have** a car. (Lex)
- I **have** bought a car. (Aux)
- I **have** had a car. (Aux)
- I **had** a car. (Lex)

Transitive (Mono-transitive and Di-transitive)

- I invited him. (mono-transitive)
- I gave him a pen.(Di-transitive)

Intransitive Verbs

- I **went** to school. (Int)
- He opened the door.(Tr)
- The door opened.(Int)
- He gave me a book.

Link verbs (SVC)

Copula verbs

Verbs of Incomplete Predication

Be, become, seem, look, sound, appear...C

- He **is** a doctor.
- He **is** happy.
- Be, become, appear, sound, seem, taste, smell, grow, get….
- Mangoes taste sweet. (svc)
- I have a car. (have type verb-Object)
- I am a teacher.

Action (Dynamic) and Stative Verbs

Stative verbs are not used in continuous aspect. (ing)

- He is a teacher.

Stative Verbs-

1. She **agreed** with us.
2. It **appears** to be raining.
3. I don't **believe** the news.
4. It **belongs** to my grandfather.
5. This **concerns** you.
6. Bread **consists** of flour, water and yeast.
7. This box **contains** a cake.
8. The mangoes **taste** sweet.
9. It **depends** on the weather.
10. He **deserves** to pass the exam.
13. I **doubt** what you are saying.
14. I don't **feel** that this is a good idea. (have an opinion)
15. This shirt **fits** me well.
16. Julie's always **hated** dogs.
17. Do you **hear** music?
18. I **imagine** you must be tired.
19. He **impressed** me with his story.
20. The cook **includes** a recipe for bread.
21. The job **involves** a lot of travelling.
22. I've **known** Julie for ten years.
23. I **like** reading detective stories.
24. I **love** chocolate.
25. It doesn't **matter**.
26. 'Enormous' **means** 'very big'.
27. This window **measures** 150 cm.
28. She doesn't **mind** the noise.
29. At three o'clock I **need** a taxi.
30. I **want** to help.
31. I **owe** you £20.
32. She **owns** two cars.
33. I **prefer** chocolate ice cream.
34. I **promise** to help you tomorrow.
35. I didn't **realize** the problem.
36. I didn't **recognize** my old friend.
37. He didn't **remember** my name.
38. The weather **seems** to be improving.
39. Your idea **sounds** great.
40. I **suppose** John will be late.
41. The noise **surprised** me.
42. I don't **understand** this question.
43. I **want** to go to the cinema tonight.
44. This cake **weighs** 450g.
45. I **wish** I had studied more.
46. He **became** a king.
47. You **are** stupid.
48. I **have** a car.
49. I **see** what you mean.
51. Mangoes **taste** sweet.
53. I **think** it is right.

Causative Verbs (have, get, make)

- **Have** something done
- **Get** something done
- I **had** my room cleaned.
- I **get** my hair cut every month.
- I **had** the roof repaired last week.
- When will you **have** your clothes washed?
- **Get** your work done.
- **Have** someone do something (engage/ employ)
- ***Make** someone do something (force)
- ***Get** someone to do something (request)
- I **had** him type the letters.
- He **made** the servant clean the room.
- She **got** her mother to cook food.
- Who **made** you clean the board?
- You will never **get** him understand.

PREPOSITION

1. He agreed **with** me on that point
2. She agreed **to** my proposal.
   agree with sb
   agree to sth
3. He acted **upon** my advice.
4. He is addicted **to** smoking.
   I look forward **to** hearing from you.
   I am used **to** getting up early.
   I **used to** get up early. (Modal)
   He is accustomed **to** walking in the morning.
5. He was ashamed **of** his conduct.
   accused of
   guilty of
   tired of boiled vegetable
   get rid of
   tired with walking
6. I am not afraid **of** death.
7. He is fond **of** sweets.

8. She was kind **to** us. (cruel to)
9. I prefer tea **to** coffee.
10. Be careful **about** your health.
    He is able to do it.
    He is capable of doing it.
11. You must take care **of** your health.
12. He was angry **with** me for my conduct.
13. He died **of** fever.
14. He is proud **of** his wealth.
    She takes pride **in** her study.
    A son was born **to** Sita.
    He was born **in** Delhi/**in** 2000.
    Ramesh was blessed **with** a son.
15. Ali begged **for** mercy **from** the king.
16. The teacher was pleased **with** me.
17. Sita was born **of** rich parents.
    He comes **of** a rich family.
    I am **from** India.
    I am coming **from** school.
18. She takes delight **in** swimming.
    She is good **at** swimming. (skill)
    bad at
19. I was busy **with** my lessons.
20. We were astonished/surprised/amazed **at** her rudeness.
21. We wondered **at** her success.
22. They were alarmed **at** this news.
23. The dog is faithful/loyal **to** his master.
    He is true/false **to** his friend.
    He is true **to** his words.
    He is a man **of** words.
    a man **of** letters (learned man)
    a man **of** straws
    He is loyal **to** his master.
    junior to/senior to/prior to/inferior to/superior to...
    grateful to/thankful to
24. He is ill **with** fever.
    He is suffering **from** fever.
25. The boy jumped **for** joy.
    The dog jumped **upon** the cat.
    He jumped **into** the river.
    Can you jump **over** the wall?
26. My book is different **from** Hari's.
27. Please excuse me **for** coming late.
28. The basket is full **of** flowers.
29. Fill the bottle **with** hot water.
    Fill in the blanks **with** appropriate words.
30. He invited me **to** dinner.
31. She prays **to** God daily.
32. He quarrelled **with** me.
    They quarrelled **among** themselves.
    We quarrelled **over** a pen.
33. He is tired **of** this life. (bored of)
    He is tired **with** walking.
34. I am satisfied **with** your statement.
    He is pleased **with** me.
    His eyes filled up **with** tears.
    get rid of
    put up with
    look down upon
35. Harish warned me **of** the danger.
    warn sb of sth
36. He is ignorant **of** the facts.
37. He was charged **with** murder.
38. Have pity **for** the poor.
39. Have pity **on** us.
40. He prevented me **from** going.
41. He was rewarded **with** a medal.
    He was awarded Noble Prize **for/in** literature.
    Teacher of English
    Lecturer in English
42. She was anxious **about** her health.
43. We laughed **at** her dress. (mock at)
44. Who rules **over** England ?
45. It is a pleasure to deal **with** him.
    I will deal with him.
    He deals in rice.
46. At last fortune smiled **on** him.
47. He is free **from** cares.
48. We arrived **in** Bombay **at** noon.
49. We arrived **at** the station just **in** time. in time (before time)
    On time (eleventh hour)
    We shouldn't depend **on** others/rely on others. (upon)
50. He introduced me **to** his uncle.
51. He did not reply **to** my letter.
52. She lives close **to** my house.
53. She had her revenge **on** her enemies.
54. He parted **with** all his property.
    He parted **from** his friend.
    He can't part **with** money.
    part with sth
    part from sb
55. We were surprised **at** her success.
56. He parted **from** his friends.
57. He supplied the poor **with** clothing.
58. He fought **against** his enemies.
59. He complained **to** the Headmaster.
60. He complained **against** me.
    I will complain **about** your behaviour.
    He complains **of** the pain.
    I will complain **to** the Collector against you **about** your behaviour.
61. He depends **on** your help. (rely on)
62. He deals **in** Japanese silk.
63. He borrowed money **from** me.
64. He has failed **in** English.
    He applied **to** the manager for the post of a clerk.
65. He applied **to** the manager for leave.
    He is **on** leave/duty.
66. She is suffering **from** fever.
67. I am sorry **for** my mistake.
68. She comes **of** a rich family.
69. Kamala was married **to** Ram.
    She was married **by** her uncle.
    She was married **in** Delhi.
    She was married **at** an early age.
    She was married **in** 2000.
    She was married last year.
    He married **off** his daughter.
    Will you marry me?
70. He is true **to** his word.
    How is he related **to** you?
71. She is related **to** me.
72. He was accused **of** theft.
73. She was annoyed **with** me.
74. I congratulate you **on** your success.
75. I always bathe **in** cold water.
76. He objected **to** my proposal.
77. I beg **of** you to forgive me.
78. I am obliged **to** you **for** your kindness.
79. He will not hide the truth **from** her.
80. I sympathise **with** you **in** your misfortune.
81. I am prepared **for** the worst.
82. I called **on** her yesterday.
83. I am waiting **for** you **at** the station
    wait for sb at a place
84. I explained the whole thing **to** him.
    She gave me a pen.
    She gave a pen **to** me.
85. I inquired **of** her **about** the matter.
86. He is contented **with** his lot. (satisfied/pleased) agree/angry/annoyed with a person
87. I was annoyed **at** her conduct.
88. She is obedient **to** her parents.
89. He is blind **in** the right eye.
    blind/deaf/lame in one eye/ear/leg. (of)

90. He has a taste **for** painting.
91. I listened **to** what she said.
92. I was accompanied **by** my sister.
93. We rejoiced **at** his success.
94. Alcohol is injurious **to** health .
    Exercise is good for health.
95. My pen is superior **to** yours.
96. Attend **to** what I say.
97. Trust **in** God.
98. Save me **from** such friends.
99. Do not lean **against** the door.
    Put the ladder **against** the door.
    Don't lean **over** the table.
    Spread the cloth **over** the table.
100. He is negligent **in** his work.
101. Are you acquainted **with** her ?
    He is known **to** me.
    Who knows you?
    To whom are you known?
    Who are you known **to**?
    Do you know her?
    Is she known **to** you?
    I know him.
    He is known **to** me.
102. He has no affection **for** his parents.
103. He is guilty **of** theft.
    charge with
    accuse of
104. The book is useful **for** the junior boys.
105. A thief broke **into** his house.
106. We all grieved **for** her.
107. We were grieved **to** hear this.
108. We were grieved **at** the news.
109. He insisted **on** going there.
110. Has she recovered **from** her illness?
111. He is always short **of** money.
112. They set her house **on** fire.
113. They robbed him **of** his money.
114. I presented a silver watch **to** her.
115. The king is popular **with** his subjects.
116. The mother looks **after** her children.
117. He is jealous **of** your fame.
118. He was inquiring **after** your health.
119. Her face seems familiar **to** me.
120. He proved false **to** his friends.

CONJUNCTION

1. God made the country **and** man made the town.
2. Our hoard is little, **but** our hearts are great
3. She must weep, **or** she will die.
4. Two **and** two make four.
    'The man is poor **but** he is honest.
    Two **and** two make four.
    Hari **and** Rama are brothers.
    Hari **and** Rama came home together.
1. This is the house that Jack built. (Relative Adverb)
2. This is the place where he was murdered (Relative Adverb)
3. Take this and give that. (Conjunction)
    Either-or-Either take it or leave it.
    Neither-nor-It is neither useful nor ornamental.
    Both-and-We both love and honour him
    Though-yet (rare in current English) -- Though he is suffering much pain, yet he does not complain.
    Whether-or-I do not care whether you go or stay.
    Not only-But also-Not only he is foolish, but also obstinate.
    He visited not only Agra, but also Delhi.
    In order that-The notice was published in order that all might know the facts.
    On condition that - I will forgive you on condition that you do not repeat the offence.
    Even if -- Such an act would not be kind even if it were just.
    So that--He saved some bread so that he should not go hungry on the morrow.
    Provided that--You can borrow the book provided that you return it soon.
    As though--He walks as though he is slightly lame.
    In as much as--I must refuse your request, in as much as I believe it unreasonable.
    As well as--Rama as well as Govind was present there.
    As soon as--He took off his coat as soon as he entered the house.
    As if -He looks as if he were weary.

Birds fly and fish swim.

(1) **Cumulative or Copulative** which merely add one statement to another; as, We carved not a line, and we raised hot a stone.

(2) **Adversative** which express opposition or contrast between two statements; as, He is slow, but he is sure. I was annoyed, still I kept quiet. I would come; only that I am engaged. He was all right; only he was fatigued.

(3) **Disjunctive or Alternative** which express a choice between two alternatives; as,
    She must weep, or she will die.
    Either he is mad, or she will die.
    Neither a borrower, nor a lender be.
    They toil not, neither do they spin.
    Walk quickly, else you will not overtake him.

(4) **Illative** which express an inference; as,
    Something certainly fell in: for I heard a splash.
    After the shower was over, the sun shone out again.
    A book's a book, although there is nothing in it.
    As he was not there, I spoke to his brother.
    He ran away because he was afraid.
    You will pass if you work hard.
    Since you say so, I must believe it.
    Tell them that I will come.
    He finished first though he began late.
    Will you wait till I return?
    He will not pay unless he is compelled.
    I waited for my friend until he came.
    When I was younger, I thought so.
    I do not know whence he comes.
    He found his watch where he had left it.
    I do not understand how it all happened.
    Make hay while the sun shines.
    I shall go whither fancy leads me.
    I know not why he left us.
    He is taller than I (am tall).
    Hari is more stupid than Rakesh. (is stupid).

(1) **Time.**
    I would die before I lied.
    Many things have happened since

I saw you.
I returned home after he had gone.

(2) **Cause or Reason.**
My strength is as the strength of ten, because my heart is pure.
Since you wish it, it shall be done.
As he was not there, I spoke to his brother.
He may enter, as he is a friend.

(3) **Purpose.**
We eat so that we may live.
He held my hand lest I should fall.

(4) **Result or Consequence.**
He was so tired that he could scarcely stand

(5) **Condition.**
Rama will go if Hari goes.
Grievances cannot be redressed unless they are known.

(6) **Concession.**
I will not see him, though he comes.
Though He slay me, yet will I trust Him.
A book's a book, although there's nothing in it.

(7) **Comparison.**
He is stronger than Rustum [is]

INTERJECTION

An Interjection is a word which expresses some sudden feeling or emotion.
Hello! What are you doing there?
Alas! He is dead.
Hurrah! We have won the game.
Ah! Have they gone?
Oh! I got such a fright.
Hush! Don't make a noise.
Such words as Hello! Alas! Hurrah! Ah! etc. are called Interjections.
They are used to express some sudden feeling or emotion. It will be noticed that they are
not grammatically related to the other words in a sentence.
Interjections may express-
(1) Joy; Hurrah! Huzza!
(2) Grief; alas!
(3) Surprise; ha! What!
(4) Approval; bravo!
Certain groups of words are also used to express some sudden feeling or emotion; as,
Ah me! For shame! Well done! Good gracious!
Whew, that was close.
Careful, the tiger is hungry!
Yes, I think I will have more tea please.
Thanks, I needed that.
Wow! That was easy!

Reader and Chief Resource Person
ELTI, Govt. IASE, Bikaner
Mob-9460305331

Tricks for Poems and Road Safety

❒ **Poonam Gidwani**

Poetry

माध्यमिक परीक्षा-2017 में अंग्रेजी विषय के पाठ्यक्रम में निर्धारित समस्त Poems के लिए Same Reference, Context, Explanation and Critical Comments के लिए ये Table याद करनी है-

S. No.	Poem	Poet	Theme
1	Dust of Snow	Robert Frost	The simple falling of the dust of the snow and mood of the poet.
2	Fire and Ice	Robert Frost	Desire and haterd as fire and ice.
3	A Tiger in the Zoo	Leslie Norries	The tiger and freedom for animals.
4	How to Tell Wild Animals	Carolyn Wells	Creation of humour and wild animals.
5	The Ball Poem	John Berryman	The ball and the art of bearing the loss.
6	Amanda	Robin Klein	Amanda and the nagging of parents at the children.
7	Animals	Walt Whitman	The animals and human weaknesses.
8	The Tress	Adrienne Rich	The tress and the conflict between man and nature.
9	Fog	Carl Sandburg	The fog and nearness with nature.
10	The Tale of Custard the Dragon	Ogden Nash	The fair weather friends through Belinda, custard, ink, blink and mustard.
11	For Anne Gregory	William Butler Yeats	Physical beauty and moral qualities.

Reference, context, explanation, and critical comments for all poems

Reference-These lines have been taken from the poem **"Name of poem"** composed by **"Name of poet".**

Context- In this poem **"Name of poem"** the poet **"Name of poet "**wants to tell us about **"subject"**. (subject to be taken from above table.)

Explanation-This stanza is a good example of **Name of poet's** simplicity of words and diction. Poet has tried his best to glorify **"Subject"**. Poet comes before us as a true lover of nature . These line are highly musical .**"Subject"** is seen in the whole stanza. The poet is able to produce a great effect on our mind and heart. The poem is a good expression of poet's mind and heart.

Critical Comments-

1. This is a very beautiful poem about "subject".
2. The poet has used simple and beautiful language.
3. The poet has used simple words in the poem .

4. This poem is a good example of figure of speech.
5. The poet has used good style in the poem.
6. The subject of the poem is very good.
7. The poem gives a sound and deep message.

Road Safety

Car Pooling

Other Names of Car pooling :-

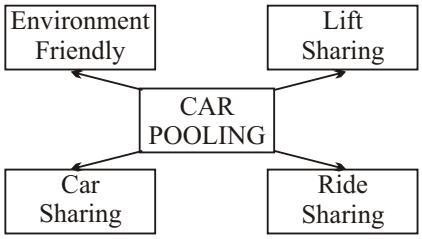

*Car pooling Reduces
1. Fuel Cost
2. Toll cost
3. Stress of driving
4. Carbon emissions
5. Parking Space
6. Traffic Congestion

Car pooling is sharing of car Jounrneys.

Drunk Driving

1. Drunk Driving is buzzed driving.
2. Punishment
- Section 185 of Motor Vehicle act.
- Fine upto Rs. 2000
- Imprisonment upto 6 months

3. Result
- Can lead to accidents.
- Dangerous for Driver.
- Dangerous for other road users.
- Drunk Driving is driving under the influence of wine.
- The Drunk driver loses control. His mind and body becomes dull. This leads to accidents.

The Importance of Traffic Lights
The Importance of Traffic Rules
Lane discipline

उपर्युक्त तीनों Topics के लिए Same sentences है only एक word (Traffic lights/ Traffic rules/ Traffic lane discipline) change करना है।

1. **Traffic lights** create safety of vehicles.
2. **Traffic lights** create an order.
3. **Traffic lights** create a traffic system.
4. **Traffic lights** save accidents.
5. **Traffic lights** save life.
6. **Traffic lights** save loss of property.

*So we should follow Traffic Lights.
*Drivers must not use Mobile Phone.
Rules:-
1. The Green light means "Go".
2. The Red light means "stop".
3. The Yellow light Means "Get ready".

Trick :- Lane discipline Topic में चार points extra add करने हैं।

1. The first Lane – for cars
2. The second Lane- For Two wheelers
3. The third Lane- for heavy vehicles
4. The fourth Lane-for cycles

Safe Driving

1. Use Horn
2. Speed Limit
3. Use Indicators
4. Low volume music
5. No use of phones

Note:- Make diagrams as many as possible for all answers.

Driving Licence

Must for Driving
1. Driving Licence
2. Automobile insurances

RTO issues a driving licence.

R T O
↓ ↓ ↓
Regional Transport Officer

Age for driving licence -18 years.

Senior Teacher(English)
G.S.S. School, Buglanwali,
Hanumangarh
Mob-9460204614

जन्म दिवस विशेष

श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

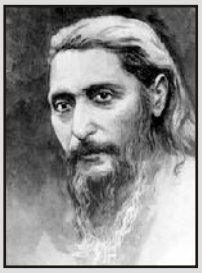

सरस्वती पूत्र सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' आधुनिक हिन्दी के सूर्य के समान ही दैदिप्यमान प्रबुद्ध कवि थे। इन्होंने ही हिन्दी में छंद मुक्त कविताओं के विधान की शुरुआत की। इनकी समस्त काव्य रचनाओं में प्रधान स्वर ओज और संघर्ष से पूर्ण होता था। भारतीय साहित्य जगत निराला जी को कभी भी भुला नहीं पाएगा। कवि निराला जी को साहित्य जगत का सिरमौर बनाने का श्रेय एक अकेले कलकत्ता के सेठ महादेव प्रसाद मतवाला जी को जाता है। हिन्दी के मूर्धन्य साहित्यकार 'निराला' जी हिन्दी कविता के छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक माने जाते हैं। 'निराला' का जन्म महिषादल स्टेट मेदनीपुर (बंगाल) में माघ शुक्ल एकादशी संवत् 1953 तदनुसार 21 फरवरी, 1896 को हुआ था। निराला जी का जन्म रविवार को हुआ इसलिए ये सुर्जकुमार कहलाए। यह जन्म तिथि रामनरेश त्रिपाठी द्वारा कविता कौमुदी के लिए सन् 1926 ई. के अन्त में जन्म सम्बंधी विवरण माँगने पर निरालाजी ने लिखकर दी। निराला जी के बंगाल में रहने से बांग्ला उनकी मातृभाषा हो गयी।

निराला जी करुणा, दया की साक्षात् मूर्ति थे। एक बार एक प्रेस प्रकाशक ने उन्हें 300 रुपये दिये। उन्होने रुपये अपनी अंटी में बांधे और चल पड़े। रास्ते में एक भिखारिन मिली। निराला जी को देख कर कहने लगी– 'बेटा इस भूखी–प्यासी भिखारिन को कुछ दे दो।' निराला जी ठिठक कर खड़े हो गये और बोले– 'बताओ तुम्हें कितने पैसे मिल जाये तो तुम भीख माँगना छोड़ दोगी?' भिखारिन ने सोचा कि शायद यह मजाक कर रहे हैं तो वह झट से बोली– 'क्यों मेरी हँसी उड़ा रहे हो।' सूर्यकान्त त्रिपाठी जी तपाक से बोले– 'निराला की माँ भीख नहीं माँग सकती?' इतना कहकर तुरंत अपनी अंटी में रखे पूरे के पूरे रुपये निकालकर बुढ़िया भिखारिन को थमा दिए। ऐसे थे हमारे करुणा सागर कवि निराला जी। माँ सरस्वती के इस पुत्र को सहृदय शत् शत् नमन।

विजय शंकर आचार्य,
संयुक्त निदेशक (कार्मिक) मा.शि.राज., बीकानेर
मो. 9414426060

प्रयास - 2017

भौतिक विज्ञान को कैसे सरल बनाएँ

❒ राकेश कुमार शर्मा

विज्ञान की सभी शाखाओं में भौतिक विज्ञान को सबसे कठिन माना जाता है। भौतिक विज्ञान की जटिल विषयवस्तु को छात्र समझ नहीं पाते है। प्रायः देखा गया है कि कक्षा X के विद्यार्थी विज्ञान के प्रश्न पत्र में भौतिक विज्ञान की विषयवस्तु में से पूछे गए प्रश्नों को ठीक से हल नहीं कर पाते हैं तथा उनका परीक्षा परिणाम प्रभावित होता है। इस आलेख में हम कुछ सरल विधाओं को समझेंगे, जिनकी सहायता से भौतिक विज्ञान की जटिल दिखने वाली विषयवस्तु सरल व रोचक लगने लगती है।

1. फ्लेमिंग का वाम हस्त नियम :– इस नियम को FMC के माध्यम से छात्र को Father, Mother, Children के बारे में बतलाते हुए कि परिवार में Father सबसे Powerful होता है, हाथ के अंगूठे की तरह। उसके बाद Mother व Children का नम्बर आता है जैसे हाथ में अंगूठे के बाद तर्जनी व मध्यमा आती है। Father का F अंगूठे पर, Mother का M तर्जनी पर तथा Children का C मध्यमा पर लिखकर F for Force, M for Magnetic Field तथा C for Current की दिशा को प्रदर्शित करना समझा सकते है।

वामहस्त अर्थात् बायाँ हाथ, इसमें <u>बा</u>याँ का ब, आरोपित <u>ब</u>ल की दिशा को बतलाता है।

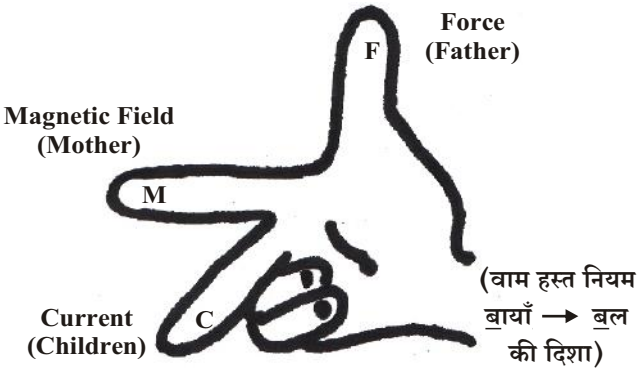

2. फ्लेमिंग का दक्षिण हस्त नियम :– वामहस्त नियम की तरह दाँये हाथ के अंगूठे, तर्जनी व मध्यमा को पुनः FMC के माध्यम से समझाते हुए बताएँ कि <u>दा</u>याँ हाथ का नियम – प्रेरित <u>धा</u>रा की दिशा को बतलाता है।

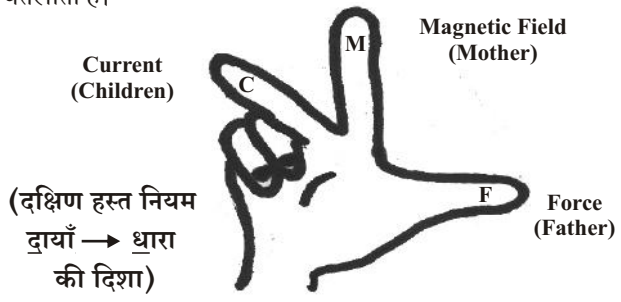

3. विद्युत धारा का चुम्बकीय प्रभाव :– सीधे धारावाही चालक से उत्पन्न चुम्बकीय क्षेत्र के कारण पास रखी चुम्बकीय सुई में आए विक्षेप की दिशा, विद्युत धारा की दिशा पर निर्भर करती है।

चालक तार

<u>SNOW</u> → **S** → **N** ——↑—— **W**
(South) (North) **O**ver (West)

अर्थात् विद्युत धारा की दिशा दक्षिण से उत्तर की ओर हो तथा चालक तार, चुम्बकीय सुई (कम्पास) के ऊपर से गुजरे तो चुम्बकीय सुई में विक्षेप पश्चिम की ओर आता है।

चालक तार

<u>NSOE</u> → **N** → **S** ——↑—— **E**
(North) (South) **O**ver (East)

यदि विद्युत धारा की दिशा उत्तर से दक्षिण की ओर हो तथा चालक तार, चुम्बकीय सुई के ऊपर से गुजरे तो चुम्बकीय सुई में विक्षेप पूर्व की ओर आता है।

4. अवतल दर्पण से प्रतिबिम्ब निर्माण :– अवतल दर्पण से उसके सामने विभिन्न स्थितियों पर रखी वस्तु के प्रतिबिम्ब की स्थिति, साईज व प्रकृति को 'झंडू पंचारिष्ट नियम' से समझा जा सकता है। इस नियम को समझाते हुए छात्रों को बताएँ कि अपने बाएँ हाथ के अंगूठे पर ∞, मध्यमा पर C एवं सबसे छोटी अंगुली पर F लिख लें। अब बताएँ कि ये पाँचों अंगुलियाँ (अंगूठे सहित) पाँच विभिन्न स्थितियों को बतलाएगी तथा बनने वाले प्रतिबिम्ब की स्थिति उसके दूसरी अंगुली से मिलने के स्थान पर होगी। प्रतिबिम्ब का आकार भी उस अंगुली के आकार से पता चल जाएगा जिससे वह मिल रही है। ये पाँचों स्थितियाँ वास्तविक व उल्टा प्रतिबिम्ब की है इसलिए ये आपको वास्तव में दिखा पा रहे हैं। हमें छठी स्थिति का आभास करना पड़ेगा, अतः इस स्थिति में बनने वाला प्रतिबिम्ब भी आभासी व सीधा बनेगा।

ये नियम उत्तल लेंस से प्रतिबिम्ब निर्माण में भी लागू हो जायेगा। केवल मध्यमा पर C के स्थान पर 2F लिखें।

1. जब वस्तु अनन्त पर हो

2. जब वस्तु अनन्त व C के मध्य हो

3. जब वस्तु C पर स्थित हो

प्रतिबिम्ब की स्थिति – C पर
साईज - वस्तु के बराबर
प्रकृति – वास्तविक उल्टा

4. जब वस्तु C व F के मध्य हो।

प्रतिबिम्ब की स्थिति – C व अनन्त के मध्य
साईज – वस्तु से बड़ा
प्रकृति – वास्तविक उल्टा

5. जब वस्तु F पर स्थित हो।

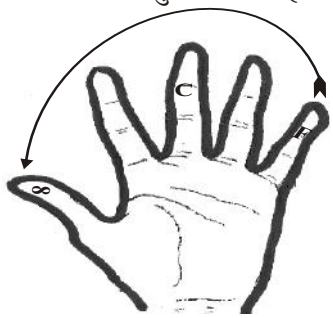

प्रतिबिम्ब की स्थिति – अनन्त पर
साईज – वस्तु से बड़ा
प्रकृति – वास्तविक व उल्टा

व्याख्याता (अंग्रेजी), रा.उ.मा.वि. रेलवे स्टेशन, दौसा **मो : 9784412042**

प्रयास- 2017

सरल रसायन

❐ **सुरेश कुमार**

रसायन विज्ञान को कुछ सरल भाषा में याद करने के तरीके आवश्यक हैं जिससे विद्यार्थी रसायन विज्ञान के कुछ प्रश्नों को सरल रूप से याद रख सकते है तथा कक्षा X के बोर्ड छात्र/छात्राओं के लिए परीक्षा में अंक अर्जित करने में आसानी हो सकेगी। रसायन विज्ञान में कुछ प्रश्नों के भागों को आसानी से समझने के तरीके निम्नांकित है।

1. अम्ल एवं क्षार में लिटमस पत्र के रंग परिवर्तन को याद रखने का आसान तरीका

अम्ल	**क्षार**
अम्ल नीले लिटमस पत्र को लाल रंग में परिवर्तित कर देते है।	**क्षार** लाल लिटमस पत्र को नीले रंग में परिवर्तित कर देते है।
अनीला (लड़की) के नाम से	क्षालानी (लड़की) के नाम से–
अ ↓ नी ↓ ला ↓	क्षा ↓ ला ↓ नी ↓
अम्ल नीला → लाल	क्षार लाल → नीला

2. सक्रियता श्रेणी (धातु एवं अधातु) को एक लाइन में याद करने का तरीका–

पौटेशियम	K	का
सोडियम	Na	ना
कैल्सियम	Ca	कार
मैग्नेशियम	Mg	माँगे
ऐलुमिनियम	A1	एल्टो
जिंक	Zn	जेन
आयरन	Fe	फरारी
लेड	Pb	प्रभु
हाइड्रोजन	H	हे
कॉपर	Cu	क्यू
मर्करी	Hg	हुजूर
सिल्वर	Ag	आज
गोल्ड	Au	आओ

सक्रियता श्रेणी से धातुओं की क्रियाशीलता का पता लगता है कि कौनसी धातु अधिक क्रियाशील है एवं कौनसी धातु कम क्रियाशील है। इसका उपयोग विस्थापन अभिक्रिया के रासायनिक समीकरण की पहचान में होता है।

Ex.·

$Zn + FeSO_4 \longrightarrow ZnSO_4 + Fe$

परीक्षोपयोगी छोटे–छोटे प्रश्नों को याद करने में आसानी रहती है।

सूत्र– (काना कार माँगे एल्टो जेन फरारी प्रभु हे क्यू हुजूर आज आओ)

3. मिश्र धातु जिन धातुओं से मिलकर बनता है उसे याद रखने के लिए आसान एक वाक्य –

काशी ↓ त ↓ ट ↓ सोल्जर ↓ सी ↓ टि ↓
कांसा = तांबा + टिन सोल्डर = सीसा + टिन

पि ↓ ता ↓ जी ↓
पीतल = तांबा + जिंक

सूत्र – (काशी के तट पर सोल्जर सीटी बजाकर पिताजी को बुलाएँ।)

4. लिथियम, सोडियम, पोटेशियम को केरोसीन में डूबोकर रखा जाता है–

लीला ↓ का ↓ ना ↓ की केरोसीन में
Li K Na
लिथियम पोटेशियम सोडियम

सूत्र – (लीला काना की केरोसीन में)

5. हैलोजन तत्वों को याद रखने का तरीका (17–समूह के तत्व)

हैलोजन–	F,	CI,	Br,	I
हैलो करे	फालतु में	काली	बाहर	आई
	↓	↓	↓	↓
हैलोजन	F	CI	Br,	I

सूत्र – (हैलो करे फालतु में काली बाहर आई)

वरिष्ठ अध्यापक (विज्ञान)
रा.मा.वि. बुड़ीवाड़ा, बाड़मेर
मो : 9950162423

प्रयास-2017

हृदय व न्यूरॉन का चित्र बनाने की सरल विधि

❐ उर्मिला चौधरी

जीव विज्ञान

हृदय व न्यूरॉन का चित्र बनाने की सरल विधि

विज्ञान विषय में चित्रों का अत्यधिक महत्त्व है। परीक्षा में इन चित्रों के लिए पृथक अंको का निर्धारण होता है। यदि कोई विधार्थी इन चित्रों को सही बनाकर नामांकित कर देता है तो उसे पूरे अंक प्राप्त हो सकते हैं किन्तु चित्रों की जटिलता के कारण साधारणतया बच्चे इन्हें नहीं बना पाते हैं। इसलिए इस आलेख में आपको हृदय व न्यूरॉन का चित्र बनाने की सरल विधि से अवगत कराते हैं।

हृदय का चित्र बनानें की सरल विधि :–

1. सबसे पहले एक आम का चित्र बनाएँ।
2. इस आम में ऊपर की ओर अंग्रेजी का Capital अक्षर H बनाएँ, ध्यान रखें H में हमें ऊपर की तरफ दो के स्थान पर तीन टाँगें बनानी हैं।
3. H अक्षर के बाँयी ओर Capital अक्षर Y बनाएँगे।
4. अब हम इस आम के एक पैर बनाएँगे।
5. अब हम करेंगे इस आम के चार टुकड़े जिसमें भी हमें ध्यान रखना है कि ऊपर के भाग छोटे और नीचे के बड़े हों। इसमें भी हमें बायीं ओर का नीचे का भाग बड़ा रखना है क्योंकि बायाँ निलय हृदय के चारों कक्षों में सबसे बड़ा होता है।
6. बस अब हम नामांकित कर दें और तैयार है आपके हृदय का नामांकित चित्र।

अब छोटी–छोटी Tricks हृदय से संबंधित :–

- हृदय के दाँये भाग में अशुद्ध रुधिर यानि दुखिया रुधिर रहता है।
- और बाँये भाग में सदैव शुद्ध यानि बढ़िया रुधिर रहता है।
- धमनी, धमका कर रुधिर हृदय से ले जाती है और शिरा शर्माकर रुधिर अंगों से हृदय में ले आती है।
- धमनी, धमका कर ले जाती है मतलब धमनी की भित्ति मोटी और रुधिर दाब अधिक।
- शिरा शर्माकर लाती है तो भित्ति पतली और रुधिर का दाब कम ।

न्यूरॉन का चित्र बनाने की सरल विधि :–

1. सबसे पहले हमें बनाना है एक तारा।
2. अब हमें लगानी है इस तारे की पूँछ, वो भी लम्बी सी।
3. अब हम सब जानते है कि पूँछ में क्या होते है बाल, तो हमें बाल बनाने हैं।
4. अब बालों के आखिरी सिरों पर लगानी हैं गाँठें।
5. हमें पता है कि हनुमान जी ने लंका को जलाने के लिए अपनी पूँछ पर क्या बाँधा था–कपड़ा। तो हमें भी अपने तारे की पूँछ पर कपड़ा लपेटना है।
6. अब हमें तारे से निकालनी हैं बहुत सारी किरणें।
7. और अन्त में हमारे तारे को नजर न लगे, इसके लिए लगाना है काला टीका।
8. और नामांकन के लिए न्यूरॉन का चित्र तैयार है।

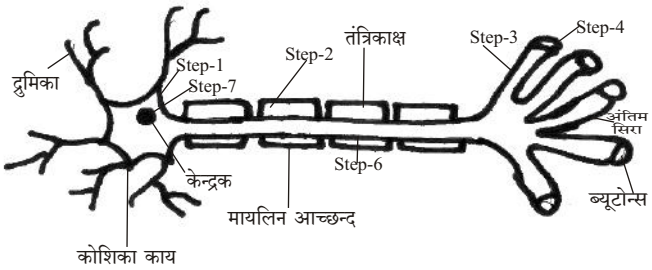

सिनैप्स :– हमारे शरीर में आवेगों के संचरण का माध्यम होते है न्यूरॉन। किन्हीं दो न्यूरॉन के बीच अन्तर्ग्रन्थन से बनता है सिनैप्स। एक न्यूरॉन का Head और दूसरे का foot जुड़कर सिनैप्स बनाते है।

व.अ. (विज्ञान)
रा.मा.वि. हीरा का बास,
गोविन्दगढ़, जयपुर-II
मो : 9413901043

प्रयास-2017

प्रायिकता (Probability)

❐ विजय कुमार शर्मा

- किसी भी प्रयोग को करने पर उसमें एक से अधिक परिणाम प्राप्त हो सकते है। प्रत्येक संभावित परिणाम एक घटना (Event) को प्रदर्शित करता है।

Ex. प्रयोग – किसी एक सिक्के को उछालना
संभावित परिणाम –(i) सिक्के पर चित्त (Head) आना
(ii) सिक्के पर पट (Tail)आना

- लेकिन प्रत्येक परिणाम संभावित है, अर्थात् उसके घटित होने के संबंध में कुछ नहीं कहा जा सकता।
- वास्तव में किसी घटना/परिणाम के होने की संभावना को गणितीय रूप में **प्रायिकता** से व्यक्त किया जाता है।
- **प्रायिकता** –किसी प्रयोग के दौरान किसी विशिष्ट परिणाम के होने की संभावना।
- छोटी कक्षा के ज्ञान के आधार पर इसे निम्नानुसार समझा जा सकता है–
  छोटी कक्षा में हमने प्रतिशत के बारे में पढ़ा था, एक बालक ने किसी सिक्के को उछाला और उससे पूछा गया कि चित्त (Head) आने की क्या संभावना (Chance) है?
  उसने कहा – 50%, जिसका सरल रूप $50\% = \frac{50}{100} = \frac{1}{2}$
- इसे ही सिक्के को उछालने पर H आने की प्रायिकता $=\frac{1}{2}$ कहा गया।
- किसी प्रयोग में संभावित घटनाओं में से यदि किसी घटना का होना निश्चित है तो उसे **निश्चित घटना** कहा जाता है और किसी घटना/परिणाम का होना असंभव है, तो उसे **अनिश्चित घटना** करते है।

Ex. एक पासे को फेंकने पर–
घटना A– पासे पर प्राप्त अंक 7 से छोटा हो – **निश्चित घटना**
घटना B– पासे पर प्राप्त अंक 6 से अधिक हो-**अनिश्चित घटना**

- यदि घटना E के घटित होने की प्रायिकता को P(E) से प्रदर्शित करें तो

$$P(E) = \frac{\text{E के अनुकूल परिणामों की संख्या}}{\text{प्रयोग के कुल संभावित परिणामों की संख्या}}$$

- निश्चित घटना के लिए
  अनुकूल परिणाम = कुल संभावित परिणाम
  $P(E) = 1$
- अनिश्चित घटना के लिए – अनुकूल परिणाम = 0
  $\therefore P(E) = 0$
- अन्य किसी भी घटना के लिए : अनुकूल परिणाम < कुल परिणाम

$$\therefore \frac{\text{अनुकूल परिणाम}}{\text{कुल परिणाम}} < 1 \quad \therefore P(E) < 1$$

व्यापक रूप में $\boxed{0 \leq P(E) \leq 1}$

पूरक घटना

- किसी घटना E की पूरक घटना वह घटना होती है, जो उस घटना के प्रतिकूल परिणामों से संबंधित हो (जो एक साथ घटित न हो सके)

Ex. घटना (E)–सिक्के पर H आना।
पूरक घटना ($\overline{E}$)–सिक्के पर H का नहीं आना।

- किसी घटना E के अनुकूल परिणामों के अतिरिक्त अन्य परिणाम प्रतिकूल परिणाम कहलाते है।

$$P(\overline{E}) = \frac{\text{E के प्रतिकूल परिणामों की संख्या}}{\text{प्रयोग के कुल संभावित परिणामों की संख्या}}$$

$\therefore P(\overline{E}) = 1 - P(E)$ $\quad \therefore P(E) + P(\overline{E}) = 1$

● **कारण –** प्रयोग के कुल परिणामों को किसी विशिष्ट परिणाम/ घटना E के परिप्रेक्ष्य में दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

प्रयोग के कुल संभावित परिणाम → [i) E के अनुकूल परिणाम, ii) E के प्रतिकूल प्ररिणाम]

अर्थात् E के प्रतिकूल परिणाम, $\overline{E}$ के लिए अनुकूल परिणाम होने के कारण E व $\overline{E}$ दोनों घटनाओं में से किसी एक का होना निश्चित हैं।

● **सम प्रायिक घटनाएँ**

किसी प्रयोग में होने वाली ऐसी घटनाएँ जिनके घटित होने की संभावना समान हो,

Ex - सिक्के को उछालते पर चित्त या पट का आना समप्रायिक घटनाएँ है।,

Ex -1 किसी एक पासे को फेंका गया, पासे पर

i) 2 अंक आने की प्रायिकता–
हलः– अनुकूल परिणामों की संख्या=1
कुल परिणामों की संख्या =6
अतः 2 अंक आने की प्रायिकता = 1/6

ii) सम अंक आने की प्रायिकता
हलः अनुकूल परिणाम {2, 4, 6}
अनुकूल परिणामों की संख्या = 3 $\quad \therefore P(E) = \frac{3}{6} = \frac{1}{2}$

iii) विषम अंक आने की प्रायिकता
हलः अनुकूल परिणाम {1, 3, 5}
अनुकूल परिणामों की संख्या = 3 $\quad \therefore P(E) = \frac{3}{6} = \frac{1}{2}$

iv) अभाज्य अंक आने की प्रायिकता

हलः अनुकूल परिणाम $\{2, 3, 5\}$
अनुकूल परिणामों की संख्या = 3 ∴ $P(E)=\frac{3}{6}=\frac{1}{2}$

v) 4 से अधिक अंक आने की प्रायिकता

हलः- अनुकूल परिणाम $\{5,6\}$
अनुकूल परिणामों की संख्या = 2 ∴ $P(E)=\frac{2}{6}=\frac{1}{3}$

vi) 4 या 4 से अधिक आने की प्रायिकता

हलः- अनुकूल परिणाम $\{4,5,6\}$
अनुकूल परिणामों की संख्या = 3 ∴ $P(E)=\frac{3}{6}=\frac{1}{2}$

vii) 4 से अधिक न आने की प्रायिकता

हलः- अनुकूल परिणाम $\{1,2,3,4\}$
अनुकूल परिणामों की संख्या = 4 ∴ $P(E)=\frac{4}{6}=\frac{2}{3}$

viii) 4 से कम अंक आने की प्रायिकता

हलः- अनुकूल परिणाम $\{1,2,3\}$
अनुकूल परिणामों की संख्या = 3 ∴ $P(E)=\frac{3}{6}=\frac{1}{2}$

ix) पूर्ण वर्ग संख्या आने की प्रायिकता

हलः अनुकूल परिणाम $\{1, 4\}$
अनुकूल परिणामों की संख्या = 2 ∴ $P(E)=\frac{2}{6}=\frac{1}{3}$

x) 6 से अधिक (बड़ा) अंक आने की प्रायिकता

हलः अनुकूल परिणामों की संख्या = 0
(अनिश्चित घटना) ∴ $P(E)=\frac{0}{6}=0$

xi) 7 से कम अंक आने की प्रायिकता

हलः अनुकूल परिणाम = $\{1,2,3,4,5,6\}$
अनुकूल परिणामों की संख्या = 6
(निश्चित घटना) ∴ $P(E)=\frac{6}{6}=1$

Ex. 2 दो पासे वाले प्रश्न के लिए

कुल परिणामों की संख्या = 6X6 = 36
यहाँ प्रश्न में अंको का योग सामान्यतया पूछा जाना हैं।
इन अंको का योग न्यूनतम = 2
अधिकतम = 12

कुल स्थितियाँ याद रखने का आसान तरीका

अंको का योग	2	3	4	5	6	**7**	8	9	10	11	12
कुल अनुकूल परिणाम	1	2	3	4	5	**6**	5	4	3	2	1

बढ़ता क्रम → अधिकतम बार → घटता क्रम

i) अंकों का योग 6 आने की प्रायिकता

हलः- अनुकूल परिणामों की संख्या = 5 ∴ प्रायिकता= $\frac{5}{36}$

ii) समान अंक आने की प्रायिकता

हलः- अनुकूल परिणाम (1,1), (2,2), (3,3), (4,4), (5,5), (6,6)
अनुकूल परिणामों की संख्या = 6 ∴ प्रायिकता= $\frac{6}{36}=\frac{1}{6}$

iii) अंकों का योग 9 से अधिक आने की प्रायिकता

हलः- अनुकूल परिणाम = योग 10 हो या 11 हो या 12 हो
अनुकूल परिणामों की संख्या = 3 + 2 + 1= 6

∴ प्रायिकता= $\frac{6}{36}=\frac{1}{6}$

iv) अंकों का योग अधिकतम 11 आने की प्रायिकता

हलः- प्रतिकूल परिणाम = योग 12 हो अर्थात् 1 परिणाम
अनुकूल परिणाम = 36−1=35 ∴ प्रायिकता= $\frac{35}{36}$

• ताश के पत्ते

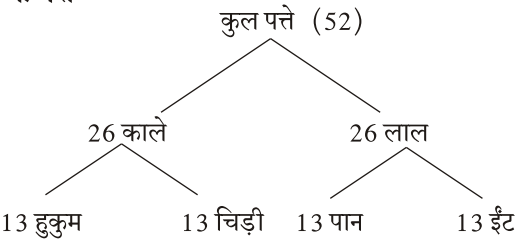

- इस प्रकार प्रत्येक Suit के 13 पत्ते होते है जो कि इक्का (Ace), बादशाह, बेगम, गुलाम, 10,9,8,7,6,5,4,3,2,1 हैं।

i.e. चार इक्के, चार बादशाह, चार बेगम, चार गुलाम, ...

• Face cards (चित्रित पत्ते) = 12 (4 बादशाह, 4 बेगम, 4 गुलाम)

Ex. 3. 52 ताश की एक अच्छी तरह फेंटी गई गड्डी में से एक पत्ता निकाला गया, उस पत्ते की क्या प्रायिकता होगी यदि वह-

i) इक्का हों -

हलः अनुकूल परिणामों की संख्या = 4
∴ प्रायिकता = $\frac{4}{52}=\frac{1}{13}$

ii) बादशाह हो -

हलः अनुकूल परिणामों की संख्या = 4
∴ प्रायिकता = $\frac{4}{52}=\frac{1}{13}$

iii) पत्ता लाल हो -

हलः अनुकूल परिणामों की संख्या = 26
∴ प्रायिकता = $\frac{26}{52}=\frac{1}{2}$

iv) पत्ता काला हो

हलः अनुकूल परिणामों की संख्या = 26
∴ प्रायिकता = $\frac{26}{52}=\frac{1}{2}$

v) पत्ता चिड़ी का हो,

हलः अनुकूल परिणामों की संख्या = 13
∴ प्रायिकता = $\frac{13}{52}=\frac{1}{4}$

vi) पत्ता चित्रित (Face Card) हो

हलः अनुकूल परिणामों की संख्या = 12

∴ प्रायिकता = $\frac{12}{52} = \frac{3}{13}$

vii) पत्ता लाल रंग का बादशाह हो

हलः अनुकूल परिणाम = पान का बादशाह, ईंट का बादशाह

अनुकूल परिणामों की संख्या =2

∴ प्रायिकता = $\frac{2}{52} = \frac{1}{26}$

viii) पत्ता चिड़ी का बादशाह हो

हलः अनुकूल परिणाम = 1

प्रायिकता = $\frac{1}{52}$

चिड़ी का बादशाह एक ही होता है।

ix) पत्ता इक्का न हो,

हलः इक्का होने की प्रायिकता = $\frac{4}{52} = \frac{1}{13}$

इक्का न होने की प्रायिकता = $1 - \frac{1}{13} = \frac{12}{13}$

वैकल्पिक

पत्ता इक्का न हो– अनुकूल परिणाम 52–4= 48 पत्ते

∴ प्रायिकता = $\frac{48}{52} = \frac{12}{13}$

x) पत्ता ईंट का न हो

हलः ईंट का पत्ता होने की प्रायिकता = $\frac{13}{52} = \frac{1}{4}$

ईंट का पत्ता नहीं होने की प्रायिकता = $1 - \frac{1}{4} = \frac{3}{4}$

वैकल्पिकः ईंट का पत्ता न हो, अनुकूल परिणाम = 52–13=39

∴ प्रायिकता = $\frac{39}{52} = \frac{3}{4}$

xi) पत्ता Face Card न हो

हलः Face Card होने की प्रायिकता = $\frac{12}{52} = \frac{3}{13}$

Face Card न होने की प्रायिकता = $1 - \frac{3}{13} = \frac{13-3}{13} = \frac{10}{13}$

वैकल्पिक : Face Card न हो, अनुकूल परिणाम = 52–12=40

∴प्रायिकता = $\frac{40}{52} = \frac{10}{13}$

Ex.4 एक बैग में 3 लाल और 4 काली गेंद है, इनमें से यादृच्छया एक गेंद निकाली जाती है, इस गेंद की क्या प्रायिकता होगी यदि वह–

i) गेंद लाल हो

हलः अनुकूल परिणामों की संख्या = लाल गेंदों की संख्या = 3

कुल परिणामों की संख्या = कुल गेंदों की संख्या = 3+4=7

∴ प्रायिकता = $\frac{3}{7}$

ii) गेंद काली हो

हलः अनुकूल परिणामों की संख्या = काली गेंदों की संख्या = 4

∴ प्रायिकता = $\frac{4}{7}$

iii) गेंद सफेद हो

हलः अनुकूल परिणामों की संख्या = सफेद गेंदों की संख्या = 0

∴ प्रायिकता = $\frac{0}{7} = 0$

iv) गेंद लाल न हो–

हलः गेंद लाल होने की प्रायिकता = $\frac{3}{7}$

गेंद लाल नहीं होने की प्रायिकता = $1 - \frac{3}{7} = \frac{7-3}{7} = \frac{4}{7}$

वैकल्पिक : गेंद लाल न हों अर्थात् काली हो

गेंद लाल न होने की प्रायिकता

∴ गेंद काली होने की प्रायिकता = $\frac{4}{7}$

v) बैग में से यदि एक गेंद निकाली जाए और वह लाल हो तथा उसे बैग में वापिस न रखी जाए तो बैग में से निकाली गई गेंद के काली होने की प्रायिकता–

हलः एक गेंद निकालने के पश्चात् शेष गेंद = 7-1 = 6

शेष गेंदों में काली गेंद की संख्या = 4 (पूर्वतया)

अनुकूल परिणाम = 4 कुल परिणाम = 6

∴ प्रायिकता = $\frac{4}{6} = \frac{2}{3}$

उपर्युक्त प्रश्न में लाल गेंद होने की प्रायिकता

अनुकूल परिणाम = शेष लाल गेदों की संख्या = 3–1 = 2

कुल परिणाम = 6

∴ प्रायिकता = $\frac{2}{6} = \frac{1}{3}$

Note. उपर्युक्त प्रश्न में एक गेंद निकालने के पश्चात् उसे वापिस बैग में नहीं रखे जाने के कारण कुल परिणामों की संख्या बदल गई है।

Ex.4 किसी टेनिस मैच में A के जीतने की प्रायिकता 0.62 है तो B के जीतने की क्या प्रायिकता होगी –

हलः यहाँ A व B एक साथ टेनिस मैच खेलते है तो

दोनों में से कोई एक मैच जीत जाएगा व दूसरा हार जाएगा

अर्थात् यह पूरक घटनाएँ है।

B के मैच जीतने की प्रायिकता

=A के मैच हारने की प्रायिकता

प्रश्नानुसार A के मैच जीतने की प्रायिकता = 0.62

A के मैच हारने की प्रायिकता = 1–0.62 = 0.38

B के मैच जीतने की प्रायिकता = 0.38

प्रायिकता बोर्ड परीक्षा में अंक भार = 4

व.अ. (गणित)
रा.आदर्श उ.मा.विद्यालय
गोहंदी (फागी), जयपुर
मो. 9468771788

प्रयास-2017

सांख्यिकी

❒ मनोज कुमार जाँगिड़

सांख्यिकी पढ़ाने का तरीका :सबसे पहले सांख्यिकी शब्द का अर्थ बताते हुए, व्यावहारिक जीवन में इसके उपयोग के बारे में बतावें। हमारे राष्ट्रीय स्तर पर Statistics Department के कार्य के बारे में बताएँ जिससे बच्चों की इस बारे में रुचि बढ़े। दिए गए आँकड़ों में से वह मान जो सभी आँकड़ों का प्रतिनिधित्व करे, इसके लिए हम तीन मापक माध्य, माध्यक व बहुलक के बारे में बताते हुए इनका व्यवहारीकरण करें।

माध्य:– बच्चों को बतावें की आप के घरों में भैंसें दूध देती हैं। जिसकी मात्रा अलग-अलग होती है। अगर सभी घरों के दूध को, चाहे वो कितना भी कम हो या कितना भी अधिक, एक टंकी में डाल दिया जावे और उस टंकी में से सभी घरों के लिए बराबर दूध बाँट दिया जाए, अब जो बराबर दूध दिया गया है वही माध्य है। अब आप विभिन्न अन्य उदाहरणों, जैसे अपने-अपने घरों की कुल Income से जोड़ सकते है। खेतों में अनाज की पैदावार से जोड़ सकते है। इसका मुख्य उद्देश्य है कि माध्य का Concept बच्चों के दिमाग में आ जाए। इसके पश्चात आप बच्चों को विभिन्न अन्तरालों के अन्दर समान चीजों के बारे में बताएँ।

उदाहरण : 100 घरों के आय सर्वे इस प्रकार है–

घरों की वार्षिक आय (रुपयों में)	घरों की संख्या	X_i	f_ix_i
0 - 10,0000	30	5000	150000
10,000 - 20,000	15	15000	225000
20,000 - 30,000	25	25,000	625000
30,000 - 40,000	10	35000	350000
40,000 - 50,000	12	45000	540000
50,000 - 60,000	8	55000	440000
कुल Σf_i	100	Σf_ix_i	2330000

Example में बच्चों को अगर बोला जाए कि उसके गाँव के 100 घरों की कुल वार्षिक Income बतावें। तो बच्चे इनके मध्य का मान लेकर गुणा करके फिर सबको जोड़कर कुल 2330000 रु. प्राप्त कर लेते है। अब बच्चों से बोलो कि इन रुपयों को सभी घरों (100) में बराबर बाँट दो। बच्चे इसमें 100 का भाग देते है तो $\frac{2330000}{100} = 23300$ रु. प्राप्त होते है ।

बंटन सारणी

मासिक खपत (इकाइयों में)	उपभोक्ताओं की संख्या	Xi	$u_i = \frac{x_i - a}{h}$ $l_i = \frac{x_i - 135}{20}$	f_iu_i	Cf संचयी बारम्बारता
65-85	4	75	-3	-12	4
85-105	5	95	-2	-10	9
105-125	13	115	-1	-13	22
125-145	20	135	0	0	42
145-165	14	155	1	14	56
165-185	8	175	2	16	64
185-205	4	195	3	12	68

अब बच्चों को बताएँ कि यही **माध्य** है। आँकड़ों का औसत ही माध्य है। वर्गीकृत आँकड़ों का मध्य मान लेकर, इसको बारम्बारताओं से गुणा कर सभी का योग कर लिया जाता है, फिर Σf का भाग दे दिया जाता है।

$$\bar{x} = \frac{f_1x_1+f_2x_2+f_3x_3+...+f_ix_i}{f_1+f_2+f_3+...+f_i} = \frac{\Sigma f_ix_i}{\Sigma f_i}$$

माध्यक : अब इसी में बताएँ कि अगर सभी रुपयों को आरोही क्रम में रखा जावे तब जो मध्य में आता है वही माध्यक है। ये प्रक्रिया के आँकड़े बच्चों को पता है परन्तु अगर अनजान गाँव के आँकड़े दिए जावे तो यह संभव नहीं है। इसके लिए जो तरीका है वो एक सूत्र के माध्यम से आता है।

$$\text{माध्यक} = l + \left(\frac{\frac{N}{2} - Cf}{f}\right) \times h$$

वह बीच वाला आँकड़ा जो सभी आँकड़ों का प्रतिनिधित्व करे।

अर्थात् पहले उसका व्यवहारीकरण करने के पश्चात् ही सूत्र की ओर लेकर जाएँ।

बहुलक : इसी उदाहरण में बताएँ कि गाँव की सबसे ज्यादा विद्युत खपत किस अन्तराल में है, बच्चों को पूछें कि किस वर्ग की बारम्बारता अधिक है। वे सभी तुरंत बताएँगे कि 125-145 अन्तराल में है। इस तरह व्यवहारीकरण के पश्चात फिर सूत्र की ओर लेकर जाएँ। $= l + \left(\frac{f_1-f_o}{2f_1-f_o-f_2}\right) \times h$

बच्चों को सूत्र के सभी प्रतीक चिह्नों के बारे में बताएँ।

विशेषत : 'माध्य' में प्रत्यक्ष विधि, कल्पित माध्य तथा पद विचलन विधि के महत्त्व पर गौर फरमाते हुए बताएँ कि इन सबका लक्ष्य माध्य ज्ञात करना ही है। बस इनके उपयोग से समय और गणना की बचत होती है। इसके लिए ऐसे उदाहरण दें जिससे इनके उपयोग स्वत: ही सिद्ध हो जाए।

उपुर्यक्त बारम्बारता बंटन सारणी किसी मोहल्ले के 68 उपभोक्ताओं की बिजली की मासिक खपत दर्शाती है इसके माध्य, माध्यक व बहुलक ज्ञात करना है।

माध्य $(\bar{x}) = a + \frac{\Sigma fiu_i}{\Sigma f} xh = 135 + \frac{7}{68} \times 20 = 135 + 2.0588$

जहाँ a = कल्पित माध्य = (135)

Σf = सभी बारम्बारताओं का योग =68

$\bar{x} = 137.06$ मात्रक

बहुलक $= l + \left(\frac{f_1 - f_o}{2f_1 - f_o - f_2}\right) x\ h$ $= 125 + \left(\frac{20 - 13}{2x20 - 13 - 14}\right) x\ 20$

$= 125 + \frac{7}{40 - 27} \times 20 = 125 + \frac{140}{13}$

$= 125 + 10.769$

$= 137.77$ लगभग मात्रक

l = बहुलक वर्ग की निम्न सीमा=125

f_1 = बहुलक वर्ग की बारम्बारता =20

f_0 = बहुलक वर्ग से पहले वाले वर्ग की बारम्बारता = 13

f_2 = बहुलक वर्ग से बाद वाले वर्ग की बारम्बारता = 14

h = वर्ग अन्तराल=20

माध्यक

l = माध्यक वर्ग की निम्न सीमा =125

$\frac{N}{2}$ = बारम्बारताओं के योग का आधा $= \frac{68}{2} = 34$

c.f = माध्यक वर्ग से पहले वाले वर्ग की संचयी बारम्बारता=22

f = माध्यक वर्ग की बारम्बारता =20

h = वर्ग अन्तराल =20

माध्यक $= l + \left(\frac{\frac{N}{2} - Cf}{f}\right) x\ h$

$= 125 + \frac{34 - 22}{20} \times 20$

$= 125 + 12 = 137$ मात्रक

विशेषतः

1. कल्पित माध्य लगभग मध्य का ले तो गणना सरल हो जाती है।
2. अगर d लेने के पश्चात् किसी भी बड़ी से बड़ी संख्या से भाजित हो जावे तो उसको h के रूप में लेते है। अर्थात् सार्व गुणनखण्ड का भाग देते है।
3. माध्यक वर्ग में $\frac{N}{2}$ का मान से अधिक वाला, निकटतम संचयी बारम्बारता का वर्ग लेवें।

व.अ. (गणित)
रा.मा.वि., लालपुर (नदबई), भरतपुर
मो : 8290783964

राजस्थान गौरव (इंस्पायर अवार्ड-2016 अ.भा. स्तर पर)

द्वितीय स्थान

Name of the Project : The Effective Utilization Of Lpg

Name of the Awardee : SHIBAJOYI CHAUDHURY

Parents's Name : Mr. S.B. Choudhury

Class : 8th

School name & Address : Disha Delphi Public School

Name of the Teacher : Mr. Jahid Saiyad

Name of the District & State : Kota District, Rajasthan

A Brief write up on the project :

In my model I have tried to collect the radiated head which is coming out from gas burner. I have put copper tubes around the burner since is a good conductor of heat it will absorb the radiated head and copper tube will get heated up we will put water in the copper tube so water also will get heated up. Another idea is cooling system of water in which water will get cooled as LPG in copper tube will pass through water and make the water cool. Another idea is automatic flame reducer. In which as utensil will be kept flame of the burner will increase automatically and as utensil is taken out flame will decrease automatically I have many ideas more. All ideas are shown in my model.

चतुर्थ स्थान

Name of the Project : वाइब्रेटिंग व्हीकल

Name of the Awardee : सुमित शर्मा

Parents's Name : प्रकाश चन्द्र जी शर्मा

Class : 8th

School name & Address : रा.आ.उ.मा.वि. आड़

Name of the Teacher : हेमन्त खाण्डिया

Name of the District & State : प्रतापगढ़ (राजस्थान)

A Brief write up on the project :

यह कंपन की शक्ति पर आधारित है। इस मॉडल में कम घर्षण वाली सतह पर गति करने की क्षमता है। जब हम अंतरिक्ष में किसी ग्रह पर जाते है जहाँ घर्षण बहुत ही कम हो तो वहाँ गति के लिए यह मॉडल बहुत उपयोगी हैं इसमें जो पंखे लगे है वे इसे कंपित करते हैं जिससे यह गति करता हैं यह मॉडल माननीय नरेन्द्र मोदी जी द्वारा संचालित स्वच्छ भारत मिशन में भी सहायक है। अपने भारत में लोग सफाई के कार्य में बहुत पीछे है। यह मॉडल रोड़ या शहर में धूल-कंकड साफ करने में भी सहायक है। यह मॉडल विश्व में भारत को पुनः वह पुरानी विशिष्टता हासिल करवा सकता है। यह मॉडल अंतरिक्ष में ग्रहों पर गति के कार्य में बहुत उपयोगी सिद्ध होगा।

आदेश-परिपत्र : फरवरी, 2017

● **1.** कक्षा 10 के बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु अभिनव कार्य योजना 'प्रयास 2017' ● **2.** 'शिक्षा समाधान वेब पोर्टल' का प्रारम्भ-विभागीय कार्मिकों के बकाया प्रकरणों के त्वरित निस्तारणार्थ। ● **3.** राजस्थान सिविल सेवा (पेंशन) नियम-1996 के नियम-78 के नीचे दिए गए सेवानिवृत्ति के आदेश का प्रारूप 6 के सम्बन्ध में। ● **4.** अधिकारी/कर्मचारियों के स्थानान्तरण पर यात्रा भत्ता एवं कार्यग्रहण काल दिए जाने के सम्बन्ध में। ● **5.** सभी राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में पं. दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वाङ्मय का क्रय किए जाने के संबंध में। ● **6.** आरटीई एक्त 2009 की धारा 12(1)(ग) के प्रावधानान्तर्गत गैर सरकारी विद्यालयों में 25 प्रतिशत निःशुल्क शिक्षा हेतु प्रवेशित बालकों की प्रतिबालक प्रतिपूर्ति पुनर्भरण राशि का किश्तवार भुगतान किए जाने पर नियमानुसार किश्तवार ऑडिट कार्य करने के सम्बन्ध में। ● **7.** मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय द्वारा वर्ष 2011-12 में अध्यापकों के बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा के अन्तर्गत देय वित्तीय सहायता राशि स्वीकृति हेतु। ● **8.** मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा वर्ष 2012-13 में अध्यापकों के बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा के अन्तर्गत देय वित्तीय राशि स्वीकृति बाबत।

1. कक्षा 10 के बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु अभिनव कार्य योजना- 'प्रयास 2017'

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-मा/माध्य/निप्र/नवाचार/2017/32 दिनांक : 11.01.2017

1. प्रस्तावना – माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, राजस्थान, बीकानेर के तत्वावधान में माध्यमिक परीक्षा-2017 में बोर्ड परीक्षा परिणामों में संख्यात्मक एवं गुणात्मक सुधार हेतु अभिनव कार्य योजना निर्मित की गई है। निदेशालय द्वारा इस हेतु कक्षा 10 की माध्यमिक परीक्षा-2016 के परिणामों का विशद् विश्लेषण एवं गहन समीक्षा उपरांत यह तथ्य उभर कर सामने आया कि राजकीय विद्यालयों में कक्षा 10 के परीक्षा परिणाम के संख्यात्मक व गुणात्मक रूप से न्यून रहने के मूल में गणित, अंग्रेजी व विज्ञान विषयों में विद्यार्थियों का कमजोर प्रदर्शन है। इस योजना का मूल उद्देश्य राज्य के राजकीय विद्यालयों में कक्षा 10 के परीक्षा परिणाम का गुणात्मक एवं मात्रात्मक दृष्टि से उन्नयन करना है। इस हेतु निदेशालय स्तर पर किए गए अध्ययन में सम्पूर्ण राज्य में इन तीनों लक्षित विषयों (गणित, अंग्रेजी व विज्ञान) में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले राजकीय विद्यालयों (जिनमें लक्षित विषय में 75 प्रतिशत या अधिक विद्यार्थियों द्वारा प्रथम श्रेणी के अंक प्राप्त किए गए) को चिह्नित किया जाकर उन्हें संबंधित विषय में MENTOR (मार्गदर्शक) माना जाकर न्यून परिणाम देने वाले विद्यालयों के विद्यार्थियों हेतु अकादमिक संबलन प्रदान करने का दायित्व दिया जाने का निर्णय किया गया है। उक्त क्रम में तीनों लक्षित विषयों में न्यून परीक्षा परिणाम (जिनका परीक्षा परिणाम 25 प्रतिशत से न्यून रहा है) वाले राजकीय विद्यालयों को (मण्डल/जिलेवार संलग्न सूची के अनुसार) प्रयास-2017 के तहत चिह्नित किया जाकर समग्र परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु विशिष्ट कार्य योजना में सम्मिलित किया गया है। उक्त योजना का विशिष्ट उद्देश्य अपेक्षाकृत कठिन पाए गए इन तीनों विषयों में विद्यार्थियों की वर्तमान समझ में अभिवृद्धि कर परीक्षा परिणामों की गुणवत्ता में सुधार लाना है। इस हेतु समस्त विद्यालयों में विद्यार्थियों एवं अध्यापकों को विशिष्ट शैक्षिक सामग्री उपलब्ध करवाई जाएगी। MENTOR (मार्गदर्शक) शिक्षकों द्वारा प्रयुक्त और अनुभूत नवाचारी शिक्षण विधा की जानकारी विषयाध्यापकों को दी जाएगी, जिसका अनुप्रयोग परीक्षा प्रारम्भ होने की समयावधि तक अभियान स्तर पर किया जाना है।

2. अवधि- इस कार्य योजना की अवधि माध्यमिक परीक्षा प्रारम्भ होने से पूर्व 08 मार्च 2017 तक रहेगी।

3. दायित्व –

अ. निदेशालय स्तर-प्रयास-2017 के प्रभावी प्रबोधन हेतु निदेशालय स्तर पर उपनिदेशक (माध्यमिक) सम्पूर्ण राज्य हेतु नोडल अधिकारी के रूप में कार्य करेंगे। वे इस कार्य योजना के सम्पूर्ण राज्य में सुचारू संचालन हेतु सतत् पर्यवेक्षण एवं मोनिटरिंग करेंगे।

लक्षित विषयों के परीक्षा परिणाम के मात्रात्मक एवं गुणात्मक सुधार हेतु अग्रांकित मण्डल उपनिदेशकों को विषयवार नोडल अधिकारी नियुक्त किया जाता है। इन्हें सहयोग प्रदान करने के लिए सहायक नोडल अधिकारी तथा अकादमिक सहयोग हेतु नाम के समक्ष अंकितानुसार अकादमिक संस्थाओं को दायित्वबद्ध किया जाता है:-

विषयवार नियुक्त नोडल अधिकारियों द्वारा उक्त दायित्व मण्डल

क्र. सं.	विषय	विषयवार नोडल अधिकारी	सहायक नोडल अधिकारी	अकादमिक सहयोग
1.	विज्ञान	मण्डल उपनिदेशक, माध्यमिक शिक्षा, अजमेर	जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक–द्वितीय, अजमेर	राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान, अजमेर
2.	गणित	मण्डल उपनिदेशक, माध्यमिक शिक्षा, जोधपुर	1. जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक–प्रथम, जोधपुर 2. श्री राधेश्याम शर्मा जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक, चित्तौड़गढ़	काबरा शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय (सीटीई), जोधपुर।
3.	अंग्रेजी	मण्डल उपनिदेशक, माध्यमिक शिक्षा,बीकानेर	जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक, हनुमानगढ़	अंग्रेजी भाषा शिक्षण संस्थान, बीकानेर

अधिकारी के दायित्वों के अतिरिक्त निभाया जाना है। वे इस हेतु निदेशालय द्वारा उपलब्ध करवाई गई विषयवार उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम देने वाले विद्यालयों के संबंधित विषय के शिक्षकों की राज्य स्तरीय कार्यशाला संलग्न समय सारिणी के अनुरूप आयोजित करेंगे। इन कार्यशालाओं में जिला स्तरीय कार्यशालाओं में MENTOR शिक्षकों द्वारा तैयार की गई परीक्षोपयोगी सामग्री का संबंधित शिक्षकों द्वारा प्रस्तुतीकरण किया जाएगा। प्रस्तुत सामग्री की समीक्षा विषय विशेषज्ञों द्वारा की जाएगी। राज्य स्तरीय कार्यशाला में उपस्थित विषय विशेषज्ञों द्वारा गहन विश्लेषणोपरांत परीक्षोपयोगी अध्ययन सामग्री को अंतिम रूप दिया जाएगा, जो प्रत्येक स्तर के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी हो सके। यह अध्ययन सामग्री विषय विशेष के गत वर्षों के प्रश्न-पत्रों तथा बोर्ड पैटर्न के आधार पर तैयार की जाएगी। इस सामग्री की सॉफ्ट व हार्ड प्रति तैयार की जाएगी। इस सामग्री को समस्त राज्य के विद्यालयों में भिजवाया जाएगा।

ब. मण्डल स्तर–समस्त मंडल उपनिदेशक (माध्यमिक) कार्य योजना 'प्रयास-2017' की सुचारू क्रियान्विति हेतु क्षेत्राधिकार (मण्डल) के नोडल अधिकारी होंगे। ये अधिकारी अपने क्षेत्राधिकार में इस कार्य योजना के प्रभावी संचालन के लिए उत्तरदायी होंगे। इस बाबत् बोर्ड परीक्षा प्रारम्भ होने तक सप्ताहवार अग्रिम योजना बनाकर तद्नुरूप परिवीक्षण करेंगे। इन परिवीक्षणों में न्यून परिणाम वाले विद्यालयों को प्राथमिकता प्रदान करते हुए अवलोकनोपरांत वांछित सम्बलन एवं सहयोग प्रदान किया जाना सुनिशिचित करेंगे। उक्त कार्य योजना को परिणामोन्मुखी बनाए जाने की सुनिशिचितता हेतु सम्पूर्ण मंडल के राजकीय विद्यालयों में इसके नियमित संचालन एवं प्रबोधन हेतु मण्डल कार्यालय में नियंत्रण कक्ष की स्थापना करेंगे, जिसके प्रभारी मण्डल कार्यालय में कार्यरत सहायक निदेशक होंगे।

स. जिला स्तर–जिला स्तर पर इस कार्य योजना के प्रभावी संचालन, प्रबोधन तथा प्रतिदिन आधार पर निर्मित कार्य योजना के क्रियान्वयन एवं सतत् पर्यवेक्षण का दायित्व जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय में कार्यरत अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी (शैक्षिक प्रकोष्ठ) का होगा। उक्त कार्य में एडीपीसी (रमसा) द्वारा परिवीक्षण एवं प्रबोधन हेतु समुचित सहयोग प्रदान किया जाएगा। संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा उक्त सम्बन्ध में दोनों अधीनस्थ अधिकारियों को दायित्वबद्ध किया जाना सुनिश्चित किया जाए।

जिला शिक्षा अधिकारी स्वयं विद्यालयों में संचालित कार्य योजना 'प्रयास-2017' की क्रियान्विति का अधिकाधिक अवलोकन करते हुए सम्बलन प्रदान करेंगे। जिला शिक्षा अधिकारी अपने क्षेत्राधिकार के समस्त विद्यालयों में उक्त महत्त्वपूर्ण शैक्षिक कार्य योजना के सार्थक संचालन हेतु अनुकूल वातावरण विकसित करने के लिए समस्त संस्था प्रधानों को प्रेरित करने का कार्य करेंगे तथा इस हेतु विद्यालय की सारभूत आवश्यकताओं एवं समस्याओं की यथासम्भव पूर्ति/निराकरण करने हेतु सम्बलन प्रदान करेंगे। जिला शिक्षा अधिकारी संबंधित लक्षित विषयों के नोडल अधिकारियों से शैक्षिक/अध्ययन सामग्री प्राप्त कर संलग्न समय-सारिणी के अनुरूप क्षेत्राधिकार के विद्यालयों को वितरित करने हेतु उत्तरदायी होंगे।

समस्त जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, राजस्थान, बीकानेर के तत्वावधान में माध्यमिक परीक्षा-2017 हेतु बोर्ड परीक्षा परिणाम में संख्यात्मक एवं गुणात्मक सुधार हेतु निर्मित अभिनव कार्य योजना के तहत दिनांक 10.01.2017 को संबंधित मण्डल/जिला मुख्यालयों पर स्थित डी.एल.एस.आर. में आयोजित बैठक में पारस्परिक विमर्श पश्चात लिए गए निर्णय के तहत क्षेत्राधिकार में अग्रांकित विवरणानुसार कार्यवाही सम्पादित की जानी सुनिश्चित करेंगे :-

- संलग्न सूची में वर्णित वर्ष 2016 की माध्यमिक परीक्षा में गणित, अंग्रेजी तथा विज्ञान विषयों में उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम देने वाले विद्यालयों के तत्समय कार्यरत विषयाध्यापकों (जिन्हें विभाग द्वारा प्रयास-2017 कार्य योजना हेतु MENTOR शिक्षक नामांकित किया गया है)से तत्काल सम्पर्क कर संलग्न प्रपत्र की पूर्ति करवाएँगे।
- MENTOR शिक्षक द्वारा प्रपत्र में दर्शाए गए रुचि के प्रकरण/पाठ/TOPIC पर माध्यमिक परीक्षा-2017 को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों के लिए उपयोगी लघु पाठ्य/अध्ययन सामग्री विकसित करने के लिए (समान रुचि के प्रकरण/पाठ/Topic वाले शिक्षकों के समूह तैयार करते हुए) कार्यशाला आयोजित करवाएँगे। इन कार्यशालाओं में विषयवार निर्मित सामग्री को संबंधित शिक्षक विषयवार आयोजित राज्य स्तरीय कार्यशालाओं में प्रस्तुत करेंगे।
- जिन जिलों में दो जिला शिक्षा अधिकारी कार्यरत हैं, उन जिलों में जिला शिक्षा अधिकारी-प्रथम जिला स्तर पर उक्त कार्यशाला आयोजन का सम्पूर्ण दायित्व निर्वहन करेंगे तथा जिला शिक्षा अधिकारी-द्वितीय उक्त कार्य संपादन में वांछित सहयोग प्रदान करेंगे।
- **अध्ययन सामग्री तैयार करवाते समय ध्यान रखने योग्य बिन्दु :-**
- यह सामग्री प्रकरण वार तथा बोर्ड पाठ्यक्रम में प्रदत्त अंक भार के अनुसार हो।
- सामग्री तैयार करते समय बोर्ड प्रश्नपत्र के ब्ल्यूप्रिंट को ध्यान में रखा जाए।
- यह सामग्री इस प्रकार से निर्मित की जाए, जिससे कमजोर लब्धि वाले विद्यार्थी अपने प्रदर्शन में सुधार कर सके तथा अच्छी और उत्कृष्ट लब्धि वाले विद्यार्थी भी अपनी लब्धि को उच्चतम स्तर तक ले जा सके।
- इस सामग्री में विषयवस्तु के साथ MENTOR शिक्षक द्वारा प्रयोग में लाई जा रही तकनीक का भी उल्लेख हो।
- इस सामग्री की भाषा सरल और बोधगम्य हो ताकि प्रत्येक स्तर का विद्यार्थी इसका उपयोग आसानी से कर सके।
- सामग्री में प्रश्नों के हल करने के उचित तरीको का विवरण हो, जिससे विद्यार्थी की लब्धि में वृद्धि हो सके।
- MENTOR शिक्षकों द्वारा जटिल प्रत्ययों को याद रखने के लिए सुझाए गए शॉर्टकट तरीकों का भी उल्लेख हो, जिससे समस्त स्तर के विद्यार्थी इसे ग्राह्य कर अपनी लब्धि में वृद्धि कर सके।
- सामग्री में विषय से संबंधित उन बातों का उल्लेख भी हो, जिनके सामान्य प्रयोग से विद्यार्थी अपनी लब्धि में वृद्धि कर सके।

द. विद्यालय स्तर–संस्था प्रधानों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे विद्यालय में अनुकूल और प्रेरक वातावरण का निर्माण कर विद्यार्थियों के

शैक्षिक उत्थान एवं परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु निर्मित कार्य योजना 'प्रयास-2017' के प्रभावी संचालन हेतु एवं अपेक्षित परिणाम प्राप्त करने हेतु समस्त स्टाफ को प्रेरित करने में निर्णायक भूमिका का निर्वहन करेंगे।

संस्था प्रधान अध्यापक-अभिभावक परिषद की आगामी 16 जनवरी को आयोज्य बैठक में अभिभावकों को इस कार्य योजना बाबत् विस्तृत जानकारी देंगे तथा कार्य योजना की क्रियान्विति अवधि में कक्षा 10 की बोर्ड परीक्षा में प्रविष्ट होने वाले विद्यार्थियों की विद्यालय में शत-प्रतिशत उपस्थिति हेतु अभिभावकों को प्रेरित करेंगे। संबंधित संस्था प्रधान का दायित्व होगा कि वे जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय से प्राप्त विद्यार्थियों के अध्ययन-अध्यापन हेतु प्रदत्त विशिष्ट शैक्षिक सामग्री का उपयोग करते हुए समस्त विषयों के पाठ्यक्रम दोहरान (Rivision) करवाएँगे। संस्था प्रधान प्रत्येक सप्ताह अध्ययन करवाए गए विषय हेतु साप्ताहिक टैस्ट लिए जाने की व्यवस्था सुनिश्चित करेंगे।

4. कार्य योजना हेतु समय-सारिणी

क्र. सं.	सम्पादित की जाने वाली कार्यवाही का विवरण	निर्धारित तिथि
1.	संस्था प्रधान एवं स्टाफ द्वारा कक्षा 10 के समस्त विद्यार्थियों की शैक्षिक लब्धि के सम्बन्ध में अभिभावकों को अवगत करवाना। बैठक में अभिभावकों को इस कार्य योजना बाबत् विस्तृत जानकारी दिया जाना तथा कार्य योजना की क्रियान्विति अवधि में कक्षा 10 की बोर्ड परीक्षा में प्रविष्ट होने वाले विद्यार्थियों की विद्यालय में शत-प्रतिशत उपस्थिति हेतु अभिभावकों को प्रेरित करना।	16.01.17
2.	समस्त जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा माध्यमिक परीक्षा में गणित, अंग्रेजी तथा विज्ञान विषयों में उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम देने वाले विद्यालयों के तत्समय कार्यरत विषयाध्यापकों (जिन्हें विभाग द्वारा प्रयास-2017 कार्य योजना हेतु MENTOR शिक्षक नामांकित किया गया है) की कार्यशालाओं का आयोजन।	दिनांक: 17.01.17 से 21.01.17 के मध्य
3.	विज्ञान विषय हेतु राज्य स्तरीय कार्यशाला का अजमेर में आयोजन।	दिनांक: 23.01.17
4.	गणित विषय हेतु राज्य स्तरीय कार्यशाला का जोधपुर में आयोजन।	दिनांक: 27.01.17
5.	अंग्रेजी विषय हेतु राज्य स्तरीय कार्यशाला का हनुमानगढ़ में आयोजन।	दिनांक: 31.01.17
6.	सामग्री की सॉफ्ट प्रति Ms word में तैयार करवाई जाए तथा इसमें देवनागरी लिपि हेतु DevLys 010 फॉन्ट व अंग्रेजी लिपि हेतु Times New Roman फॉन्ट का प्रयोग कर तैयार की जाए तथा उसे राज्य के समस्त उपनिदेशकों तथा जिला शिक्षा अधिकारियों को तत्काल उपलब्ध करवाया जाए।	दिनांक: 24.01.17 से कार्यशालाओं के समापन तक
7.	जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा प्राप्त अध्ययन/शैक्षिक सामग्री को क्षेत्राधिकार के समस्त विद्यालयों में वितरित करना।	दिनांक: 24.01.17 से सामग्री प्राप्ति तक
8.	विद्यालयों में कक्षा 10 के समस्त विद्यार्थियों के लिए आवश्यकतानुसार उपचारात्मक शिक्षण तथा गहन अध्यापन कार्यक्रम का नियमित संचालन। इस दौरान प्रयास-2017 के तहत प्राप्त सामग्री का व्यापक उपयोग किया जाए।	दिनांक: 25.01.17 से 25.2.17 तक
9.	बोर्ड पैटर्न पर प्री-बोर्ड परीक्षा का आयोजन। परिणाम के सम्बन्ध में प्रत्येक विद्यार्थी से व्यक्तिश: बातचीत कर उन्हें उसके Weak Points से अवगत करवाना तथा इस हेतु विशेष प्रयास करने हेतु प्रेरित करना।	दिनांक: 26.02.17 से 28.02.17
10.	प्री-बोर्ड परीक्षा में विद्यार्थियों के प्रदर्शन के आधार पर विषयवार Weak Points के आधार पर विद्यार्थियों को विद्यालय में बुलाकर सुपरवाइज्ड स्टडी (संबंधित विषयाध्यापक द्वारा सम्मुख बैठा कर) करवाया जाना।	दिनांक: 02.03.17 से बोर्ड परीक्षा प्रारम्भ होने तक

● **(बी.एल. स्वर्णकार)** आई.ए.एस., निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

2. 'शिक्षा समाधान वेब पोर्टल' का प्रारम्भ-विभागीय कार्मिकों के बकाया प्रकरणों के त्वरित निस्तारणार्थ।

● राजस्थान सरकार, स्कूल शिक्षा एवं भाषा विभाग ● परिपत्र ● शिक्षा विभाग में कार्यरत/सेवानिवृत्त शिक्षकों/कर्मचारियों की सेवा सम्बन्धी एवं अन्य समस्याओं/परिवेदनाओं (चयनित वेतनमान स्वीकृति, वरिष्ठता लाभ, अवकाश स्वीकृति, वेतन वृद्धि, पदोन्नति, एरियर लाभ, पेंशन लाभ इत्यादि) को विभाग के सक्षम स्तर से त्वरित गति से समाधान करने के उद्देश्य से माननीय शिक्षा राज्यमंत्री महोदय के निर्देशानुसार 'शिक्षा समाधान वेब पोर्टल' **www.shikshasamadhan.org** दिसम्बर 2015 से प्रारम्भ किया गया है।

राज्य स्तर पर प्रभावी मॉनिटरिंग के लिए शिक्षा संकुल, जवाहरलाल नेहरु मार्ग, जयपुर में शिक्षा समाधान केन्द्र की स्थापना की गई है जिसमें 4 कम्प्यूटर दक्ष कार्मिक एम.आई.एस. अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। इस केन्द्र से अधीनस्थ कार्यालयों को तकनीकी सहायता उपलब्ध करायी जा रही है, जिससे पोर्टल पर दर्ज समस्याओं का ऑनलाइन निस्तारण किया जा सके। प्रभावी मॉनिटरिंग हेतु उप निदेशक, प्रारंभिक शिक्षा, जयपुर को नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया है।

शिक्षा समाधान केन्द्र से दूरभाष 0141-2711905, मोबाइल नं. 9024998080, 9351902070 पर सम्पर्क किया जा सकता है। उप निदेशक/जिला शिक्षा अधिकारी/ब्लॉक प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी स्तर पर सम्बन्धित कार्यालय में शिक्षा समाधान पोर्टल पर दर्ज समस्याओं के ऑनलाइन समाधान हेतु किसी एक कार्मिक को प्रभारी नियुक्त करें एवं पोर्टल पर दर्ज परिवेदनाओं पर व्यक्तिगत ध्यान देकर 15 दिवस में अनिवार्यतः ऑनलाइन निस्तारण करें। समस्त उप निदेशक (प्रारम्भिक/माध्यमिक) जिला शिक्षा अधिकारी (प्रारम्भिक/माध्यमिक) एवं ब्लॉक प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी कार्यालय को दिसम्बर 2015 में ही लॉग इन आईडी एवं पासवर्ड जारी किए जा चुके हैं, इसके बावजूद

अतिरिक्त जानकारी हेतु इस सम्बन्ध में शिक्षा समाधान केन्द्र के दूरभाष नं. पर सम्पर्क करें।

राज्य/संभाग/जिला स्तरीय अधिकारी मासिक समीक्षा बैठकों में शिक्षा समाधान पोर्टल पर दर्ज परिवेदनाओं के निस्तारण की प्रभावी मॉनिटरिंग एवं समीक्षा करेंगे। निश्चित समयावधि में दर्ज समस्या का ऑनलाइन समाधान नहीं होने पर सम्बन्धित अधिकारी को दोषी मानकर उनके विरुद्ध सीसीए नियमों के तहत विभागीय कार्यवाही प्रस्तावित की जावेगी। वर्तमान में शिक्षा समाधान पोर्टल पर आपके कार्यालय से सम्बन्धित दर्ज परिवेदनाओं का 15 दिवस में अनिवार्यतः ऑनलाइन निस्तारण करें।

● शासन सचिव, स्कूल शिक्षा एवं भाषा विभाग, ● क्रमांक : उनि./प्राशि./जय/लेखा-4/फा.शिक्षा समाधान/2016/89 दिनांकः 16.12.2016 ● कार्यालय-निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/माध्य/अभिलेख/5916/2017 दिनांक 10.1.2017

3. राजस्थान सिविल सेवा (पेंशन) नियम-1996 के नियम-78 के नीचे दिए गए सेवानिवृत्ति के आदेश का प्रारूप 6 के सम्बन्ध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा-माध्य/पेंशन-अ/34928/09 दिनांक 11.1.2017 ● परिपत्र। ● विषय : राजस्थान सिविल सेवा (पेंशन) नियम-1996 के नियम-78 के नीचे दिए गए सेवानिवृत्ति के आदेश का प्रारूप 6 के सम्बन्ध में।

वित्त (नियम) विभाग के परिपत्र क्रमांक-प.12 (6) वित्त/नियम/008 दिनांक 24.03.2015 द्वारा प्रतिस्थापित प्रारूप-6 के अनुच्छेद 2 (3) में अंकित कोई न्यायिक कार्यवाहियाँ विचाराधीन/लम्बित नहीं है। आशय बाबत राज्य सेवक की सेवानिवृत्ति के समय उक्त प्रारूप-6 की पूर्ति किए जाते समय विभागों/कार्यालयाध्यक्षों को इस अनुच्छेद 2 (3) की पूर्ति के सम्बन्ध में आ रही व्यावहारिक कठिनाइयों का ध्यान रखते हुए यह स्पष्ट किया जाता है कि कोई न्यायिक कार्यवाहियाँ विचाराधीन है/लम्बित नहीं है से आशय कार्मिक द्वारा सेवा के दौरान राजकीय कार्य के निष्पादन के दौरान ऐसा कोई कृत्य/कार्य नहीं किया गया है जिसके कारण कार्मिक के विरुद्ध कोई अभियोजन स्वीकृति जारी की गई हो। इससे भिन्न यदि कोई न्यायिक प्रकरण किसी कार्मिक के विरुद्ध विचाराधीन/लम्बित है तो उसकी सूचना पेंशन प्रकरण के निस्तारण हेतु अपेक्षित नहीं होगी। इसकी कठोरता से पालना की जावे।

● वित्तीय सलाहकार, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

4. अधिकारी/कर्मचारियों के स्थानान्तरण पर यात्रा भत्ता एवं कार्यग्रहण काल दिए जाने के सम्बन्ध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा-माध्य/पेंशन-अ/34928/09 दिनांक 11.1.2017 ● परिपत्र। ● विषय : अधिकारी/कर्मचारियों के स्थानान्तरण पर यात्रा भत्ता एवं कार्यग्रहण काल दिए जाने के सम्बन्ध में।

प्रशासनिक सुधार एवं समन्वय विभाग की समसंख्यक आज्ञा दिनांक 09 दिसम्बर, 2016 द्वारा राजकीय अधिकारियों/कर्मचारियों के स्थानान्तरण/पदस्थापन में कार्यग्रहण अवधि (Joining Time) देय नहीं होगी, के संदर्भ में पूर्व प्रसारित आदेश में निम्नानुसार संशोधन किया गया है:-

1. प्रशासनिक आधार अथवा राज्य हित में किए गए स्थानान्तरण आदेश (चाहे उक्त आधारों का अंकन आलोच्य आदेशों में किया गया है या नहीं) वाले समस्त प्रकरणों में राजस्थान सिविल सेवा (कार्यग्रहण काल) नियम-1981 नियम 4 (1) के प्रावधानों के अनुसार कार्यग्रहण काल अनुज्ञेय होगा।
2. प्रशासनिक आधार अथवा राज्यहित का उल्लेख नहीं किए जाने वाले स्थानान्तरण/पदस्थापन प्रकरणों में राजस्थान यात्रा भत्ता नियम-1971 के प्रावधानों के अनुसार यात्रा भत्ता देय होगा एवं राज्य हित में किए गए स्थानान्तरण पर यात्रा भत्ता एवं कार्यग्रहण काल दिए जाने के सम्बन्ध में वित्त (नियम) विभाग द्वारा जारी निर्देश परिपत्र संख्या F.7(3)FD (Rules)/98 Dated 02.08.2005 &F.12 (6) FD (Rules)/05 dated 21.08.2007 के अनुसार देय होगा।

● वित्तीय सलाहकार माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

5. सभी राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में पं. दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वाङ्मय का क्रय किए जाने के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः उनि/सशि/पत्र-पत्रिका/राज्य निर्देश/एफ-2005/15-16/344/ दिनांक : 16.01.2017 ● 1. उपनिदेशक माध्यमिक, समस्त मण्डल, 2. समस्त जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक, 3. समस्त संस्था प्रधान राज. माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालय ● विषयःसभी राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में पं. दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वाङ्मय का क्रय किए जाने के संबंध में।

राज्य सरकार के आदेश पं. 2(1) शिक्षा-6/2008 पार्ट जयपुर दिनांक 26.12.16 के निर्देशानुसार राज्य में संचालित राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों के पुस्तकालयों/वाचनालयों में विकास कोष में राशि की उपलब्धता होने पर प्रभात प्रकाशन द्वारा प्रकाशित 'पं. दीनदयाल उपाध्याय की जन्मशती के अवसर पर उनके समस्त भाषण, उद्बोधन तथा लेखों के 15 खंड के सम्पूर्ण वाङ्मय' खरीदने की स्वीकृति प्रदान की जाती है। जिन विद्यालयों में भाषा एवं पुस्तकालय विभाग के सहयोग से सार्वजनिक पुस्तकालय संचालित हैं उनमें इस वाङ्मय सैट का क्रय भाषा एवं पुस्तकालय विभाग द्वारा किया जाएगा।

अपने अधीनस्थ संबंधित अधिकारियों/विद्यालयों को उक्त संबंध में निर्देशित करते हुए पालना से अवगत करावें।

क्र.सं.	पुस्तक का नाम	प्रकाशक का नाम एवं पता
01	पं. दीनदयाल उपाध्याय के सम्पूर्ण वाङ्मय	प्रभात प्रकाशन, 4/19 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002 फोन नम्बरः 011-23289555

● संलग्नः उपर्युक्तानुसार

● उपनिदेशक, समाज शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

6. आरटीई एक्ट 2009 की धारा 12(1)(ग) के प्रावधानान्तर्गत गैर सरकारी विद्यालयों में 25 प्रतिशत निःशुल्क शिक्षा हेतु प्रवेशित बालकों की प्रतिबालक प्रतिपूर्ति पुनर्भरण राशि का किश्तवार भुगतान किए जाने पर नियमानुसार किश्तवार ऑडिट कार्य करने के सम्बन्ध में।

● कार्यालय निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/प्रारं/आरटीई/सी/ऑडिट/18871/14-15/264/दिनांक 2-12-2015 ● उप निदेशक प्रारम्भिक/माध्यमिक शिक्षा (समस्त) ● विषय : आरटीई एक्त 2009 की धारा 12(1)(ग) के प्रावधानान्तर्गत गैर सरकारी विद्यालयों में 25 प्रतिशत निःशुल्क शिक्षा हेतु प्रवेशित बालकों की प्रतिबालक प्रतिपूर्ति पुनर्भरण राशि का किश्तवार भुगतान किए जाने पर नियमानुसार किश्तवार ऑडिट कार्य करने के सम्बन्ध में। ● प्रसंग : शिक्षा उप निदेशक (माध्यमिक) जयपुर के पत्रांक शिउनि/मा/जय/लेखा-1/फा-एजी/165/2015 दिनांक 17.11.15 एवं निदेशालय के समसंख्यक पत्रांक 197 दिनांक 27.5.14, पत्रांक 75 दिनांक 03.2.15 एवं पत्रांक 101 दिनांक 19.8.15।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत एवं प्रासंगिक पत्र के संबंध में निर्देशित किया जाता है कि आरटीई एक्ट 2009 की धारा 12(1)(ग) के प्रावधानान्तर्गत गैर सरकारी विद्यालयों में दुर्बल वर्ग एवं असुविधाग्रस्त समूह के बालकों को विद्यालय की एंट्री लेवल कक्षा में कुल प्रवेशित बालकों के 25 प्रतिशत की सीमा तक निःशुल्क शिक्षा हेतु प्रवेश उपरान्त सत्यापित बालकों के संबंध में गैर सरकारी विद्यालयों को प्रतिबालक प्रतिपूर्ति की पुनर्भरण राशि का भुगतान गैर सरकारी विद्यालयों के बैंक खातों में किए जाने का प्रावधान है। राजस्थान निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार नियम, 2011 के नियम 11 एवं राज्य सरकार द्वारा समय-समय पर जारी निर्देशों की पालना में संबंधित बीईईओ/डीईओ प्राशि/माशि कार्यालयों द्वारा पुनर्भरण की राशि गैर सरकारी विद्यालयों के बैंक खातों में अन्तरित की जाती है। **राज्य सरकार ने दिनांक 29.3.11 को अधिसूचना जारी कर दुर्बल वर्ग एवं असुविधाग्रस्त समूह को परिभाषित किया है।**

निदेशालय के समसंख्यक पत्रांक 197 दिनांक 27.5.14, पत्रांक-75 दिनांक 03.2.15 एवं पत्रांक 101 दिनांक 19.8.15 के द्वारा उप निदेशक प्रारम्भिक शिक्षा/माध्यमिक शिक्षा कार्यालय स्तर पर अंकेक्षण दलों का गठन किया जाकर अंकेक्षण (ऑडिट) कार्य सम्पादित करने तथा ऑडिट रिपोर्ट संबंधित निदेशालय प्रारम्भिक/माध्यमिक शिक्षा को प्रेषित करने हेतु निर्देशित किया गया था परन्तु आदिनांक तक उप निदेशक कार्यालयों से ऑडिट रिपोर्ट निदेशालयों को अप्राप्त रही है। इस संबंध में उप निदेशक माध्यमिक जयपुर ने अपने पत्रांक 165 दिनांक 17.11.15 के द्वारा कुछ बिन्दुओं के संबंध में मार्गदर्शन चाहा है। अतः समस्त उप निदेशक प्रारम्भिक/माध्यमिक शिक्षा को इस संबंध में पुनः निर्देशित किया जाता है कि-

1. निदेशालय के समसंख्यक पत्रांक 197 दिनांक 27.5.14, पत्रांक 75 दिनांक 03.2.15 एवं पत्रांक 101 दिनांक 19.8.15 का गहनतापूर्वक अध्ययन कर उनकी पालना सुनिश्चित करें।
2. आरटीई एक्ट 2009, राज्य नियम, 2011, राज्य सरकार द्वारा जारी अधिसूचना दिनांक 29.3.11 एवं राज्य सरकार व निदेशालय प्रारम्भिक शिक्षा/रा.प्रा.शि.प. जयपुर द्वारा समय-समय पर जारी आदेश/निर्देश जो आरटीई वेब पोर्टल rte.raj.nic.in पर अपलोड किए हुए हैं। संबधित अधिकारीगण उनको डाउनलोड कर अपनी पत्रावली में आवश्यक रूप से संधारित कर लेवें।
3. सत्र 2012-13 में संबंधित बीईईओ/डीईओ प्रारम्भिक शिक्षा कार्यालयों द्वारा गैर सरकारी प्रा/उप्रा/मा/उमा विद्यालयों को मैन्युअल प्रक्रिया के द्वारा पुनर्भरण राशि का भुगतान किया गया है।
4. सत्र 2013-14 से संबंधित बीईईओ/डीईओ प्रारम्भिक/माध्यमिक शिक्षा कार्यालयों द्वारा पुनर्भरण राशि का भुगतान ऑनलाइन प्रक्रिया द्वारा संबंधित गैर सरकारी विद्यालयों के बैंक खातों में राशि अन्तरित करवाई जाती रही है। अतः इस संबंध में अंकेक्षण करते समय इस तथ्य की जाँच आवश्यक करें कि संबंधित कार्यालय ने पास ऑर्डर (स्वीकृति आदेश) एवं कोषालय में बिल भेजने व संबंधित विद्यालयों को भुगतान संबंधी कार्य ऑनलाइन प्रक्रिया के माध्यम से ही किया गया है। यदि किसी प्रकार की विसंगति पायी जाती है तो ऑडिट रिपोर्ट में इसका उल्लेख किया जावे।
5. संबंधित कार्यालयों में पुनर्भरण से संबंधित अभिलेख यथा-सत्यापन दल द्वारा किए गए सत्यापन कार्य की सत्यापन रिपोर्ट/निरीक्षण प्रतिवेदन, गैर सरकारी विद्यालय द्वारा प्रस्तुत किए गए क्लेम बिल (दावा प्रपत्र), संबंधित कार्यालयों द्वारा जारी किए स्वीकृति आदेश (पास ऑर्डर), कार्यालयों द्वारा बनाए गए ऑनलाइन बिल तथा संबंधित विद्यालयों के बैंक खातों में राशि जमा करवाने संबंधी अभिलेख संधारित किए जाते हैं। अंकेक्षण दल को विशेष रूप से सत्यापन दल द्वारा किए गए सत्यापन कार्य की सत्यापन रिपोर्ट/निरीक्षण प्रतिवेदन की जाँच इस प्रकार से की जानी है कि उसके सभी बिन्दुओं की सही-सही पूर्ति सत्यापन दल द्वारा की है यदि किसी बिन्दु की पूर्ति अस्पष्ट रूप से अथवा काँट-छाँट अथवा ऐसी स्थिति पायी जाती है जिससे पुनर्भरण राशि अथवा बालक की पात्रता के संबंध में किसी प्रकार की अनियमितता प्रकट होती है तो संबंधित सत्यापन दल का उत्तरदायित्व निर्धारित करते हुए नियमानुसार अनुशासनिक कार्यवाही करने के संबंध में ऑडिट रिपोर्ट में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया जावे।
6. सत्यापन रिपोर्ट/निरीक्षण रिपोर्ट की जाँच के समय यदि किसी विद्यालय में निःशुल्क प्रवेशित बालकों की संख्या अप्रत्याशित रूप से

अधिक अथवा विद्यालय द्वारा शेष बालकों से लिया जाने वाला वार्षिक शुल्क की राशि अत्यधिक अथवा अन्य प्रकार की परिस्थिति अंकेक्षण दल की समक्ष प्रकट होती है तो अंकेक्षण दल के द्वारा पुनर्भरण किए गए ऐसे विद्यालयों के अभिलेखों की जाँच करने हेतु आवश्यकतानुसार चयन करेंगे तथा संबंधित कार्यालयों को उन विद्यालयों की सूची देते हुए आदेश जारी करवाकर ऐसे गैर सरकारी विद्यालयों के वांछित अभिलेखों की ऑडिट कर सकेंगे तथा इसका उल्लेख ऑडिट रिपोर्ट में किया जाएगा।

7. संबंधित कार्यालयों में उपलब्ध समस्त सत्यापन रिपोर्ट/निरीक्षण रिपोर्ट की गहन जाँच अंकेक्षण दल द्वारा की जावे। सामान्य वित्तीय एवं लेखा नियम, आरटीई एक्ट 2009, राज्य नियम 2011 एवं इस संबंध में राज्य सरकार द्वारा सत्यापन दलों के लिए समय-समय पर जारी दिशा-निर्देशों की पालना सत्यापन दल द्वारा की गई है अथवा नहीं, इस संबंध में ऑडिट रिपोर्ट में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया जाएगा।

अतः समस्त उप निदेशक प्रारम्भिक/माध्यमिक शिक्षा को यह निर्देशित किया जाता है कि उपर्युक्त बिन्दुओं के अतिरिक्त नियमानुसार ऑडिट कार्य (अंकेक्षण कार्य) सम्पादित करेंगे। वर्तमान में गैर सरकारी विद्यालयों को करोड़ों रुपये की पुनर्भरण राशि का भुगतान राज्य सरकार द्वारा किया जा रहा है। इसमें किसी भी प्रकार की वित्तीय अनियमितता को रोकने हेतु प्रभावी तरीके से अंकुश लगाया जा सके। अतः इस कार्य को पूर्ण गंभीरता से लेते हुए सम्पादित करें।

● निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

7. मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय द्वारा वर्ष 2011-12 में अध्यापकों के बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा के अन्तर्गत देय वित्तीय सहायता राशि स्वीकृति हेतु।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● कार्यालय आदेश ● भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा वर्ष 2011-12 में अध्यापकों के बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा के अन्तर्गत देय वित्तीय सहायता राशि स्वीकृत की गई। संबंधित अध्यापकों को उनके तत्समय कार्यस्थान पर कुछ आवश्यक दस्तावेज यथा बैंक विवरण इत्यादि भिजवाने हेतु पत्र जारी किए गए लेकिन उनके वर्तमान पदस्थापन स्थान के बारे में स्पष्ट जानकारी नहीं होने के कारण उनको सूचना प्रदान नहीं की जा सकी है।

अतः इस पत्र के साथ संलग्न एक सूची में उल्लेखित कार्मिक अपनी बैंक सम्बन्धी सूचनाओं यथा अध्यापक का नाम, मोबाइल नम्बर, बैंक का नाम, शाखा का नाम, खाता संख्या, आई.एफ.एस. कोड, पासबुक की प्रति इत्यादि तत्काल इस कार्यालय को उपलब्ध करवाएँ ताकि स्वीकृत राशि ई.सी.एस. की जा सके। यदि सूचना अतिशीघ्र प्राप्त नहीं होती है तो उसके अभाव में भुगतान संबंधी समस्त जिम्मेवारी संबंधित कार्मिक की होगी।

● संलग्न : उपर्युक्तानुसार ● **(सुभाष चन्द्र महलावत)**, उप निदेशक (प्रशासन), राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-मा/राशिकप्र/31590/2011-12 दिनांक : 18.01.2017

व्यावसायिक शिक्षा के अन्तर्गत वित्तीय सहायता वर्ष 2011-12

क्र.सं.	स्वीकृति	नाम कर्मचारी, पद एवं आवेदन पत्र देने के समय 2013 में कार्मिक का पदस्थापन स्थान	स्वीकृत राशि
1	5	श्री लक्ष्मी चन्द्र गुप्ता, अध्यापक, राप्रावि. कलादेह जवाजा (अजमेर)	15000
2	20	श्रीमती किरण कालरा, व.अ., राउमावि. अकोटिया (अजमेर)	15000
3	67	श्री श्रवण लाल सांभरिया, अध्यापक, राउप्रावि. बनवाली कुचामनसिटी (नागौर)	15000
4	76	श्री जगराम पूनिया, अध्यापक, राउप्रावि. झड़िया, लाडनू (नागौर)	15000
5	117	श्री नाथू सिंह चम्पावत, प्र.अ., राउप्रावि. बड़ागाँव, कुचामनसिटी (नागौर)	15000
6	138	श्रीमती मधुबाला गौतम, अध्या., राप्रावि. खान्या की ढाणी, निवाई (टोंक)	15000
7	150	श्री रामजश यादव, अध्यापक, राउप्रावि. हरिपुरा (टोंक)	15000
8	178	श्रीमती ललिता ओझा, अध्या., राउप्रावि. नया रायसिंहपुरा बनेड़ा (भीलवाड़ा)	15000
9	208	श्रीमती सरिता शर्मा, अध्या., राबाउप्रावि. कादेड़ा, चाकसू (जयपुर)	15000
10	214	श्रीमती बीना रानी खण्डेलवाल, अध्या., राप्रावि. रावपुरा, जमवारामगढ़ (जयपुर)	15000
11	216	श्रीमती अंजु गोयल, व.अ., रा.वरि. उपाध्याय संस्कृत विद्यालय, सारंगपुरा, बड़ के बालाजी (जयपुर)	15000
12	220	श्रीमती चारू श्रीवास्तव, व.अ., राउमावि. बनकोटड़ा, (जयपुर)	15000
13	221	श्रीमती संतोष राठौड़, व्या., राबाउमावि. माणक चौक, जयपुर	15000
14	225	श्री अशोक कुमार, अध्यापक, राप्रावि. सेठों वाली ढाणी, बेनार, आमेर (जयपुर)	15000
15	230	श्री रामलाल जाट, व.अ., रामावि. नांगल पुरोहितान आमेर (जयपुर)	15000
16	238	श्री अनिल कुमार जैन, अध्यापक, राउमावि. पाली की तलाई, आमेर (जयपुर)	15000
17	240	श्रीमती बागेश्वरी शर्मा, अध्या., रा.सिन्धी प्रावि. अनाज मण्डी (जयपुर)	15000
18	261	श्री सुरेश चन्द्र सुवास, प्र.अ., सर्व शिक्षा अभियान, माण्डलगढ़ (भीलवाड़ा)	15000

19	269	श्रीमती उषा यादव, अध्या., रामावि. हाथोज (जयपुर)	15000
20	274	श्री मनोहर लाल शर्मा, अध्यापक, राउप्रा. संस्कृत वि. धौसल्या की ढाणी, झोटवाड़ा (जयपुर)	15000
21	285	श्री जगदीश प्रसाद जाट, अध्यापक, राउप्रा. संस्कृत वि. धौसल्या की ढाणी, झोटवाड़ा (जयपुर)	15000
22	300	श्री मोहन लाल, अध्यापक, रामावि. जवानपुरा, शाहपुरा (जयपुर)	15000
23	304	श्री श्रीनिवास शर्मा, अध्यापक, राप्रावि. रामचन्द्रपुरा, सांगानेर (जयपुर)	15000
24	315	श्रीमती संगीता शृंगी, अध्या., राउप्रावि. आशावाला, सांगानेर (जयपुर)	15000
25	219	श्रीमती मधु जैन, अध्या., राप्रावि. सीताराम नगर (जयपुर)	15000
26	323	श्री रामदयाल चौधरी, अध्यापक, राउप्रावि. लसाड़िया, चाकसू (जयपुर)	15000
27	25	श्री बाबू लाल कुमावत, अध्यापक, राउप्रावि. बढारणा, झोटवाड़ा (जयपुर)	15000
28	326	श्री काशीनाथ शर्मा, अध्यापक, राप्रावि. खारिया की ढाणी, शाहपुरा (जयपुर)	15000
29	332	श्री रमेशचंद जैन, अध्यापक, राउमावि. बड़ियाल कलां, बांदीकुई (दौसा)	15000
30	343	श्री अशोक कुमार विजय, व.अ., राबाउमावि. सैंथल (दौसा)	15000
31	347	श्री छज्जूलाल गुप्ता, व.अ., राउमावि. बहरावण्डा (दौसा)	15000
32	352	श्री पूरणमल योगी, अध्यापक, राउप्रावि. कोरडा खुर्द, सिकराय (दौसा)	15000
33	354	श्री भंवरसिंह राजपूत, व.अ., राउमावि. बड़ियालकलां (दौसा)	15000
34	362	श्री उत्तम कुमार जैन, व्या., आर.के. जोशी राउमावि. दौसा	15000
35	370	श्री गुलाबचन्द साहू, अध्यापक, राउप्रावि. जयसिंहपुरा, आसींद, (दौसा)	15000
36	372	श्री छगनलाल शर्मा, अध्यापक, राउप्रावि. सेडलाई, लालसोट (दौसा)	15000
37	374	श्री सुशील कुमार अग्रवाल, व.अ., रामावि. बध की ढाणी, प्रथम, जयपुर	15000
38	375	श्रीमती ताराकुमारी, अध्या., रा.वरिष्ठ उपाध्याय संस्कृत विद्यालय, रामसिंहपुरा, सांगानेर (जयपुर)	15000
39	403	श्री सतीश कुमार, प्र.अ., राउप्रावि. नाडाजोहड़ा, रतुवाला पल्थना धोद (सीकर)	15000
40	415	डॉ. मनोरमा याग्निक, व्या., चंपादेवी गोयल राबाउमावि. थोई (सीकर)	15000
41	428	श्री मूलचन्द्र, प्रबोधक, राउप्रावि. तेजा की ढाणी, तनराजास, फतेहपुर (सीकर)	15000
42	441	श्री मनोज माथुर, अध्यापक, रामावि. त्रिलोकपुरा, पिपराली (सीकर)	15000
43	444	श्रीमती रेणु पारीक, अध्या., राबाउमावि. मुण्डवाडा, धोद (सीकर)	15000
44	469	श्री लालसिंह, अध्यापक, राप्रावि. छपरतलाई का धमका वास, धोद (सीकर)	15000
45	493	श्री रामरतन सिंह, अध्यापक, राप्रावि. पंचारों की ढाणी, लक्ष्मणगढ़, (सीकर)	15000
46	510	श्री लालसहाय कुम्हार, अध्यापक, राप्रावि. शानपुरी (अलवर)	15000
47	514	श्री नरसी राम यादव, अध्यापक, राउप्रावि. माजरा महनिया, तिजारा (अलवर)	15000
48	523	श्री सागर सिंह, अध्यापक, राउप्रावि. रिंगसपुरा, कठुमर (अलवर)	15000
49	530	श्री सन्त राम, अध्यापक, राप्रावि. जटियाना (अलवर)	15000
50	532	श्री लालाराम यादव, अध्यापक, राप्रावि. प्रतापपुरा चक नं.3 नीमराना (अलवर)	15000
51	561	श्री रामसिंह जाट, प्र.अ., राउप्रावि. मंगलवा, बनसुर (अलवर)	15000
52	569	श्री गुमानाराम जाखड़, अध्यापक, राप्रावि. मेघवालों की ढाणी (बाड़मेर)	15000
53	572	श्री सत्यपाल शर्मा, व.अ., राउप्रावि. सियाग व सुनारों की बस्ती महादेवपुरा (बाड़मेर)	15000
54	600	श्री शंकर लाल गौड़, प्र.अ., राउप्रावि. बागों का तला, सिणधरी (बाड़मेर)	15000
55	627	श्री राकेश डागा, व.अ., रामावि. पालडी राणावता, भोपालगढ़ (जोधपुर)	15000
56	642	श्री सत्य नारायण भाटी, प्राचार्य, राउमावि. पालासनी (जोधपुर)	15000
57	649	श्री त्रिलोक राम, शा.शि., रामावि. जलेली देकड़ा पूल, मण्डोर (जोधपुर)	15000
58	655	श्री हीराराम विश्नोई, अध्यापक, राउप्रावि. जजवाल विश्नाईतान, मण्डोर (जोधपुर)	15000
59	666	श्रीमती पुष्प कंवर, अध्या., राप्रावि. दावों की ढाणी, मण्डोर (जोधपुर)	15000
60	667	श्रीमती इन्द्रावती कटेवा, अध्या., राउप्रावि. कवास का पाना, मण्डोर (जोधपुर)	15000
61	690	श्री प्रभाकर शर्मा, व्या., राउमावि. पुराना भवन सिरोही	15000
62	697	श्री गोकुल चन्द्र व्यास, व.अ., रामावि. रामगढ़ (सिरोही)	15000

63	701	श्री सतवीर सिंह, अध्यापक, राप्रावि., हरजीराम की ढाणी, साँकड़ा, (जैसलमेर)	15000
64	704	श्री लाखाराम, अध्यापक, राप्रावि. बाली की ढाणी, सम (जैसलमेर)	15000
65	714	श्री भावराम पुरोहित, अध्यापक, राप्रावि. खटलीनाडी, नरसाना, भीनमाल (जालौर)	15000
66	757	श्री पेमाराम, अध्यापक, राप्रावि. खेजड़ी का बाला, सोजत (पाली)	15000
67	759	श्री अनिल कुमार माथुर, अध्यापक, राउप्रावि. नई आबादी, दोहाली (पाली)	15000
68	792	श्री नरेश चन्द्र डाँगी, प्राचार्य, राउमावि. सुखेर (उदयपुर)	15000
69	793	श्रीमती शबाना चौधरी, अध्या., राउप्रावि. वार्ड नं. 4, एकलव्य कॉलोनी उदयपुर	15000
70	815	श्रीमती शशि सुखवाल, अध्यापिका, राउप्रावि. गायरियावास, बडियार, मावली (उदयपुर)	15000
71	820	श्रीमती कुसुम बापना, अध्यापिका, राउप्रावि. वार्ड नं. 4 एकलव्य कॉलोनी उदयपुर	15000
72	828	श्री सिद्धार्थ कुमार जैन, प्राचार्य, राउमावि. बलुआ, सराडा (उदयपुर)	15000
73	837	श्री रविन्द्र पुरोहित, प्र.अ., राउप्रावि. जमलावाड़ा (उदयपुर)	15000
74	842	श्री बीरबल सिंह चौहान, शा.शि., राउमावि. केसुन्दा (प्रतापगढ़)	15000
75	876	श्रीमती कल्पना याग्निक, अध्यापिका, राप्रावि. भाव, सारवाड़ा (बांसवाड़ा)	15000
76	880	श्री महेन्द्र कुमार पाठक, शा.शि., राउमावि. बोरतालाब (बांसवाड़ा)	15000
77	884	श्री भानुसिंह राठौड़, अध्यापक, राउप्रावि. सलारियाँ खुर्द, शाहपुरा (बांसवाड़ा)	15000
78	894	श्रीमती निशा व्यास, अध्यापिका, राप्रावि. डूंगरीपाडा, सुन्दनपुर, मं. तलवाड़ा (बांसवाड़ा)	15000
79	910	श्रीमती मोहनी शर्मा, अध्यापिका, राउप्रावि. प्रेमनगर, (चित्तौड़गढ़)	15000
80	923	श्री श्यामसिंह चौहान, अध्यापक, राउप्रावि. जीवनायक का खेड़ा, गंगरार (चित्तौड़गढ़)	15000
81	924	श्रीमती सुनीता जैन, अध्यापिका, रा.आदर्श उप्रावि. चित्तौड़गढ़	15000
82	946	श्रीमती कंकू कलाल, अध्यापिका, राप्रावि. बालाडीट (डूंगरपुर)	15000
83	948	श्री तुलसी राम सुथार, अध्यापक, राप्रावि. नं. 6, सागवाड़ा (डूंगरपुर)	15000
84	955	श्री हनुमान सिंह चौधरी, प्रबोधक, राप्रावि. गंगानगर, खण्डार (सवाई माधोपुर)	15000
85	1022	श्री कैलाश शर्मा, अ., राबाउप्रावि. सेवर (भरतपुर)	1250
86	1035	श्री अंकित सिंह, अध्यापक, रा.आदर्श प्रावि. सेवर (भरतपुर)	15000
87	1049	श्रीमती सुनिता शर्मा, व.अ., राप्रावि. झीलरा (भरतपुर)	15000
88	1072	श्री राजेश चन्द गुप्ता, अध्यापक, रामावि. मदनपुर, बयाना (भरतपुर)	15000
89	1084	श्री जगदीश बाबू सक्सेना, अध्यापक, राप्रावि. फुसपुरा (धौलपुर)	15000
90	1106	श्री कल्याण प्रसाद मीणा, अध्यापक, राउप्रावि. धनेरा, सरमथुरा, बसेड़ी (भरतपुर)	15000
91	1129	श्री गोपाल लाल गुप्ता, व.अ., रामावि. मांची (करौली)	15000
92	1151	श्री राजेश कुमार शर्मा, अध्यापक, राउप्रावि. गणेश गेट, जुगीनपुरा, सपोटरा (करौली)	15000
93	1156	श्री रमेश चंद्र शर्मा, अध्यापक, राप्रावि. भोडेर (करौली)	15000
94	1161	श्री अशोक कुमार शर्मा, अध्यापक, राउप्रावि. गडी का गाँव, सपोटरा (करौली)	15000
95	1190	श्री मानाराम नायक, अध्यापक, राप्रावि. कल्याणसर नया, डूंगरगढ़, (बीकानेर)	15000
96	1237	श्री जगमोहन सिंह यादव, व.अ., रामावि. सिंवरो की ढाणी स्वरूपसर, नोखा (बीकानेर)	1250
97	1293	श्रीमती भागवती तनेजा, व.अ., गट्टाणी राबाउमावि. नोखा (बीकानेर)	15000
98	1318	श्री हरिराम पूनियाँ, प्र.अ., राप्रावि. मीणा की ढाणी, बजावा (झुंझुनूं)	15000
99	1363	श्री ख्याली राम पछार, अध्यापक, राप्रावि. डूंगर की ढाणी (झुंझुनूं)	15000
100	1371	श्री दिनेश कुमार, अध्यापक, राप्रावि. गवारियों की ढाणी (झुंझुनूं)	15000
101	1388	श्री माणक चन्द्र सैनी, शा.शि., राउमावि. जसरासर (चूरू)	15000
102	1449	श्रीमती सुमन शर्मा, अध्यापिका, रामावि. बैरासर (चूरू)	15000
103	1528	श्री देवकरण सिंह, अध्यापक, राप्रावि. मकसाना जोहड़, कशेरू, नवलगढ़ (झुंझुनूं)	15000
104	1541	श्री पूरन नाथ, अध्यापक, रामावि. मानकथेड़ी, पीलीबंगा (हनुमानगढ़)	15000
105	1551	श्रीमती तनुजा चतुर्वेदी, अध्यापिका, रामावि. 17 एल.जी.डब्ल्यू. खरलिया (हनुमानगढ़)	15000
106	1559	श्रीमती अमरजीत कौर, अध्यापिका, राप्रावि. 26 एस.टी.जी., पीलीबंगा (हनुमानगढ़)	15000

107	1561	श्रीमती जसवीर कौर, अध्यापिका, राउप्रावि. चन्दड़ा, (हनुमानगढ़)	15000
108	1567	श्री कमलेश कुमार विश्नोई, अध्यापक, राउप्रावि. सुन्दर सिंगवाला, पीलीबंगा (हनुमानगढ़)	15000
109	1573	श्री रूलीचन्द, शा.शि., राउमावि. भिरानी, भादरा (हनुमानगढ़)	15000
110	1580	श्रीमती कमलेश देवी, अध्यापिका, राउप्रावि. सुन्दरसिंहवाला, पीलीबंगा (हनुमानगढ़)	15000
111	1581	श्रीमती सरिता सोबती, प्राचार्य, राउमावि. नं.1 भट्टा कॉलोनी, हनुमानगढ़	15000
112	1590	श्री कल्याण मल वर्मा, व्याख्याता, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, झालावाड़	15000
113	1604	श्री महेश कुमार शर्मा, प्र.अ., राउप्रा. संस्कृत वि. रूपवती खुर्द, रानीवाड़ा (जालौर)	15000
114	1609	श्री बनेसिंह राठौड़, शा.शि., रामावि. ताडी सोहनपुरा, पाटन (झालावाड़)	15000
115	1613	श्री कृपाशंकर दीक्षित, प्र.अ., राउप्रावि. कोडिजा, के.पाटन (झालावाड़)	4250
116	1619	श्री राकेश कुमार शर्मा, अध्यापक, राउमावि. अलोद (बूँदी)	15000
117	1625	श्री मुख्तयार अहमद, व.अ., राउमावि. ठीकरदा (बूँदी)	15000
118	1626	श्री ओमप्रकाश शृंगी, अ., राबाउप्रावि. लक्ष्मीपुरा (बूँदी)	15000
119	1627	श्री रामस्वरूप शर्मा, अध्यापक, राप्रावि. बंजारों की झोपड़ियां, के. पाटन (बूँदी)	15000
120	1636	श्री बाबू लाल गुप्ता, अध्यापक, राप्रावि. बरवास, हिण्डोली (बूँदी)	15000
121	1640	श्रीमती उर्मिला माहेश्वरी, अध्यापिका, रामावि. हरिपुरा (बूँदी)	15000
122	1647	श्री नौरतमल मालव, व.अ., राउमावि. बोहत (बारां)	15000
123	1652	श्री प्रेम सागर मीणा, अध्यापक, राउप्रावि. निमोडा, डारा, अटरू (बारां)	15000
124	1668	श्री नरेन्द्र शर्मा, अध्यापक, राउप्रावि. मन्डोला वार्ड, बारां	15000
125	1678	श्री गिरीराज मालव, अध्यापक, रामावि. नागद, अन्ता (बारां)	15000
126	1680	श्री गिरजा नन्दन शर्मा, अध्यापक, राउप्रावि. गजनपुरा (बारां)	15000
127	1682	श्री राजेन्द्र प्रसाद गालव, अध्यापक, राउप्रावि. अमीनपुरा, छबड़ा (बारां)	15000
128	1692	श्री देवेन्द्र कुमार राठौड़, अध्यापक, राप्रावि. गुजर बस्ती, अलनियां, लाडपुरा (कोटा)	15000
129	1694	श्री बंशीलाल नागर, प्र.अ., राउप्रावि. मेघवाल बस्ती, गावंडी, लाडपुरा (कोटा)	15000
130	1699	श्रीमती पद्मा शर्मा, अध्यापिका, राप्रावि. दाता सांगोद (कोटा)	15000
131	1720	श्रीमती चन्दा वशिष्ठ, अध्यापिका, राप्रावि. केशपुरा, लाडपुरा (कोटा)	15000
132	1722	श्री पुरुषोत्तम माहेश्वरी, प्राचार्य, डीपीसी एसएसए, कोटा	15000
133	1745	श्री ईशाक मोहम्मद शाह, अध्यापक, राउप्रावि. सज्जनपुरा (चित्तौड़गढ़)	15000
134	1746	श्री सोमेश्वर प्रसाद व्यास, अध्यापक, राउप्रावि. जीतियां, कपासन (चित्तौड़गढ़)	15000
135	1747	श्री सोहन लाल जाट, अध्यापक, राउप्रावि. धोबीखेड़ा, कपासन, (चित्तौड़गढ़)	15000
136	1755	श्री प्रदीत कुमार, अध्यापक, राउप्रावि. दयावथ राजगढ़ (चूरू)	15000
137	1776	श्री प्रेमनारायण कोली, प्रबोधक, राप्रावि. नैनछा पटेल की ढाणी, जमवारामगढ़ (जयपुर)	15000
138	1814	श्री रामलाल, व.अ., राउप्रावि. अणखोल, सांचोर (जालौर)	15000
139	1817	श्री राम राजेश्वर विजय, व्या., राउमावि. देवली (टोंक)	15000

8. मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा वर्ष 2012–13 में अध्यापकों के बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा के अन्तर्गत देय वित्तीय राशि स्वीकृति बाबत।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● कार्यालय आदेश ● भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा वर्ष 2012–13 में अध्यापकों के बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा के अन्तर्गत देय वित्तीय सहायता राशि स्वीकृत की गई। संबंधित अध्यापकों को उनके तत्समय कार्यस्थान पर कुछ आवश्यक दस्तावेज यथा बैंक विवरण इत्यादि भिजवाने हेतु पत्र जारी किए गए लेकिन उनके वर्तमान पदस्थापन स्थान के बारे में स्पष्ट जानकारी नहीं होने के कारण उनको सूचना प्रदान नहीं की जा सकी है। अतः इस पत्र के साथ संलग्न एक सूची में उल्लेखित कार्मिक अपनी बैंक सम्बन्धी सूचनाओं यथा अध्यापक का नाम, मोबाइल नम्बर, बैंक का नाम, शाखा का नाम, खाता संख्या, आई.एफ.एस. कोड, पासबुक की प्रति इत्यादि तत्काल उपलब्ध करवाएँ ताकि स्वीकृत राशि ई.सी.एस. की जा सके। यदि सूचना अतिशीघ्र प्राप्त नहीं होती है तो उसके अभाव में भुगतान संबंधी समस्त जिम्मेवारी संबंधित कार्मिक की होगी।

● संलग्न : उपर्युक्तानुसार। ● **(सुभाष चन्द्र महलावत),** उप निदेशक (प्रशासन), राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-मा/राशिकप्र/31590/2012–13 दिनांक 18.01.2017

व्यावसायिक शिक्षा के अन्तर्गत वित्तीय सहायता वर्ष 2012.13

क्र.सं.	स्वीकृति	नाम कर्मचारी, पद एवं आवेदन पत्र देने के समय 2013 में कार्मिक का पदस्थापन स्थान	स्वीकृत राशि
1	8	श्री राजकुमार शर्मा, व.अ., श्री खोराजी राउमावि. हींगपुरा (जयपुर)	15000
2	12	श्री कालूराम जाट, अध्यापक, राउप्रावि. महाराजवाली, शाहपुरा (जयपुर)	12000
3	36	श्री श्रीनिवास शर्मा, अध्यापक, राप्रावि. रामचन्द्रपुरा (विधानी) सांगानेर (जयपुर)	15000
4	40	श्रीमती निर्मला मूण्ड, अध्यापिका, राप्रावि. विंदायका (जयपुर)	15000
5	64	श्री मालीराम शर्मा, व.अ., राउप्रावि. आथूणाबड़ा, गोविन्दगढ़, (जयपुर)	15000
6	65	श्री दिनेश कुमार शर्मा, अध्यापक, राउप्रावि. तूंगी बस्सी (जयपुर)	7500
7	70	श्री सुशील कुमार अग्रवाल, व.अ., रामावि. बंध की ढाणी (जयपुर)	15000
8	75	श्रीमती भारती भार्गव, अध्यापिका, राबाउप्रावि. राजनौता, कोटपूतली (जयपुर)	15000
9	87	श्री सुभाष चन्द पाण्डे, अध्यापक, राउप्रावि. गिरधारीपुरा, झोटवाड़ा, (जयपुर)	15000
10	88	श्रीमती बागेश्वरी शर्मा, अध्यापिका, रा.सिंधी प्रावि. अनाज मण्डी (जयपुर)	15000
11	90	श्रीमती सविता शर्मा, अध्यापिका, राउप्रावि. बांसडा, दूदू (जयपुर)	15000
12	93	श्रीमती तारा शेखावत, अध्यापिका, रामावि. हाथोज (जयपुर)	15000
13	116	श्री श्रवण कुमार, अध्यापक, राउप्रावि. शाहपुरा, खण्डेल (सीकर)	12000
14	134	श्री ज्ञानचन्द सैनी, व.अ., राउमावि. मलखेड़ा (सीकर)	15000
15	166	श्री मनमोहन जाँगिड़, वरि. अध्यापक, रामावि. रोहड़ा कलाँ (दौसा)	15000
16	170	श्री राकेश जाखड़, व्या., राउमावि. बहरावण्डा (दौसा)	15000
17	172	श्री गंगा सहाय मीणा, अध्यापक, राप्रावि. जैतपुरा (दौसा)	15000
18	176	श्री कैलाश चन्द्र कट्टा, अध्यापक, राप्रावि. चौरड़ी (दौसा)	15000
19	185	श्रीमती किरण शर्मा, व.अ., आनन्द शर्मा राबाउमावि. दौसा	15000
20	191	श्री महावीर प्रकाश जैन, प्र.अ., राउमावि. चावण्डेडा (दौसा)	15000
21	196	श्री गंगा लहरी शर्मा, व्या., आनन्द शर्मा राबाउमावि. दौसा	15000
22	197	श्री छज्जू लाल गुप्ता, व.अ., राउमावि. बहरावण्डा (दौसा)	15000
23	200	श्री कैलाश शंकर शर्मा, अध्यापक, राप्रावि. जैतपुरा (दौसा)	15000
24	201	श्री रामनिवास शर्मा, प्रधानाचार्य, राउमावि. मण्डावरी, लालसोट (दौसा)	15000
25	205	श्री सुरेश चन्द सैनी, अध्यापक, राउप्रावि. नारायणपुर, राजगढ़ (अलवर)	15000
26	239	श्रीमती निशा तिवाड़ी, अध्यापिका, रामावि. दिवाकरी (अलवर)	15000
27	248	श्री राजाराम यादव, अध्यापक, राप्रावि. खोह, किशनगढ़बास (अलवर)	15000
28	259	श्री नरसी राम यादव, अध्यापक, राउप्रावि. माजरा, महनिया, तिजारा (अलवर)	15000
29	289	श्री मन्ना लाल जाँगिड़, अध्यापक, राउप्रावि. घून्धरी, केकड़ी, (अजमेर)	15000
30	311	श्री तुलसी राम शर्मा, व.अ., राउमावि. लोटियाना (अजमेर)	15000
31	364	श्री ताराचन्द कोली, अध्यापक, राउप्रावि. जावदा, माण्डलगढ़ (भीलवाड़ा)	15000
32	424	श्री विनोद कुमार शर्मा, व.अ., राउमावि. हमीरपुर (टोंक)	15000
33	464	श्री श्याम लाल पालीवाल, प्रधानाचार्य, राउमावि. फलासिया (उदयपुर)	15000
34	475	श्रीमती शबाना चौधरी, अध्यापिका, राउप्रावि. वार्ड नं. 4 एकलव्य कॉलोनी, उदयपुर	15000
35	478	श्रीमती कुसुम बापना, अध्यापिका, राउप्रावि. वार्ड नं. 4 एकलव्य कॉलोनी, उदयपुर	15000
36	530	श्री दिलीप सिंह शक्तावत, अध्यापक, राउप्रावि. भोजुण्डा (चित्तौड़गढ़)	15000
37	541	श्रीमती सीमा चंचावत, अध्यापिका, राउप्रावि. बोरतलाव, तलवाड़ा (बांसवाड़ा)	15000

38	563	श्रीमती अलका शर्मा, व.अ., राबाउमावि. बरार (राजसमंद)	15000
39	581	श्री गणेश चन्द्र राठौड़, अध्यापक, राप्रावि. तलावा गाँव, केशबस्ती, अनन्तपुरा (कोटा)	15000
40	591	श्री जमील बेग, व.अ., रामावि. झालीपुरा (कोटा)	15000
41	615	श्री मांगीलाल कहार, अध्यापक, राउप्रावि. कवरपुरा, तालड़ा (बेदी)	15000
42	658	श्री गोविन्द प्रसाद वर्मा, अध्यापक, राप्रावि. सौलाका नगर (भरतपुर)	15000
43	697	श्रीमती संतोष गुप्ता, अध्यापिका, राबाउप्रावि. छोटी उदई, गंगापुर सिटी (सवाई माधोपुर)	15000
44	701	श्री गिरिजा शंकर पारीक, व.अ., राउप्रावि. हलौन्दा, खण्डार (सवाई माधोपुर)	15000
45	712	श्री ओम प्रकाश मीणा, अध्यापक, राउप्रावि. रईवाकलाँ (सवाई माधोपुर)	15000
46	725	श्री अख्तर अली, अध्यापक, राउमावि. सेलू (सवाई माधोपुर)	15000
47	730	श्री शम्भु दयाल जाट, प्र.अ., राउप्रावि. सांवलपुर, खण्डार (सवाई माधोपुर)	15000
48	736	श्री अशोक कुमार शर्मा, व्या., राउमावि. खेरली (धौलपुर)	15000
49	744	श्री भूपेन्द्र कुमार शर्मा, अध्यापक, राप्रावि. लूधपुरा, बाडी (धौलपुर)	15000
50	761	श्री सुरेश प्रसाद गुप्ता, प्र.अ., राउप्रावि. गढ़ी का गाँव, सपोटरा (करौली)	15000
51	764	श्री नेतराम वर्मा, अध्यापक, राउमावि. माढई (करौली)	15000
52	781	श्री राजेश कुमार शर्मा, अध्यापक, राउप्रावि. जुगीनपुरा (करौली)	15000
53	811	श्री पुरुषोत्तम लाल गुप्ता, अध्यापक, राप्रावि. काँवटी, सपोटरा (करौली)	15000
54	836	श्री भजना राम माँझू, प्र.अ., राउप्रावि. कल्याणों की ढाणी, शिवनगर (जोधपुर)	15000
55	898	श्री धन्नाराम, अध्यापक, राप्रावि. गोलेसोडा, बालोतरा, (बाड़मेर)	15000
56	932	श्री गणपत लाल टाँक, अध्यापक, राउप्रावि. बेरा, बनदिया, सोजत सिटी (पाली)	15000
57	967	श्रीमती शारदा जोशी, अध्यापिका, राउप्रावि. चवरडा (पाली)	15000
58	998	श्री अतिकुर रहमान, व.अ., राउमावि. आबूरोड (सिरोही)	15000
59	1003	श्रीमती स्वर्णलता पजामिन, व.अ., राउमावि. आबूरोड (सिरोही)	15000
60	1079	श्री नगेन्द्र पुरोहित, व.अ., राउप्रावि. गणेशवाली, खाजूवाला (बीकानेर)	15000
61	1186	श्रीमती निशा देवी, अध्यापिका, राप्रावि. ददरेवा, राजगढ़ (चूरू)	15000
62	1222	श्री मातादीन, व.अ., राउमावि. नवां, राजगढ़ (चूरू)	15000
63	1228	श्री रामस्वरूप मीणा, प्र.अ., राउप्रावि. अनूपगढ़ (श्रीगंगानगर)	15000
64	1232	श्रीमती नीरू बाला, अध्यापिका, रामावि. मम्मडखेड़ा, सादुलशहर (श्रीगंगानगर)	15000
65	1280	श्री रामेश्वर लाल, अध्यापक, राउमावि. बडोपल (हनुमानगढ़)	15000
66	1291	श्री जयवीर सिंह, अध्यापक, राउप्रावि. बिजाला, धीराबड़ी (झुंझुनूं)	15000
67	1032	श्री धर्मवीर सिंह, व.अ., राउमावि. बीजूसर (झुंझुनूं)	15000
68	1309	श्रीमती सुगना झाझरिया, प्र.अ., राप्रावि. बास चुडेला, अलसीसर (झुंझुनूं)	15000
69	1326	श्री गोपाल सिंह शेखावत, अध्यापक, राउप्रावि. खातियों की ढाणी, उदयपुरवाटी (झुंझुनूं)	15000
70	1337	श्री दिनेश कुमार शर्मा, अध्यापक, राउप्रावि. झेखां, खेतड़ी (झुंझुनूं)	15000
71	1342	श्री रोहिताश, अध्यापक, रामावि. बाजला (झुंझुनूं)	15000
72	1347	श्रीमती गीता चाहर, अध्यापिका, राबाउमावि. नूवां (झुंझुनूं)	15000
73	1356	श्री राजवीर फगोट, अध्यापक, राउप्रावि. राढियों की ढाणी, सूरजगढ़ (झुंझुनूं)	15000
74	1360	श्री जाकिर हुसैन, व.अ., राबामावि. नूआँ (झुंझुनूं)	15000
75	1368	श्री रामवीर सिंह उपाध्याय, अध्यापक, राबाउप्रावि. ढिलसर (झुंझुनूं)	15000
76	1369	श्री बाबूलाल जाँगिड़, अध्यापक, रामावि. रामपुरा, अलसीसर (झुंझुनूं)	15000
77	1373	श्री सुरेन्द्र कुमार, अध्यापक, राप्रावि. बड की ढाणी, नवलगढ़ (झुंझुनूं)	15000
78	1377	श्रीमती वेदरती देवी, अध्यापिका, राबाउप्रावि. घुमनसर कलाँ (झुंझुनूं)	15000

शिविरा पञ्चाङ्ग सत्र 2016-17

फरवरी 2017					
रवि		5	12	19	26
सोम		6	13	20	27
मंगल		7	14	21	28
बुध	1	8	15	22	
गुरु	2	9	16	23	
शुक्र	3	10	17	24	
शनि	4	11	18	25	

फरवरी 2017 ● कार्य दिवस–23, रविवार–4, अवकाश–1, उत्सव 4 ● 1 फरवरी–बसन्त पंचमी/सरस्वती जयन्ती (उत्सव), गार्गी पुरस्कार समारोह, बालिका दिवस आयोजन। **9 से 11 फरवरी–** तृतीय परख का आयोजन। **10 फरवरी–**राष्ट्रीय डी-वर्मिंग दिवस पर सभी छात्र छात्राओं को मध्याह्न भोजन उपरान्त डी-वर्मिंग दवा का वितरण (एलबेन्डाजोल गोली) (SSA)। **15 फरवरी–**डी-वर्मिंग मॉप अप डे-10 फरवरी को वंचित छात्र-छात्राओं को डी-वर्मिंग दवा का वितरण (SSA)। **17 से 18 फरवरी–**सत्रान्त की संस्था प्रधान वाक्पीठ (प्रावि/उप्रावि /मावि/उमावि) का आयोजन। **21 फरवरी–**स्वामी दयानन्द जयन्ती (उत्सव)। **24 फरवरी–**महा शिवरात्रि (अवकाश-उत्सव)। **27 फरवरी–**समुदाय जागृति दिवस। **28 फरवरी–**राष्ट्रीय विज्ञान दिवस (उत्सव)। **नोट :–1.** माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा आयोज्य कक्षा 10 एवं 12 की परीक्षा में प्रविष्ट होने वाले विद्यार्थियों हेतु 14 दिवस का परीक्षा पूर्व तैयारी अवकाश रहेगा। **2.** 26 फरवरी 2017 को अमावस्या के दिन अवकाश होने के कारण समुदाय जागृति दिवस अगले कार्य दिवस 27 फरवरी को आयोजित किया जाएगा।

मार्च 2017					
रवि		5	12	19	26
सोम		6	13	20	27
मंगल		7	14	21	28
बुध	1	8	15	22	29
गुरु	2	9	16	23	30
शुक्र	3	10	17	24	31
शनि	4	11	18	25	

मार्च 2017 ● कार्य दिवस–25, रविवार–4, अवकाश–2, उत्सव–3 ● 12 मार्च– होलिका दहन (अवकाश)। **13 मार्च –** धुलण्डी (अवकाश)। **15 मार्च–**विश्व उपभोक्ता दिवस (उत्सव)। **29 मार्च–**चेटीचण्ड (अवकाश-उत्सव)। **30 मार्च–**राजस्थान दिवस (उत्सव)। **नोट :–**चतुर्थ योगात्मक आकलन का आयोजन (मार्च के चतुर्थ सप्ताह में) (SIQE /CCE संचालित विद्यालयों में)

माह : फरवरी, 2017

विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम

प्रसारण समय : दोपहर 2.40 से 3.00 बजे तक

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ का नाम
1.2.2017	बुधवार	उदयपुर		गैर पाठ्यक्रम	वसंत पञ्चमी/सरस्वती जयन्ती (उत्सव)
2.2.2017	गुरुवार	जयपुर	10	अंग्रेजी	परीक्षामाला
3.2.2017	शुक्रवार	उदयपुर	10	हिन्दी	परीक्षामाला
4.2.2017	शनिवार	जयपुर	10	सामाजिक विज्ञान	परीक्षामाला
6.2.2017	सोमवार	उदयपुर	10	विज्ञान	परीक्षामाला
7.2.2017	मंगलवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम	
8.2.2017	बुधवार	उदयपुर	12	अनिवार्य अंग्रेजी	परीक्षामाला
9.2.2017	गुरुवार	तृतीय परख सभी कक्षाओं के लिए			
10.2.2017	शुक्रवार	तृतीय परख सभी कक्षाओं के लिए			
11.2.2017	शनिवार	तृतीय परख सभी कक्षाओं के लिए			
13.2.2017	सोमवार	जयपुर		गैर पाठ्यक्रम	
14.2.2017	मंगलवार	उदयपुर	10	गणित	परीक्षामाला
15.2.2017	बुधवार	जयपुर	10	संस्कृत	परीक्षामाला
16.2.2017	गुरुवार	उदयपुर	12	इतिहास	परीक्षामाला
17.2.2017	शुक्रवार	जयपुर	8	हिन्दी	परीक्षामाला
18.2.2017	शनिवार	उदयपुर	8	सामाजिक विज्ञान	परीक्षामाला
20.2.2017	सोमवार	जयपुर	8	विज्ञान	परीक्षामाला
21.2.2017	मंगलवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम	स्वामी दयानन्द सरस्वती
22.2.2017	बुधवार	जयपुर	8	गणित	परीक्षामाला
23.2.2017	गुरुवार	उदयपुर	8	संस्कृत	परीक्षामाला
25.2.2017	शनिवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम	
27.2.2017	सोमवार	उदयपुर	12	रसायन विज्ञान	परीक्षामाला
28.2.2017	मंगलवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम	राष्ट्रीय विज्ञान दिवस-उत्सव

परीक्षा विशेष

न डरें, न रखें तनाव

❒ डॉ. राधाकिशन सोनी

परीक्षा के दिनों में कमजोर विद्यार्थियों की तरह जागरूक व होशियार विद्यार्थियों को भी तनाव से गुजरना पड़ता है। तनाव पर नियंत्रण रखकर परीक्षा की वैतरणी को आसानी से पार किया जा सकता है। जागरूकता के साथ अध्ययन करने पर ही परीक्षा में बेहतर सफलता मिलती है। अतः पाठ्यक्रम में से यथोचित सामग्री का चयन किया जाना चाहिए जो परीक्षा में आने वाला है। उसी सामग्री का संकलन करना चाहिए तथा परीक्षा के समय उसी पर अध्ययन केंद्रित करना चाहिए। ऐसा नहीं करने पर परीक्षा तैयारी के अंतिम दिनों में ऊहापोह की स्थिति में पड़कर आप बेवजह तनाव में आ जाएँगे।

पढ़ने के लिए समय सारणी बनाएँ:–

कार्य की सफलता नियोजन पर निर्भर करती है। कार्य चाहे वित्त से जुड़ा हो या फिर अन्य क्षेत्र से। नियोजन में समय का बहुत महत्त्व होता है। पढ़ाई पर भी ध्यान केन्द्रित तभी होगा जब कार्य समय पर पूरा किया जाए। समय-प्रबंधन के लिए समय-सारणी का निर्माण आवश्यक होता है।

● प्रभावी अध्ययन-योजना के लिए अध्ययन को 40 मिनट (या क्षमतानुसार) करने के पश्चात् मस्तिष्क को रीचार्ज करने के लिए 5 मिनट का अन्तराल दे देना चाहिए। प्रत्येक समय इकाई में किसी एक विषय पर ध्यान केन्द्रित कीजिए। ● पढ़ते समय जब मन भटकने लगे तो पढ़ना बिल्कुल रोक दीजिए। पढ़ते समय अपने पास एक पेन और कागज जरूर रखें। आपके मन में कोई नया विचार आता है तो तुरन्त उसे लिखें और खाली समय में उस पर विचार करें। अगर पढ़ते-पढ़ते आप ऊब जाएँ तो विषय से सम्बन्धित ऑडियो-वीडियो सामग्री पास में रखें तथा उस सामग्री को उपयोग में लीजिए। बहुत अधिक समय तक मत पढ़िए क्योंकि आपका मस्तिष्क लंबे समय तक ध्यान नहीं लगा सकता। ● बहुत देर तक बैठे मत रहिए। यदि आप सिरदर्द अनुभव करने लगें तो रुक जाएँ। आँखों पर लंबी अवधि से तनाव का सूचक है-सिरदर्द। ● हम जो

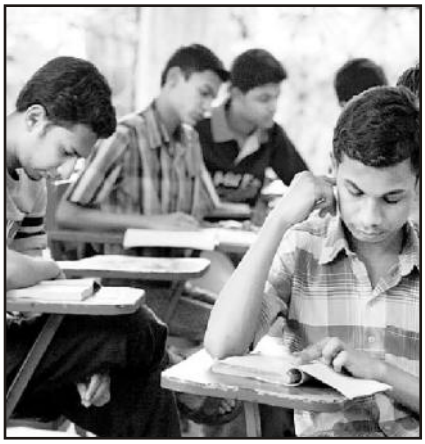

भी पढ़ते हैं, उसे थोड़े अन्तराल के बाद 'रिपीट' करना जरूरी है। जब तक हम पढ़ा हुआ 'रिपीट' नहीं करेंगे, तब तक पढ़ने-सीखने का कोई महत्त्व नहीं है। मनोवैज्ञानिकों ने भी 'रिपीटेशन' अति आवश्यक बताया है। ● वैज्ञानिकों के अनुसार किसी दिन दो घण्टे में प्राप्त जानकारी को अगले 24 घण्टे में दोहराना जरूरी है। एक अध्ययन के अनुसार नई सीखी गई जानकारी को हमारा मस्तिष्क 24 घण्टे तक ही सहज कर रख सकता है। अगर अगले 24 घण्टे में एक बार उस ज्ञान को दोहरा लिया जाए तो लगभग सात दिन तक याद रहता है। सात दिन के बाद भूलने का चक्र दोबारा तेजी से शुरू हो जाता है। अतः 7 दिन बाद एक बार 'रिपीट' कर लेने पर 30 दिन तक याद रहता है और 30 दिन बाद दोहरा लिया जाए तो लम्बे समय तक याद रहता है। इस तरह 24/7 यानि 24 घण्टे के सूत्र को ध्यान में रखें तथा उसी अनुरूप तैयारी करें। ● जिस समय आप स्वयं को सबसे ज्यादा ऊर्जावान (एनर्जेटिक) महसूस करें। उस समय कठिन विषयवस्तु को पढ़ें। फिर 10 मिनिट बाद पुनः 'रिपीट' करें।

अब परीक्षा को मात्र 3 सप्ताह का समय बचा है। पढ़ाई में मेहनत के अनुसार सफलता प्राप्त करने के लिए विद्यार्थी इस अवधि में अपनी दिनचर्या को नियमित करें तथा इसे समय-सारणी के रूप में व्यवस्थित करें। **प्रातः बाल ब्रह्ममुहूर्त में जागरण से रात को सोने तक की समस्त कार्ययोजना अर्थात् 'दिनचर्या' बनाएँ।** समय प्रबंधन इस तरह हो कि शरीर को आराम भी मिल सके और अध्ययन के लिए भी अधिक से अधिक समय मिल जाए। समय-सारणी में सभी विषयों को प्रमुखता देना जरूरी है। नियमित रूप से ऐसा करने से आधा तनाव तो स्वतः ही गायब हो जाएगा। आत्मविश्वास और सकारात्मक सोच के साथ परीक्षा की तैयारी करें और परीक्षा दें।

परीक्षा का पहला दिन :–परीक्षा दिवस की पूर्व रात्रि में परीक्षार्थी को भरपूर नींद लेनी चाहिए। मनोवैज्ञानिक के अनुसार मस्तिष्क के काम करने की सीमा होती है। यदि तनाव के कारण मस्तिष्क पहले ही थक जाएगा तो इसका विपरीत प्रभाव अगले दिन होने वाली परीक्षा पर पड़ना स्वाभाविक है। ऐसी स्थिति में वह प्रश्न-पत्र को ठीक से हल नहीं कर पाएगा। अतः परीक्षार्थी को रातभर जागते रहने की स्थिति से बचना चाहिए।

इसके अलावा अगले दिन जिस विषय की परीक्षा होनी है, उससे सम्बन्धित सामग्री यथा-ज्योमेट्री बॉक्स, स्कैल, पैन, पैंसिल आदि तथा प्रवेश-पत्र पहली रात्रि को ही एक जगह रख देना चाहिए ताकि अगले दिन सुबह हड़बड़ाहट में भूलने की आशंका नहीं रहे।

परीक्षार्थी और परीक्षा कक्ष:–

● सदैव परीक्षा केन्द्र पर आधा घण्टा पहले पहुँचे। प्रवेश-पत्र आपके पास होना चाहिए। ● परीक्षा कक्ष में प्रवेश से पूर्व सुनिश्चित करें कि आपके पास परीक्षा से जुड़ी किसी भी प्रकार की सामग्री नहीं है। स्केल एवं ज्योमेट्री बॉक्स, जिस पर माप या अन्य पठन सामग्री अंकित है, परीक्षा में अनुमत नहीं होते हैं। ● उत्तर-पुस्तिका के कॉलमों की निर्देशानुसार पूर्ति करें। यदि कोई परेशानी आ रही हो तो कक्ष में मौजूद वीक्षक से बात करें। पास में बैठे किसी अन्य परीक्षार्थी से बात नहीं करें। ● प्रश्न-पत्र प्राप्त होते ही उस पर अपने नामांक लिखें। ● उत्तर पुस्तिका के अन्दर कहीं भी अपने रोल नं., नाम अथवा व्यक्तिगत

पहचान का कोई भी चिह्न अथवा अपने विद्यालय का नाम अंकित न करें। ● भाषा विषयों के प्रश्न-पत्रों में पत्र, तार, निमन्त्रण पत्र, निबंध आदि से जुड़े प्रश्नों में जो काल्पनिक नाम, विद्यालय का नाम, स्थान आदि लिखे हैं, उनको ही सम्बन्धित प्रश्न में लिखें। ● परीक्षा कक्ष में प्रश्न पत्र पढ़ने के लिए 15 मिनट का समय अतिरिक्त मिलता है। प्रश्न-पत्र प्राप्त होते ही सर्वप्रथम एक बारगी ध्यान से पढ़ें। प्रश्न-पत्र को पढ़ते समय सुनिश्चित करें कि आप किस-किस प्रश्न के उत्तर अच्छी तरह से दे सकते हैं। ● जिन प्रश्नों के उत्तर आप भली प्रकार (आपके लिए आसान) दे सकते हैं, उनका उत्तर पहले दें। शेष प्रश्नों (आपके लिए मुश्किल) के उत्तर बाद में दें। अर्थात् प्रश्न-पत्र को हल करते समय 'सरल से कठिन' मंत्र सदैव ध्यान में रखें। ● हमेशा लेखन में सुन्दर हस्तलेख का प्रयोग करें। लिखते समय उत्तर पुस्तिका के दोनों तरफ हाशिए (Margin) का विशेष ध्यान रखें। ● वर्तनीगत अशुद्धि न हो इसका विशेष ध्यान रखें। ● सावधानी रखें कि ऊपरीलेखन (overwriting) एवं काँट-छाँट (Cutting) की स्थिति न बने, किन्तु फिर भी ऐसी स्थिति बन जाए तो किसी शब्द को ऊपर (overwrite) न लिखकर उसे काट दें तथा पुनः शुद्ध लिख दें। ● भाषा विषयों के प्रश्न जिस Tense में हो उत्तर उसी Tense में दें। उत्तर 'to the point' दें। ● उत्तर पुस्तिका में प्रश्न को लिखने में अपना समय बर्बाद न करें। केवल सम्बन्धित प्रश्न की क्रम संख्या ही अंकित करें तथा उसके बाद सीधा उत्तर लिखें। जैसे- प्रश्न 1 या खण्ड A का प्रश्न 1 या प्रश्न 1(i) उत्तर पुस्तिका में प्रश्न की वास्तविक क्रम संख्या ही लिखें। अपनी तरफ से नई क्रम संख्या कतई न लिखें। जैसे सबसे पहले आपने 11 वां प्रश्न हल किया है तो उत्तर से पूर्व प्रश्न 11 ही अंकित करे न कि प्रश्न 1, ऐसा करने से आपको उस प्रश्न में मिले अंकों में से एक अंक काट लिया जाएगा। ● प्रश्न पत्र में प्रदत्त निर्देशों को सावधानीपूर्वक पढ़ें, अगर एक खण्ड के प्रश्न एक साथ करने के निर्देश हैं तो एक खण्ड के प्रश्नों को एक साथ ही हल करें। अन्यथा अन्य खण्डों में किए गए प्रश्नों की जाँच नहीं की जाएगी। ● प्रत्येक प्रश्न का उत्तर देने के बाद एक पंक्ति खाली छोड़ दें। ● निर्धारित समय-सीमा एवं शब्द-सीमा का ध्यान रखें। क्योंकि 20 शब्दों वाले 2 अंक के उत्तर में अधिकतम दो अंक ही मिलेंगे जबकि बड़े और अधिक अंक वाले उत्तर को छोटा लिखने पर न्यून अंक। ● प्रश्न पत्र में दिये गए सभी प्रश्नों के उत्तर दें। प्रश्न का उत्तर जितना आप दे सकते हैं, उतना दें। आन्तरिक विकल्प वाले प्रश्नों को निर्देशानुसार ही हल करें। प्रश्न पत्र हल करने के बाद भी एक बार सावधानीपूर्वक जाँच लें कि कोई प्रश्न करने से छूट तो नहीं गया। ● सभी प्रश्न हल करने के बाद 'समाप्त'/ The End लिख दें। उत्तर पुस्तिका निर्धारित समय से पहले वीक्षक को न सौंपे।

विषय को जानें और समझें

किसी विषय की तैयारी के लिए जरूरी है कि उस विषय की रूपरेखा क्या है? हर विषय का अपना लक्षण व स्वरूप होता है। अतः विषय के स्वरूप को समझे बिना ठीक से तैयारी करना सम्भव नहीं।

● प्रत्येक विषय को समझकर उसकी सभी बातों का संतुलित अध्ययन करें। ● गणित, सांख्यिकी एवं लेखा शास्त्र ऐसे विषय हैं जिनके प्रश्नों के उत्तर लिखने का तरीका इतिहास, समाजशास्त्र,राजनीति विज्ञान आदि विषयों के प्रश्नों के उत्तर लिखने से सर्वथा भिन्न होता है। गणित व विज्ञान का तथ्यपरक होता है। सूत्र का प्रयोग करने पर सूत्र भी उत्तर में लिखना आवश्यक है। इसके बाद ही उसका अनुप्रयोग प्रश्न के अनुसार करना चाहिए। इतिहास, समाज शास्त्र आदि का विवरणात्मक होता है। भाषा विषय में व्याकरण व शब्दों का ध्यान रखना नितान्त जरूरी है। वहीं अर्थशास्त्र में आवश्यकतानुसार चार्ट, ग्राफ, सारणी एवं उदाहरणों की आवश्यकता होती है। वहीं भूगोल में मानचित्र, चित्र आदि जरूरी हैं। ● परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्नों के प्रकार (वस्तुनिष्ठ, लघूत्तरात्मक, निबन्धात्मक रिक्त स्थान आदि) तथा उनकी संख्या के अनुरूप सूक्ष्म तैयारी करें। परीक्षा के स्वरूप के सम्बन्ध में बोर्ड द्वारा हर विषय का **मॉडल पेपर** जारी किया गया है। इसके अलावा प्रश्न पत्र की रूपरेखा में किस अध्याय से किस प्रकार के कितने प्रश्न होंगे तथा प्रत्येक प्रश्न के लिए कितना समय एवं अंक निर्धारित है, का उल्लेख होता है। ● गत वर्षों के प्रश्न-पत्रों को भी हल किया जाना चाहिए ताकि समय सीमा में प्रश्न-पत्र हल करने का कौशल विकसित हो। ● विद्यार्थी कक्षा और घर पर तो बहुत अच्छा करता है, किन्तु परीक्षा कक्ष में उसका आत्मविश्वास कम हो जाता है। वहाँ वह विचलित हो जाता है क्योंकि उसको उत्तर लिखने का पूरा अभ्यास नहीं है। अतः अधिक से अधिक 'सैम्पल पेपर्स' को परीक्षा से पहले हल कर अपने शिक्षक से जाँच भी करवाना चाहिए। ताकि प्रश्न-पत्र को हल करने में रही कमियों की पहचान हो सके और उन्हें समय रहते दूर किया जा सके। ऐसा करने से परीक्षा में अच्छे अंकप्राप्ति की सम्भावनाएँ कई गुना बढ़ जाती हैं। ● अध्ययन करते समय जो भी महत्त्वपूर्ण जानकारी है, उसे नोट बुक में लिखते जाना चाहिए। इस प्रकार नोट्स तैयार होंगे जो परीक्षा से ठीक पहले आपके लिए उपयोगी होंगे। जितना संभव हो सके कम शब्दों का और संक्षिप्त उदाहरणों का प्रयोग कीजिए। नोट्स तैयार करते समय शब्द-विन्यासों को संक्षिप्त रखें। पुस्तकों/पाठ के लेखकों के नाम भी लिखना उचित रहेगा।

नोट्स बनाते समय विभिन्न रंगों के हाईलाइटर का उपयोग करें, उनसे चित्र-चार्ट्स बनाएँ, कठिन उत्तर को पहले सरल करें फिर बिंदुवार उसे याद करें। क्योंकि हमारा मस्तिष्क रंगीन वस्तुओं, मनोरंजक चीजों, जीवन से जुड़ी हुई वस्तुओं की ओर अधिक आकर्षित होता है तथा उनको ठीक से याद रख सकता है।

प्रश्नों के उत्तर कैसे लिखें

● शब्द सीमा का ध्यान रखें। ● उत्तर सटीक एवं स्वयं की भाषा में ही दें। ● प्रश्न से संबंधित 'की-वर्ड' को काम में ले ताकि उत्तर को 'वेटेज' मिले तथा वह अधिक पठनीय बने। ● उत्तर में सही एवं आवश्यक जानकारियाँ यथा आवश्यक तालिका, चार्ट, चित्र और तथ्य आदि दें, उसे नामांकित करें किन्तु अव्यवस्थित एवं अनावश्यक विस्तार कतई न दें। ● महत्त्वपूर्ण अंश/शीर्षक आदि को भिन्न स्याही से लिखें। सामग्री बिन्दुओं में व्यवस्थित करें। अति महत्त्वपूर्ण बात को रेखांकित करें। ● जरूरी नहीं कि सभी शब्दों के अर्थ समझ में आ जाएँ। अतः ऐसे शब्द जिनका अर्थ समझ में नहीं आ रहा हो, आगे-पीछे की पंक्तियों के आधार पर उन शब्दों

का अर्थ समझकर हल करें। ● वर्तनी एवं विराम चिह्नों का विशेष ध्यान रखें। सुन्दर लिखावट आकर्षक एवं प्रभावकारी होती है। अतः उत्तर स्पष्ट व सुंदर लिखावट में लिखें, जिससे समझने में कठिनाई नहीं। ● पूछे गए प्रश्नों को समझ कर ही उत्तर देना अर्थात् सही एवं तर्कसंगत उत्तर देना। ● सवाल को विधि अनुसार हल करें, उत्तर सही ढंग से व्यक्त करें। विषय का स्पष्ट ज्ञान प्राप्त कर सही उत्तर दें। ● सम्पूर्ण विषयवस्तु को इकाइयों/ उपइकाइयों में विभाजित कर अध्ययन करना चाहिए। ● विषय का स्पष्ट ज्ञान प्राप्त कर सही उत्तर दें।

बेहतर प्रदर्शन हेतु–

● पढ़ाई हेतु रूपरेखा स्वयं बनाएँ। ● साथी विद्यार्थियों द्वारा बनाई गई रूपरेखा और समय सारणी पर विश्वास न करें। ● केवल परीक्षा के दिनों में कमर तोड़ पढ़ाई करने की न सोचें, नियमित पढ़ाई करें। ● पढ़ाई के समय मोबाइल और इंटरनेट से दूर रहें। ● परीक्षा के विषय में साथी विद्यार्थियों से अधिक बहस न करें। ● अपने आत्मविश्वास को डिगने न दें। नकारात्मक विचारों को मन में आने से रोकें। सदैव बेहतरीन करने का लक्ष्य रखें। स्वयं पर किए गए विश्वास का फल सुखद होता है। ''मुझे याद है, मैं परीक्षा को ठीक तरीके से करूँगा'' ऐसा विश्वास करें और फिर स्वतः अपको धीरे-धीरे सब याद रहने लगेगा।

वरिष्ठ अध्यापक
रा.उ.मा.विद्यालय, श्रीडूंगरगढ़
मो:7742331431

सावधानी-चेतावनी

जाली प्रस्तावों एवं धोखाधड़ी से बचें

वर्तमान में रिज़र्व बैंक के नाम से ऋण/क्रेडिट कार्ड/लॉटरी जीतने के प्रस्ताव मोबाइल संदेश/ दूरभाष पर आते रहते हैं। भोले-भाले ग्राहक अपनी कुछ व्यक्तिगत जानकारी उन्हें बिना पड़ताल के बता देते हैं, परिणामस्वरूप ग्राहक को विभिन्न प्रकार के नुकसान उठाने पड़ते हैं यथा उनके खाते से पैसे निकल जाना, ए.टी.एम. कार्ड लॉक/उसके पिन नम्बर का दुरुपयोग होना आदि। अतः भारतीय रिज़र्व बैंक, जयपुर से उपभोक्ता/ग्राहकों के हितार्थ जारी निर्देश अविकल रूप से यहाँ प्रस्तुत किए जा रहे है। समस्त संस्थाप्रधान शिक्षकों, छात्रों व अभिभावकों के माध्यम से अधिकाधिक प्रचार-प्रसार कर जनजागरण करें, SDMC मीटिंग में भी चर्चा करें एवं सूचना पट्ट पर भी इसका अंकन करावें ताकि गाँव की चौपाल तक बात पहुँच सके और धोखाधड़ी से बच सकें। ऐसी अपेक्षा है। -व.सं.

क्या आपके पास भारतीय रिज़र्व बैंक के नाम से ऋण/ क्रेडिट कार्ड/ लॉटरी जीतने के प्रस्ताव आते हैं? सावधान रहें और याद रखें :- रिज़र्व बैंक भारत के केंद्रीय बैंक के रूप में बचत बैंक, चालू बैंक खाता, क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड, ऑनलाइन बैंकिंग सेवाओं या विदेशी मुद्रा में निधियाँ प्राप्त कर और धारण कर या बैंकिंग सेवाओं के किसी अन्य रूप में किसी व्यक्ति के साथ कोई कारोबार नहीं करता है।

रिज़र्व बैंक के नाम पर होने वाली धोखाधड़ियों की सूची इस प्रकार हैं:

(i) भारतीय रिज़र्व बैंक के अधिकारी के रूप में ई-मेल या फोन के माध्यम से बड़ी राशि के प्रस्ताव/लॉटरी जीतने की जानकारी- यह फर्जी प्रस्ताव अन्य सार्वजनिक संस्थाओं जैसे अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ), आयकर प्राधिकारियों, सीमाशुल्क प्राधिकारियों या गवर्नर जैसे व्यक्तियों के नाम पर भी किए जाते हैं और धोखेबाज व्यक्तियों के खाते में एक बार पैसा जमा होने के बाद इस पैसे को वसूल करने के लिए आमजनता के पास बहुत कम संभावना रहती है।

(ii) ऑनलाइन लेनदेन के लिए रिज़र्व बैंक की फर्जी वेबसाइट।

(iii) ई-मेल के माध्यम से रिज़र्व बैंक में रोजगार का प्रस्ताव।

(iv) भारतीय रिज़र्व बैंक के नाम पर धोखेबाज व्यक्तियों द्वारा क्रेडिट कार्ड जारी करना - इस में भोली-भाली जनता को एक क्रेडिट कार्ड भेजा जाता है जिससे एक निश्चित सीमा तक, यद्यपि एक छोटी राशि बैंक खाते से निकाली जा सकती है। इस प्रकार पीड़ित व्यक्ति का विश्वास जीतने के बाद धोखेबाज व्यक्ति उसे उसी बैंक खाते में बड़ी राशि जमा करने के लिए कहते हैं। एकबार पैसा जमा कराने के बाद कार्ड काम करना बंद कर देता है और ऐसा अंतिम बार होता है जब कार्ड धारक (पीड़ित) को धोखेबाज व्यक्ति से फोन आता है। रिज़र्व बैंक आम जनता को सावधान करती है कि ऐसे प्रस्तावों में फंसने के कारण व्यक्ति अपनी महत्त्वपूर्ण व्यक्तिगत सूचना के साथ समझौता करता है जिसका उसे सीधे वित्तीय और अन्य प्रकार की हानि पहुँचाने के लिए दुरुपयोग किया जा सकता है। उन्हें अपने स्वयं के हित में किसी भी तरीके से ऐसे प्रस्तावों का जवाब देने से बचना चाहिए। इसके साथ ही उन्हें तत्काल पुलिस की साइबर अपराध शाखा में शिकायत दर्ज करानी चाहिए।

साथ ही आम जनता को सावधान किया जाता है कि सस्ते ऋण के प्रस्तावों से बचें क्योंकि ऐसे प्रलोभी प्रस्तावों में फंसना जोखिम भरा हो सकता है।प्रोसेसिंग फी, मार्जिन मनी, अन्य कोई रकम एडवांस में न भरें। जाँच करें क्या लोन दे रही कंपनी/इकाई अधिकृत है?

एक का डबल जैसे ऑफर से भी सचेत रहें। अपना कीमती धन जमा करने से पहले दो बार जाँच करें-क्या ऐसे ऑफर देने वाली संस्था अधिकृत है? क्या ब्याज़ दर अन्य कंपनियों या बैंक से बहुत ज्यादा है, क्योंकि ज्यादा ब्याज मतलब ज्यादा जोखिम।

अगर आपको पौंजी स्कीम से जुड़ने का ऑफर मिला है तो सावधान हो जाइए। ऐसे लालच में न फँसें क्योंकि ऐसी योजनाओ से कोई कारोबार नहीं होता सिर्फ नए सदस्य के पैसे से पुराने सदस्यों को कमीशन दिया जाता है।

अपने कीमती धन की रक्षा करें।

- भारतीय रिज़र्व बैंक, जयपुर

परीक्षा परिणाम उन्नयन

मिशन मेरिट

❒ चन्द्रशेखर हर्ष

टारगेट 100 प्रतिशत - मिशन मेरिट अभियान

सामान्यत: निजी विद्यालयों की तुलना में राजकीय विद्यालयों का परीक्षा परिणाम न्यून रहता हैं। जहाँ तक राज्यस्तरीय मेरिट का प्रश्न है, इनमें राजकीय विद्यालयों से बमुश्किल एकाध विद्यार्थी का नाम दिखाई देता है। इससे समाज में राजकीय विद्यालयों के प्रति पहले जैसा सम्मान एवं विश्वास का भाव नहीं रहा है। इस स्थिति से उबरकर वापिस दशकों पुराने सम्मान एवं विश्वास का वातावरण बनाने के लिए राजकीय विद्यालयों में विशेष प्रयास किए जाने आवश्यक है।

टारगेट 100% एवं मिशन मेरिट

बीकानेर मण्डल (बीकानेर/ हनुमानगढ/ श्रीगंगानगर) में सत्र 2016-17 के प्रारंभ से ही इस दिशा में टारगेट 100 प्रतिशत एवं मिशन मेरिट अभियान संचालित कर कार्य करना प्रारंभ कर दिया था। वस्तुत: इसके पीछे गत सत्र में चलाए गए 'शिक्षण यज्ञ' अभियान की सफलता एवं उससे निर्मित वातावरण प्रमुख कारण था जिससे प्रेरित होकर राजकीय विद्यालयों ने कड़ी मेहनत की और परीक्षा परिणामों में सुधार दर्ज करवाया।

टारगेट 100%

टारगेट 100: संख्यात्मक (Quantitative) का परिचायक है जिसका आशय है कि शिक्षक विद्यालय में अपने छात्र-छात्राओं के साथ इतनी मेहनत एवं मार्गदर्शन करेंगे कि कम से कम बुद्धिलब्धि वाला विद्यार्थी भी उत्तीर्ण हो जाएगा अर्थात् सभी उत्तीर्ण होंगे। ऐसा होने पर टारगेट 100 प्रतिशत को सफल माना जाएगा।

मिशन मेरिट

पास होना सुनिश्चित होने के पश्चात् व्यक्ति का अगला उद्देश्य अधिकाधिक अंक (More and More Marks) एवं उत्तम श्रेणी हासिल करने का रहता है। ऐसा इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि वर्तमान युग प्रतिस्पर्धा का युग है। इसमें उत्तम रोजगार के लिए श्रेष्ठ उपलब्धि का होना आवश्यक रहता है। अत: 100 प्रतिशत के पश्चात् हमारा प्रयास यह है कि हमारे विद्यार्थी उत्तम श्रेणी एवं उच्च अंक प्राप्त हों। मेरिट का आशय परीक्षा परिणाम में संख्यात्मक के साथ गुणात्मक सुधार है। इस प्रकार तृतीय श्रेणी में सम्भावित छात्र द्वितीय श्रेणी, द्वितीय श्रेणी वाले प्रथम श्रेणी तथा सम्भावित प्राप्तांक प्रतिशत में वृद्धि का नाम ही मेरिट की दिशा में कदम (Steps towards merit) बढ़ाना है। इसका अन्तिम उद्देश्य बोर्ड की राज्यस्तरीय मेरिट सूची में स्थान दर्ज करवाना है। राज्यस्तरीय मेरिट सूची में स्थान प्राप्त करने के लिए चुनींदा छात्रों के ग्रुप बनाकर 10 जनवरी 2017 से (ग्रामोत्थान विद्यापीठ, संगरिया हनुमानगढ़ में) आवासीय शिक्षण शिविर संचालित है।

लक्ष्य-प्राप्ति हेतु प्रयास

● वर्तमान सत्र 2016-17 में 20 जून 2016 को विद्यालय खुलने से पूर्व मई माह में ही कक्षागत शिक्षण प्रभावी बनाने तथा राजकीय विद्यालयों का वातावरण शिक्षाप्रद बनाने के लिए करणीय प्रयासों के बारे में स्पष्ट दिशा निर्देश जारी किए गए। ● सत्र के प्रारंभ माह जुलाई में होने वाली संस्था प्रधान वाक्पीठों में इन प्रयासों के बारे में विशेष सत्र लेकर जानकारी दी गई। बीकानेर मण्डल में से बीकानेर एवं श्रीगंगानगर में स्वयं उप निदेशक ने उपस्थित होकर प्रधानाचार्यो का आमुखीकरण किया। ● शिक्षण की योजना (Teaching Plan) बनाने के लिए शिक्षकों को टीचर डायरी संधारित करनी होती है। समुचित निरीक्षण एवं प्रबोधन के अभाव में इस तरफ शिक्षक उदासीन रहते हैं मगर वर्तमान सत्र में बीकानेर मण्डल में यह कार्य कड़े प्रबोधन के कारण उच्च गुणवत्ता के साथ किया गया। टीचर डायरी नहीं भरने अथवा लापरवाही करने वालों के विरुद्ध कार्यवाही की गई, वहीं तीनों जिलों में श्रेष्ठ डायरी भरने वाले तीन-तीन शिक्षकों को शिक्षक दिवस, 5 सितम्बर 2016 समारोह में पुरस्कार/ प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। अब तो इस कार्य के लिए शिक्षकों में होड़ मच गई है। ● विभाग द्वारा जारी केलेण्डर के अनुसार सभी कार्य सुनिश्चित करने के लिए माह वार कार्य दिवसों एवं शिक्षण दिवसों का हिसाब निकालकर एक मार्गदर्शन पत्र जारी किया जिसमें विभिन्न पड़ाव तय कर तदनुसार शिक्षण कार्य करवाने के लिए गुरुजनों का मार्गदर्शन किया गया। ● विद्यालयों में प्रभावी शिक्षण एवं सकारात्मक वातावरण बनाने के लिए संस्थाप्रधानों की बैठकों में सहभागिता, सघन निरीक्षण, टेलीफोनिक सम्बलन, पत्राचार व्हाट्सअप पर संदेश आदि प्रयास प्रमुख हैं। उप निदेशक स्तर से पिछले महीनों में 100 से अधिक विद्यालयों का निरीक्षण कर बच्चों एवं शिक्षकों से संवाद कर सद्भावना एवं विश्वास का वातावरण निर्मित किया गया। ● इस बार 08 जनवरी 2017 तक चल रहे शीतकालीन अवकाश के दौरान तीनों जिलों में 50 से अधिक विद्यालयों में विशेष उपचारात्मक कक्षाएँ चली है। दीपावली अवकाश के दौरान विशेष सफाई एवं स्वच्छता अभियान चला कर प्रथम बार राजकीय विद्यालयों में दीपावली के दिन दीपमालिका करके उन्हें रोशन किया गया। ● बच्चों के गृहकार्य पर विशेष ध्यान शुरू से ही दिया जा रहा है। गृहकार्य का सतत् मूल्यांकन कर विद्यालय निरीक्षण के समय इसे देखा गया तथा निरीक्षण रिपोर्ट निरीक्षण के समय हाथों हाथ दी गई। शिक्षकों एवं संस्था प्रधानों के अच्छे कार्यों की लिखित/ मौखिक सराहना और व्हाट्सएप ग्रुपों में अभिव्यक्त करने से वे प्रेरित हुए और अच्छे कार्य का आधार बने। ● पी.टी.एम. अर्थात् Parents Teacher Meeting हर माह अमावस्या (क्योंकि हमारे अभिभावकों में ज्यादातर मजदूरी करने वाले हैं और अमावस्या को वे छुट्टी रखते हैं) के दिन रखी जाती है। इस वर्ष 30.09.2016 तथा 16.01.2017 को विशेष पी0टी0एम0 रखी गई। इस अवसर पर बच्चों की प्रोग्रेस से अभिभावकों को परिचित करवाकर उनकी सक्रिय सहभागिता भी इस काम में उल्लेखनीय है।

कार्य-योजना

बोर्ड परीक्षा-परिणामों में संख्यात्मक (टारगेट 100%) एवं गुणात्मक (मिशन मेरिट)

सुधार हेतु विद्यार्थियों के अधिगम स्तर को दृष्टिगत रखकर कक्षा 10 के सभी विषयों के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम का विभाजन किया गया है। कक्षा स्तर के अनुसार विद्यार्थियों को क्रमशः 36 प्रतिशत से कम, 50 प्रतिशत से अधिक, 60 प्रतिशत से अधिक, 75 प्रतिशत से अधिक तथा 90 प्रतिशत से अधिक संभावित प्राप्तांक के आधार पर पाँच श्रेणियों में विभक्त किया गया। इन स्तरों के विद्यार्थियों के शिक्षण स्तर की जाँच तथा शिक्षण नियोजन के लिए पाठ्यक्रम को चार बुकलेट्स में सुव्यवस्थित तरीके से बाँटा गया है। बुकलेट प्रथम उन विद्यार्थियों के लिए है जो न्यूनतम उत्तीर्णांक प्राप्त करने की स्थिति में नहीं है। इस बुकलेट् में उल्लेखित सामग्री शीतकालीन अवकाश से पूर्व विद्यार्थियों को गृहकार्य के रूप में दिया गया। इस पुस्तिका में सम्मिलित सामग्री के आधार पर तैयारी कर विद्यार्थी विषय में उत्तीर्णांक अर्जित कर सकता है। इस प्रकार टारगेट 100 प्रतिशत की पूर्ति सम्भव है। बुकलेट द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ क्रमशः मध्यम, उच्च एवं सर्वोच्च स्तर के विद्यार्थियों के लिए है। विद्यार्थियों द्वारा सीखे गए ज्ञान की जाँच के लिए प्रत्येक बुकलेट् में सम्मिलित सामग्री के आधार पर सामयिक जाँच का प्रावधान किया गया हैं। प्रत्येक बुकलेट की सामग्री के आधार पर प्रत्येक विषय के दो टेस्ट एवं एक यूनिक टेस्ट तथा 25 फरवरी 2017 से 04 मार्च 2017 तक प्री बोर्ड परीक्षा का आयोजन प्रस्तावित है। इस प्रकार सुसंगत तरीके से विषय-वस्तु का शिक्षण, अभ्यास, जाँच आदि के द्वारा 'मिशन मेरिट' के लक्ष्य को हासिल करने की ओर अग्रसर है। कक्षा 10 के लिए उपर्युक्तानुसार वर्णित सामग्री सभी छः विषयों के लिए इन विषयों के परिश्रमी एवं योग्य शिक्षकों की देखरेख में तैयार करवाई गई जिसका प्रभारी अधिकारी मण्डल के प्रतिभाशाली एवं शिक्षा को समर्पित प्रधानाचार्य श्री प्रवीण भाटिया, राउमावि. रंगमहल, श्रीगंगानगर को बनाया गया। शीतकालीन अवकाश के उपरांत दिनांक 11 दिसंबर 2016 से सतत् टेस्ट शृंखला चल रही है।

सहायक निदेशक
कार्यालय उप निदेशक, माध्यमिक शिक्षा,
बीकानेर मण्डल, बीकानेर
मो: 9413726770

शैक्षिक चिन्तन

स्वामी दयानन्द एवं उनका शैक्षिक दर्शन

❒ डॉ. शिवराज भारतीय

आधुनिक भारत में ऐसे अनेक दार्शनिक, विचारक, समाज सुधारक एवं शिक्षा शास्त्री हुए हैं, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन भारतीय जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं राष्ट्रीयता की पुनर्स्थापना के लिए समर्पित कर दिया। इसी शृंखला में महर्षि दयानन्द सरस्वती का नाम श्रद्धा से लिया जाता है। आपने धार्मिक कर्मकाण्डों व रूढ़िवादिता का प्रखर विरोध करते हुए मूल भारतीय संस्कृति व वैदिक धर्म के पुनरुत्थान के लिए अपना सर्वस्व होम कर दिया।

स्वामी दयानन्द का जन्म गुजरात के टंकारा ग्राम में सन् 1824 ई. में एक धार्मिक परिवार में हुआ। इनके बचपन का नाम मूलशंकर था। कुल की परम्परा और विद्वान पिता के आग्रह से इनकी शिक्षा-दीक्षा संस्कृत में हुई। इन्होंने बाल्यकाल में ही नीति शास्त्रों,यजुर्वेद, व्याकरण, काव्य व साहित्य का अध्ययन कर लिया व चौदह वर्ष की अवस्था में पूरी यजुर्वेद संहिता कंठस्थ कर ली। अपनी तार्किक और विचारशील प्रवृत्ति के कारण वे किसी भी धार्मिक मान्यता या विश्वास को यथारूप में स्वीकार नहीं करते थे।

बाल्यकाल में शिवरात्रि के अवसर पर शिव मन्दिर में पूजा अर्चना करते समय शिवलिंग पर चूहे को उछलकूद करते देखकर इनका मूर्तिपूजा से विश्वास उठ गया। अपनी अतीव प्रिय बहिन व चाचा की मृत्यु से उनके मन में सांसारिक विरक्ति का भाव जगा। ईश्वर के वास्तविक स्वरूप को जानने और जीवन-मृत्यु के जटिल प्रश्न दयानन्द के मस्तिष्क को निरन्तर झकझोरने लगे। फलस्वरूप बीस वर्ष की अवस्था में ही इन्होंने (विवाह से कुछ दिन पूर्व) गृह त्याग दिया और सच्चे गुरु की खोज में संन्यासी के रूप में देशभर में भ्रमण करने लगे। अन्ततः इन्होंने मथुरा में प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द का द्वार खटखटाया। नेत्रहीन संन्यासी विरजानन्द ने प्रश्न किया-''कौन हो?'' जिज्ञासु मूलशंकर का उत्तर था-''यही तो जानने के लिए आपके समक्ष उपस्थित हुआ हूँ।'' गुरु और शिष्य दोनों की ही साध जैसे पूरी हो गई हो! वेदों और व्याकरण के प्रकाण्ड विद्वान गुरु विरजानंद के शिष्यत्व में दयानंद के अर्जित ज्ञान का परिमार्जन हुआ और वेदों की व्याख्या के प्रति उनका दृष्टिकोण सुनिश्चित हुआ। अपनी शिक्षा पूर्ण होने पर दयानंद ने अपने गुरु को उनकी प्रिय वस्तु लौंग को थाल में भरकर गुरु दक्षिणा के रूप में समर्पित करना चाहा। गुरु विरजानंद ने कहा, ''मुझे लौंग नहीं तुम्हारा जीवन चाहिए। देश में वेदों का अध्ययन अध्यापन समापन की ओर है तथा भारतवर्ष में अज्ञान व अशिक्षा का अंधकार विद्यमान है। तुम वेदों के ज्ञान को पुनः प्रतिष्ठित कर अज्ञान व अशिक्षा के अंधकार का नाश करो।'' अपने गुरु को गुरु दक्षिणा के रूप में दिए वचन के अनुसार इन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन वेदों व शिक्षा के प्रचार-प्रसार करने तथा भारतीय समाज में फैली रूढ़ियों, पाखण्डों और अंधविश्वासों के उन्मूलन में समर्पित कर दिया।

स्वामी दयानन्द का शैक्षिक दर्शन – स्वामी दयानन्द ने शिक्षा को मानवीय गुणों से परिपूर्ण करने हेतु नैतिक शिक्षा, सदाचार, ब्रह्मचर्य, स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा तथा वेदाध्ययन को शिक्षा में विशिष्ट स्थान दिया। इन्होंने प्राचीन गुरुकुल आश्रम व्यवस्था की भाँति शिक्षण संस्थाओं को नगरीय कोलाहल से दूर, प्रकृति के सुरम्य वातावरण में स्थापित किया। 'सत्यार्थ प्रकाश' के तृतीय समुल्लास में इन्होंने स्पष्ट लिखा है-''विद्या पढ़ने का स्थान एकान्त देश में होना चाहिए। पाठशालाओं से एक योजन चार कोस दूर ग्राम या नगर रहे। उनके (विद्यार्थियों) माता-पिता अपने सन्तानों से या सन्तान अपने माता-पिताओं से न मिल सकें और न किसी प्रकार का पत्र व्यवहार एक दूसरे से कर सकें, जिससे संसारी चिन्ता से रहित होकर केवल विद्या बढ़ाने की चिन्ता करे।''

मनुष्य के आचार-विचार और कर्म की शुद्धता हेतु शिक्षा को महत्त्वपूर्ण मानते हुए इसे सामाजिक सुधार व मनुष्य के चरित्र निर्माण का आवश्यक साधन बताया। इन्होंने बिना किसी जाति, लिंग, वर्ण, वर्ग आदि के भेद के सबको शिक्षा सुलभ कराने की व्यवस्था भी की।

शिक्षा का उद्देश्य : स्वामी दयानन्द के अनुसार व्यक्ति का सर्वांगीण विकास ही शिक्षा का उद्देश्य है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्तित्व के आन्तरिक व बाह्य पक्ष का विकास होना चाहिए। मनुष्य को स्वस्थ एवं बलशाली होना चाहिए। शिक्षा के द्वारा उसमें मानवीय गुणों का विकास होना चाहिए। शिक्षा के माध्यम से मनुष्य सत्यान्वेषी, ज्ञानी, सद्भावी व सद्गुणों से युक्त हो। इनका दृढ़ मत था कि मानव कल्याण के सभी आयाम वेदों में समाविष्ट हैं। मनुष्य के भौतिक, लौकिक और आध्यात्मिक समस्त प्रकार के ज्ञान की उन्नति हेतु स्वामीजी ने वैदिक शिक्षा को आवश्यक माना।

बालक के प्रथम शिक्षक माता-पिता: स्वामी दयानन्द ने 'सत्यार्थ प्रकाश' के द्वितीय समुल्लास में 'शतपथ ब्राह्मण' के वचन 'मातृमान पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद' की व्याख्या करते हुए लिखा है- ''वस्तुतः जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे तभी मनुष्य ज्ञानवान होता है। वह सन्तान बड़ी भाग्यवान! जिसके माता और पिता धार्मिक विद्वान हों। जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुँचता है उतना किसी से नहीं। धन्य है वह माता जो गर्भाधान से लेकर जब तक शिक्षा पूरी हो तब तक सुशीलता का उपदेश करे। माता का कर्त्तव्य है कि बच्चे के आचार-विचार और व्यवहार में परिष्कार लाए। उसको शब्दोच्चारण, नए-नए शब्दों का ज्ञान, सुन्दर, स्वर, अक्षर मात्रा आदि का ज्ञान कराए। बालक को पाँच वर्ष की अवस्था तक माता व आठवें वर्ष तक पिता शिक्षित करे। पिता बच्चे में ज्ञान के प्रति अनुराग, शारीरिक स्वास्थ्य, सत्संगति, सदाचरण एवं इंद्रिय निग्रह की प्रवृत्ति का विकास तथा बालक को अपने कर्त्तव्य के प्रति सावधान करे तत्पश्चात् उसे आचार्य के संरक्षण में भेजे।''

अनिवार्य शिक्षा : स्वामी दयानन्द के अनुसार प्रत्येक बालक-बालिका के लिए बिना किसी भेदभाव के राज्य की ओर से शिक्षा का अनिवार्य प्रबन्ध होना चाहिए। समाज के सभी वर्गों के सदस्यों को शिक्षा की समान सुविधा मिले। बालक को सत्यधर्म के सिद्धांतों तथा चरित्र निर्माण की उत्तम शिक्षा दी जाए, जिससे आदर्श राज्य की कल्पना साकार हो सके। उनके शब्दों में ''सब को तुल्य वस्त्र, खान-पान, आसन दिए जाएँ, चाहे वह राजकुमार व राजकुमारी हो, चाहे दरिद्र की सन्तान, सब को तपस्वी होना चाहिए।''

पृथक् एवं अनिवार्य स्त्री शिक्षा: स्वामी दयानन्द स्त्री शिक्षा के प्रबल समर्थक थे, किन्तु सहशिक्षा के विरोधी थे। उनका स्त्रियों के प्रति उदार दृष्टिकोण था। उन्होंने स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार और स्वतंत्रता देने की बात कही। वे बालक-बालिकाओं को अलग-अलग संस्थाओं में पढ़ाने के पक्षधर थे। 'सत्यार्थ प्रकाश' के तृतीय समुल्लास में आपने स्पष्ट लिखा है-''आठ वर्ष के हों तभी लड़कों को लड़कों की और लड़कियों को लड़कियों की शाला में भेज देवें व कन्याओं की पाठशाला में सब स्त्री और पुरुषों की पाठशाला में पुरुष अध्यापक, अध्यापिका और भृत्य हों'' ऐसा मानते थे। पुरुषों का कार्यक्षेत्र स्त्रियों से भिन्न है अतः उनकी शिक्षा भी भावी उत्तरदायित्वों को वहन करने की योग्यता विकसित करने वाली होनी चाहिए।

शिक्षा का माध्यम एवं शिक्षण विधियाँ : स्वामी दयानंद की मातृभाषा गुजराती थी। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा संस्कृत में हुई व लेखन हिन्दी भाषा में। बालक की प्रारम्भिक शिक्षा के सन्दर्भ में उनका विचार था कि इसका माध्यम मातृभाषा ही होनी चाहिए। बालक में भाषा सीखने की योग्यता अधिक होती है अतः प्राथमिक स्तर से ही मातृभाषा के साथ संस्कृत व एक विदेशी भाषा का अध्ययन भी कराया जाए। उच्च शिक्षा में आवश्यकतानुसार अन्य भाषाओं का अध्ययन भी किया जा सकता है। वेदों के अध्ययन के लिए संस्कृत का ज्ञान आवश्यक माना है। भाषा सीखने के लिए सर्वोत्तम विधि वार्तालाप को माना है। अध्यापन विधियों में व्याख्यान व स्वाध्याय विधि, किसी विषय की गहराई को समझने के लिए शास्त्रार्थ या तर्क विधि के उपयोग को महत्वपूर्ण माना है। शंका-समाधान के लिए प्रश्नोत्तर किए जाएँ। शास्त्रार्थ विधि में अपने विचारों के मण्डन व दूसरे के विचारों का खण्डन करने के लिए तर्क का सहारा लिया जाता है। इसमें संश्लेषण और विश्लेषण दोनों ही प्रक्रियाएँ समाहित हैं। इन्द्रियों के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करने में निरीक्षण विधि को उपयोगी माना है। आयुर्वेद, धनुर्वेद, शिल्प, व्यायाम, संगीत, शुद्ध आचरण व गुरु सेवा की शिक्षा प्रायोगिक रूप से दी जानी चाहिए।

विद्यार्थी जीवन एवं अनुशासन : स्वामी दयानन्द जी ने विद्यार्थी जीवन को ब्रह्मचर्य आश्रम से जोड़ा है। यह मानव के निर्माण का चरण है। विद्यार्थी जीवन में बालक अध्ययन, मनन व अभ्यास के द्वारा अपने व्यक्तित्व का निर्माण व चारित्रिक गुणों का विकास करता है। विद्यार्थी जीवन में उन्होंने नैतिक अनुशासन को आवश्यक माना है। इन्द्रियों को बुरे आचरण से रोकने व मन की वृत्ति को सब प्रकार के दोषों से हटाकर केवल अध्ययनरत रहने पर बल दिया है।

ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना प्रत्येक विद्यार्थी के लिए अनिवार्य माना है। इस अवस्था में उन्हें माँस-मदिरा, गंध-रस, स्वादिष्ट भोजन तथा सभी प्रकार की विषय वासना से दूर रहना चाहिए। उन्हें अनुशासन में रखने का दायित्व माता-पिता व आचार्य (शिक्षक) पर है। बच्चों के प्रति दया, करुणा, स्नेह व सहानुभूति का भाव रखते हुए उन्हें कठोर अनुशासन में रखना आवश्यक माना है। स्वामीजी ने विद्यार्थी जीवन में योगाभ्यास पर बल दिया है। योग का आशय है मन और इन्द्रियों को कुविचारों और मिथ्या वस्तुओं से हटाकर आनंदपूर्ण एकात्मा के साथ सम्बन्ध स्थापित करना। योग के द्वारा विद्यार्थी की बुद्धि में स्थायित्व आता है। सत्य का अनुसरण करना ही वास्तविक धर्म है। धार्मिक शिक्षा द्वारा व्यक्ति का आचारण शुद्ध होता है तथा उसमें नैतिक मूल्यों का विकास होता है।

गुरु-शिष्य परम्परा : स्वामी दयानन्द भारतीय गुरु-शिष्य परम्परा के पोषक थे। गुरु अपने व्यक्तिगत आदर्श और चारित्रिक गुणों के द्वारा शिष्य का चरित्र निर्माण करे। आठ वर्ष की अवस्था का बालक घर-परिवार व माता-पिता को छोड़कर गुरुकुल में गुरु के सान्निध्य में शिक्षा ग्रहण करे। बालक के भोजन, वस्त्र, आवास की व्यवस्था गुरु ही करता है। गुरु को चाहिए कि वह शिष्य को पुत्रवत् स्नेह दे। शिक्षार्थी को आचरण की शुद्धता का उपदेश दे जैसे-सत्य बोलो, धर्म का आचरण करो, अध्ययन में आलस्य न करो, दुष्ट कर्मों का त्याग करो, माता-पिता-आचार्य-

अतिथि का सत्कार करो आदि।

शिष्य गुरु के सान्निध्य में रहकर सत्य एवं ज्ञान की खोज करे। आश्रम में रहते हुए गुरु-शिष्य का सम्बन्ध आत्मीयता तथा कल्याण की भावना से युक्त व पिता-पुत्रवत् होना चाहिए। शिष्य 'आचार्य देवो भवः' की भावना रखते हुए गुरु सेवा में किसी भी प्रकार की त्रुटि न करे। अपनी गुरु-माता (गुरु-पत्नी) व गुरु-पुत्रों का भी आदर करे। स्वामी जी ने 'सत्यार्थ प्रकाश' के तृतीय समुल्लास में शिक्षार्थी के पाठ्यक्रम का भी विशद विवेचन किया है। उन्होंने वैदिक शिक्षा के साथ ही व्यावहारिक ज्ञान की शिक्षा को महत्त्व देकर भारतीय परंपराओं का आधुनिक वैज्ञानिक युग के साथ समन्वय भी किया है।

स्वामी जी ने भारतीय संस्कृति एवं शिक्षा के प्रचार-प्रसार हेतु आर्य समाज एवं गुरुकुलों की स्थापना की। 1902 में गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार की स्थापना की। बालिकाओं की शिक्षा के लिए 1909 में कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, हाथरस तथा 1923 में कन्या गुरुकुल, देहरादून की स्थापना हुई। स्वामीजी के शैक्षिक विचारों को व्यावहारिक रूप प्रदान करने की दिशा में एटा, करनाल, वृंदावन, हिसार, जालंधर आदि अनेक स्थानों पर गुरुकुलों को पुनर्जीवित किया गया।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने हिन्दी भाषा एवं साहित्य की भी सेवा करते हुए अड़तीस ग्रंथों का सृजन किया। इनमें 'वेद भाष्य', 'संस्कार विधि', 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' व 'सत्यार्थ प्रकाश' वैदिक साहित्य की बहुमूल्य निधि माने जाते हैं। धर्म, समाज, शिक्षा एवं वैदिक साहित्य इन चारों ही क्षेत्रों में स्वामी दयानंद एवं आर्यसमाज का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। पं. हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में-''आर्य समाज ने भारतीय चित्त को झकझोर दिया था, पर प्राचीन आप्त वाक्य को मानने की प्रवृत्ति को उसने और भी अधिक प्रतिष्ठित किया। इसका परिणाम सभी क्षेत्रों में देखा गया। साहित्य के क्षेत्र में भी इस समय तक प्रमाण ग्रन्थों के आधार पर विवेचन करने की प्रथा चल पड़ी थी। इसका सर्वाधिक श्रेय स्वामी दयानंद के दर्शन को ही देना होगा।'' उस युगद्रष्टा मनीषी को शत-शत वंदन्।

प्रधानाचार्य

मालियों का मोहल्ला, नोहर (हनुमानगढ़)

मो: 9414875281

पुण्य-स्मरण

पं. दीनदयाल उपाध्याय का शैक्षिक चिन्तन

❒ गोमाराम जीनगर

एकात्मवाद के मंगलपथ पर,
मानव का कल्याण है।
अखिल विश्व को यह भारत के
चिन्तन का वरदान है।
मनुज मात्र की गरिमा कुंठित हो
न किसी भी तंत्र से।
सामाजिक समरसता खंडित हो
न व्यक्ति स्वातंत्र्य से।
धर्माधारित हो समाज में
अर्थ काम के नीति नियम,
प्रकृति के प्रति नतमस्तक हो,
भोग करे रखकर संयम ।
व्यक्ति समाज सृष्टि परमेश्वर से
संरचित विधान है।
एकात्मवाद के मंगल पथ पर,
मानव का कल्याण है।

एकात्म मानववाद के प्रणेता, भारतीयता के संचारक, राष्ट्रवादी पत्रकारिता के प्रेरक, भारतीय राजनीति में एकात्म भाव के पुरोधा पं. दीनदयाल उपाध्याय का जन्म 25 सितम्बर 1916 को भगवती प्रसाद के घर रामप्यारी की कोख से राजस्थान के धानक्या (जयपुर से 22किमी. दूरी) स्थान पर हुआ। जहाँ इनके नाना स्टेशन मास्टर थे। बचपन में ही इनके माता-पिता का देहावसान हो जाने से इनका बचपन नाना चुन्नीलाल व मामा राधारमण के सानिध्य में बीता। पढ़ाई में हमेशा अव्वल रहने वाले दीनदयाल 1936 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सम्पर्क में आए। देश की विषम परिस्थितियों को देखते हुए 'मेरा राष्ट्र ही मेरा केरियर है' को महत्त्व देते हुए संघ के पूर्णकालिक प्रचारक बन गए । राष्ट्र-विचार को पल्लवित पुष्पित करने हेतु लखनऊ में राष्ट्रधर्म प्रकाशन की नींव डाल राष्ट्रधर्म (मासिक), पाञ्चजन्य (साप्ताहिक) व स्वदेश (दैनिक) का प्रकाशन प्रारंभ किया। भारतीय जनसंघ के गठन के समय योजनानुसार उपाध्याय जी को भारतीय जनसंघ में भेजा गया । डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी इनके कार्य से इतने प्रभावित हुए कि उन्होनें कहा- ''मुझे दो और दीनदयाल मिल जाये-तो मैं शीघ्र ही देश का नक्शा बदल सकता हूँ।'' 15 वर्ष तक जनसंघ के महामंत्री रहने के बाद दिसम्बर 1967 में वे कालीकट सम्मेलन में जनसंघ के अध्यक्ष चुने गए। 11फरवरी 1968 की रात्रि की गाड़ी से दीनदयाल जी लखनऊ से पटना जा रहे थे। दूसरे दिन सुबह मुगल सराय स्टेशन पर कपड़े में लिपटा उनका शव मिला। उनकी अकाल मृत्यु से पूरा देश स्तब्ध रह गया। पंडित दीनदयाल उपाध्याय नहीं रहे तथापि उनके कार्य-विचार व आदर्श भारतवासियों का मार्गदर्शन कर रहे हैं।

पं. दीनदयाल उपाध्याय एक अच्छे लेखक व विचारक थे। 'ऑर्गेनाइजर' में पॉलीटिकल डायरी, 'पाञ्चजन्य' में विचार-वीथि नाम से उनके नियमित कॉलम प्रकाशित होते थे। उनके लिए अध्ययन व पत्रकारिता मिशन थी। उन्होंने 'सम्राट चन्द्रगुप्त', 'जगद्गुरु शंकराचार्य', 'अखण्ड भारत क्यों', 'भारतीय अर्थ नीति विकास की एक दिशा', 'एकात्म मानववाद' समेत कई पुस्तकें लिखीं।

पं. दीनदयाल की चिंता के केन्द्र में समाज का आखिरी व्यक्ति था। अंत्योदय का विचार सर्वप्रथम दीनदयालजी ने ही सबके सम्मुख रखा। 22 से 25 अप्रेल 1965 को मुम्बई में हुए जनसंघ के अधिवेशन में उन्होंने चार भाषणों के रूप में 'एकात्म मानववाद' का प्रतिपादन किया। 'एकात्म मानववाद' भारतीय मौलिक दृष्टि की गरिमा को प्रतिष्ठित करता है। यह संतुलित विकास का प्रेरक है। दीनदयाल जी ने मानव

समाज की पश्चिम की सभी परिकल्पनाओं को नकारते हुए अखंड मंडलाकर रचना की बात कही। वे सांस्कृतिक राष्ट्रवाद तथा भारतीयता के संचारक थे। उनकी अखंड भारत में आस्था थी। उनका एकात्म अर्थचिंतन विकास का समग्र चिंतन है। उनका कृषि विषयक चिंतन सनातन व समसामयिक है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार- ''शिक्षा का सम्बन्ध जितना व्यक्ति से है उससे अधिक समाज से है। हम ऐसे मानव की कल्पना कर सकते हैं जिसे किसी भी प्रकार की शिक्षा न मिली हो और जो अपनी सहज प्रवृत्तियों के सहारे ही जीवनयापन करता हो, किन्तु बिना शिक्षा के समाज संभव नहीं। यदि शिक्षा न हो तो समाज का जन्म ही न हो। अत:शिक्षा के प्रश्न को मूलत: सामाजिक दृष्टिकोण से ही देखना होगा । हमारे शास्त्रों के अनुसार यह ऋषि-ऋण है, जिसे चुकाना प्रत्येक का कर्त्तव्य है।''

उन की मान्यता थी कि ''शिक्षा निशुल्क होनी चाहिए। किसी के पास पैसे नहीं है इसलिए शिक्षा से वंचित नहीं रहना चाहिए। शिक्षा का आर्थिक दायित्व केवल शासन का नहीं होता है। शिक्षा समाज का दायित्व है। इसलिए शिक्षा का आर्थिक दायित्व भी समाज का ही होना चाहिए। बच्चे को शिक्षा देना समाज के हित में है। जन्म से मानव पशुवत् पैदा होता है। शिक्षा और संस्कार से वह समाज का अभिन्न घटक बनता है। जो काम समाज के अपने हित में हो, उसके लिए शुल्क लिया जाए, यह तो उल्टी बात है। कल्पना करें कि कल शिक्षा शुल्क का बहिष्कार करके अथवा उसे देने में असमर्थ होने के कारण बच्चे पढ़ना बंद कर दें तो क्या समाज इस स्थिति को सहन करेगा? पेड़ लगाने और सींचने के लिए हम पेड़ से पैसा नहीं लेते। हम तो अपनी ओर से पूँजी लगाते हैं और जानते हैं कि पेड़ पर फल ही मिलेंगे। शिक्षा भी इसी प्रकार का विनियोजन है। व्यक्ति शिक्षित होने पर समाज के लिए काम करेगा ही किंतु जो व्यवस्था बचपन से ही हमें व्यक्तिवादी बनाती हों, उससे समाज की अवहेलना करने वाले निकलें तो आश्चर्य क्यों?'' भारत में 1947 से पूर्व सभी देशी राज्यों में कहीं भी शिक्षा के लिए शुल्क नहीं लिया जाता था। उच्चतम श्रेणी तक शिक्षा नि:शुल्क थी। गुरुकुल में भोजन व रहने की व्यवस्था तक थी। केवल भिक्षा माँगने के लिए ब्रह्मचारी समाज में जाते थे। कोई भी ब्रह्मचारी को खाली नहीं लौटाता था अर्थात् समाज द्वारा शिक्षा की व्यवस्था की जाती थी। पंडित जी का स्पष्ट मानना था कि शिक्षा का व्यवस्थापन शासन का न दायित्व है न अधिकार। केन्द्रीयकृत व्यवस्था शिक्षा में नहीं चल सकती। वह पूर्णरूपेण विकेन्द्रित होनी चाहिए। शिक्षा का व्यवस्थात्मक अधिकार वास्तव में तो शिक्षक का ही होना चाहिए। शेष सभी उसके सहायक हो सकते हैं। शिक्षक इतना सामर्थ्यवान हो कि वह अपनी जिम्मेदारी से शिक्षा व्यवस्था चलाए।

उन्होंने एकात्म मानववाद के अन्तर्गत प्रतिपादित किया कि ''विश्व के प्रत्येक राष्ट्र का अपना एक स्वभाव होता है। राष्ट्र की सारी व्यवस्थाएँ, मान्यताएँ, जीवनशैली, परम्पराएँ, सुख-दुख की कल्पनाएँ उस स्वभाव के अनुसार ही होती हैं। यह स्वभाव राष्ट्र की आत्मा है और उसे 'चिति' कहा गया है। चिति के प्रकाश में राष्ट्र जीवन की मान्यताओं, जीवन शैली, व्यवस्थाओं आदि को व्यावहारिक स्वरूप देने के लिए, उसके रक्षण, पोषण, संवर्धन और निर्वहन के लिए प्रजा की जो कार्यशक्ति प्रयुक्त होती है उसे 'विराट' कहा गया है। वह राष्ट्र का प्राण है। जीवन एक है और अखण्ड है। मनुष्य भगवान की सर्वश्रेष्ठ कृति है। मनुष्य का व्यक्तित्व एकात्म है। वह शरीर, मन, बुद्धि व आत्मा का समुच्चय है। सृष्टि के सभी जड़ चेतन पदार्थों से उसका सम्बन्ध एकात्म है। मनुष्य एवं सृष्टि का स्वभावगत व्यवहार ही धर्म है। धर्म ही सभी व्यवस्थाओं व व्यवहारों का मूल तत्व है। सर्वप्रकार का जीवन धर्माधिष्ठित होना ही सभी समस्याओं का समाधान है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने शिक्षा का प्रथम उद्देश्य व्यक्ति का पंचकोशात्मक (अन्नमय कोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश, विज्ञानमय कोश व आनंदमय कोश) विकास बताया। पंडित जी ने विकास की सांस्कृतिक, वृत्तीय तथा परमेष्टिगत संकल्पना दी। उनके अनुसार व्यक्ति जन्म से ही विभिन्न प्रकार की संभावनाओं को लेकर आता है। ये संभावनाएँ उसे जन्म जन्मांतरों के संस्कार से प्राप्त होती हैं। इन संभावनाओं की पूर्ण अभिव्यक्ति ही विकास है। व्यक्ति का ऐसा विकास ही शिक्षा का लक्ष्य होना चाहिए।

दीनदयाल जी के अनुसार अन्नमय कोश में शारीरिक विकास के आयामों, प्राणमय कोश में जीवनी शक्ति के आयामों, मनोमय कोश में मन की शिक्षा व विकास, विज्ञानमय कोश में बुद्धि-विकास तथा आनंदमय कोश में चित्त-शुद्धि पर बल दिया जाना चाहिए। शिक्षा द्वारा मनुष्य के विकास का यही स्वरूप बनाना चाहिए। दीनदयालजी कहते हैं कि ''यह सृष्टि परमात्मा का व्यक्त विश्वरूप हैं इसमें मनुष्य अकेला नहीं रह सकता। उसका सम्बन्ध जड़ चेतन सभी से होता है। वास्तव में सृष्टि का सारा व्यवहार आपसी आदान-प्रदान से ही चलता है, चूँकि परमात्मा ने मनुष्य को अपने प्रतिरूप में बनाया है अत: उसका दायित्व भी अधिक है। उसे नित्य स्मरण रखना है कि वह परमात्मा का प्रतिरूप है, वह सृष्टि का एक अंग है इस कारण मनुष्य सृष्टि के प्रति स्वामित्व का नहीं अपितु स्नेह का भाव रखे, कृतज्ञता का भाव रखे। वह समष्टि मानव समुदाय से अभिन्न है अत: मानव मात्र के साथ आत्मीयता रखे, सर्वेभवन्तु सुखिनः .... का भाव रखे।'' पं. दीनदयाल उपाध्याय के इस विचार को मूर्तरूप देने के लिए व्यष्टि, समष्टि, सृष्टि, परमेष्टि के संदर्भ में एकात्म मानववाद की बातें सामाजिक विज्ञान के रूप में पढ़ाई जानी चाहिए। अध्यात्म शास्त्र के अधिष्ठान पर भौतिक-सांस्कृतिक विषयों के पाठ्यक्रमों की रचना करनी होगी-जैसे परिवार भावना को बढ़ावा देने वाला समाजशास्त्र, नीतियुक्त अर्थशास्त्र, शिशुशिक्षा, परिवार शिक्षा आदि। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षा जिस प्रकार से आज यांत्रिक, आर्थिक, नियंत्रित व व्यावसायिक बनी है उसमें पं. दीनदयाल उपाध्याय के शैक्षिक चिंतन की प्रासंगिकता ज्यादा महसूस हो रही है। अत: सभी विषयों को एकात्म दृष्टि से चिंतन कर सभी स्तरों के लिए पाठ्यक्रम उसके अनुरूप निर्माण कर, एकात्म मानव केन्द्रित शिक्षा की रचना करना एक 'भगीरथ-प्रयत्न' जरूर है परन्तु हमारे लिए यह करणीय है। तभी श्रेष्ठ, सज्जन, शीलयुक्त व कर्मठ व्यक्तियों के आधार पर 21 वीं सदी भारत की सदी बन पाएगी।

सहायक निदेशक 'शिविरा'
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
मो: 9413658894

शिविरा पत्रिका (मासिक) : फरवरी, 2017 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। © वरिष्ठ सम्पादक : प्रकाश चन्द जाटोलिया, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

चित्र वीथिका-फरवरी, 2017

दिनांक 26 दिसम्बर, 2016 से 4 जनवरी, 2017 तक आयोजित अन्तर्राज्यीय शैक्षिक भ्रमण के दौरान भारतमाता मंदिर, हरिद्वार के आगे शिक्षा विभाग राजस्थान के छात्र–छात्रा दल एवं प्रभारीगण।

राष्ट्रीय माध्यमिकशिक्षा अभियान, अजमेर के भवन लोकार्पण अवसर पर माननीय शिक्षामंत्री राजस्थान सरकार प्रो. वासुदेव देवनानी, अन्य अधिकारी व कार्मिक।

रा.उ.मा.वि. बालोतरा, बाड़मेरमें आयोजित राज्य स्तरीय मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद प्रतियोगिता (कैरम) में विजेता (निदेशालय टीम) सर्वश्री मधुसूदन किराडू, महेन्द्रसिंह रावत, हीरालाल किराडू व विष्णु पुरोहित।

रा.उ.मा.वि. आडसर, बीकानेर में 13.12.2016 को पूर्व प्रधानाध्यापक श्री मोहनसिंह सिद्धू से प्राप्त स्वेटरों का विद्यार्थियों को शाला परिवार द्वारा वितरण किया गया।

डिस्ट्रीक्ट माइन्सएसोसिएशन द्वारा शाला भवन विस्तार हेतु 5 लाख रुपये से डेढ बीघा जमीन खरीदकर पट्टा रा.आ.उ.मा.वि. कोटड़ी,बीकानेर में संस्थाप्रधान श्री विमल पंवार को सौंपते हुए।

शिक्षा विभागीय कर्मचारी संघ, बाड़मेरद्वारा दिनांक 17 जन. 2017 को निदेशालय प्रांगण में निदेशक मा.शि.राज. श्री बी.एल. स्वर्णकार का अभिनंदन एवं संगठन की सदस्यता अभियान के पोस्टर का विमोचन।

पूर्व विद्यार्थी संघ राजकीय आदर्श उ.मा.वि. शिव (नागौर) के हीरक जयंती समारोह (18 दिस.17) में भामाशाहों को सम्मानित करते हुए वरिष्ठ सम्पादक 'शिविरा' श्री प्रकाश चन्द्रजाटोलिया।

रा.उ.मा.वि. ताऊसर (नागौर) भूगोल के प्रायोगिक भ्रमण के दौरान कक्षा 12 (भूगोल) के विद्यार्थी व शिक्षकवृंद बीकानेर स्थित जूनागढ़का अवलोकन करते हुए।

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/417/2017-19 शिविरा पत्रिका (मासिक) ● फरवरी, 2017 समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66
प्रकाशन तिथि : 9फरवरी, 2017 पृष्ठ 52 ● प्रेषण : माह की 13 तारीख

1. गणतन्त्र दिवस समारोह में ध्वजारोहण करते हुए निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान श्री बी.एल. स्वर्णकार।
2. ध्वजारोहण पश्चात ध्वजाभिवादनकरते हुए निदेशक मा.शि. राजस्थान श्री बी.एल. स्वर्णकार एवं कार्यालय कार्मिक।
3. उद्बोधन देते हुए निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान श्री बी.एल. स्वर्णकार।
4. उत्कृष्ट सेवाओं के लिए श्री पंकज भटनागर (निजी सहायक), मा. शि. राज.बीकानेर को सम्मानित करते हुए निदेशक मा.शि.राज. बीकानेर श्री बी.एल. स्वर्णकार, अति. निदेशक (प्रशासन) प्रारम्भिक शिक्षा श्री हरिप्रसाद पिपरालिया एवं अति. निदेशक (प्रशासन) माध्यमिकशिक्षा श्री भवानीसिंह शेखावत।
5. निदेशालय (प्रारम्भिक शिक्षा एवं माध्यमिकशिक्षा) में उत्कृष्ट कार्य करने के उपलक्ष्य में सम्मानित कर्मचारीगण एवं उपस्थित अधिकारीगण।

शिक्षा निदेशालय में गणतन्त्र दिवस समारोह की झलकियाँ

पत्रिका अवितरित होने की स्थिति में इस पते पर भेजें : **वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा प्रकाशन, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर–334001**